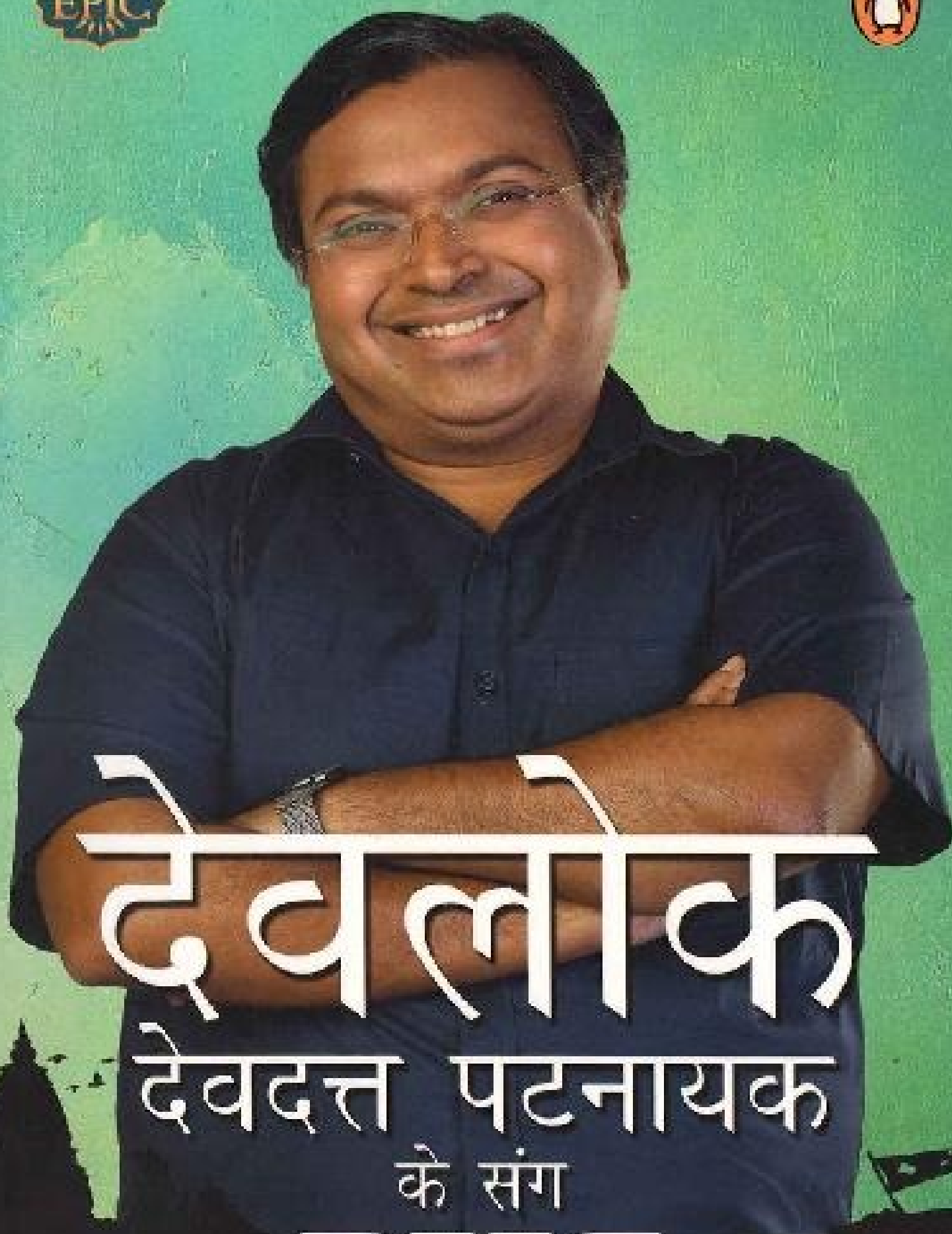
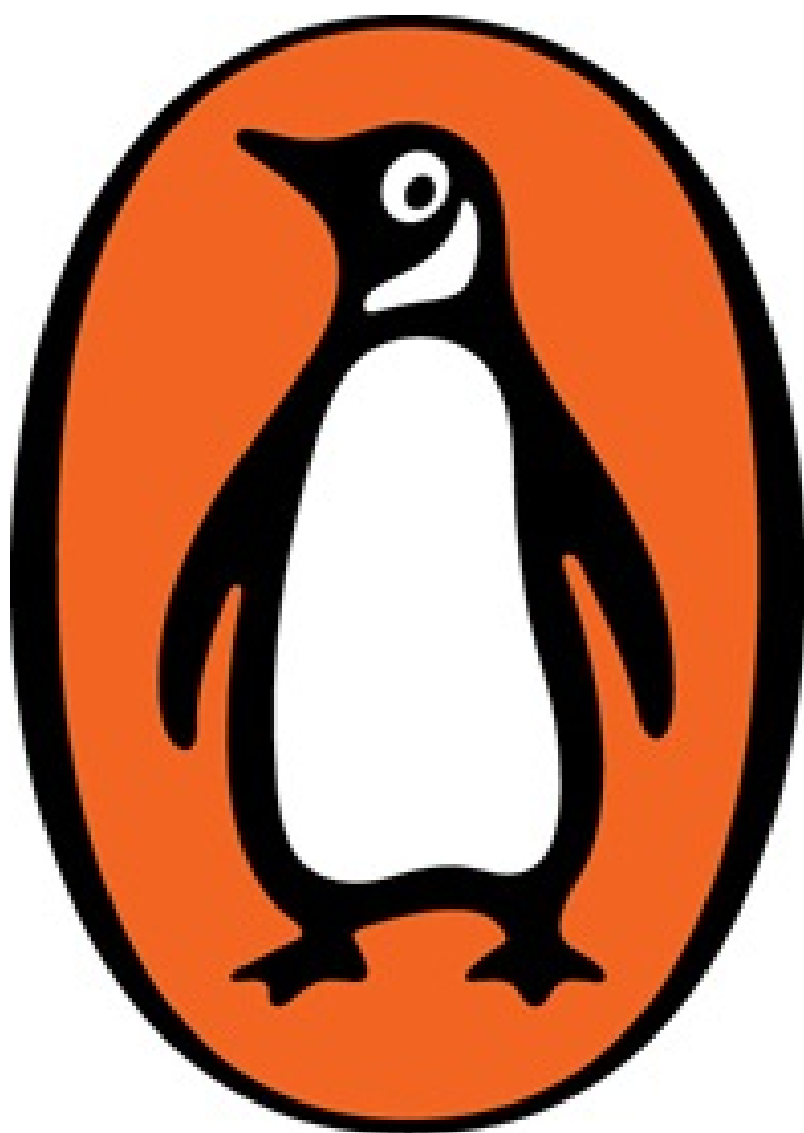




# देवलोक

## देवदत्त पटनायक के संग

EPIC चैनल के बेहद लोकप्रिय टेलीविजन कार्यक्रम  
Devlok with Devdutt Pattanaik के पहले सीज़न पर आधारित



पेंगुइन बुक्स

## देवलोक, देवदत्त पटनायक के संग

देवदत्त पटनायक पच्चीस से भी अधिक किताबें और 500 से भी अधिक लेख चुके हैं पौराणिक काथाओं की आज के समय में प्रासंगिकता के बारे में। पेशे से डॉक्टर (आपने ग्रांट मेडिकल कॉलेज, मुंबई यूनिवर्सिटी से एम.बी.बी.एस. किया है), आपने पंद्रह साल हेल्थ केयर और फार्मासूटिकल इंडस्ट्रीज में काम किया है। हालांकि, नौकरी के साथ भी उन्होंने अपना लेखन जारी रखा, लेकिन उसके बाद से आपने सारा समय अपने गहरे शौक, विभिन्न सभ्यताओं की नई-पुरानी मान्यताओं की व्याख्या करने में लगा दिया है। अधिक जानकारी के लिए [devdutt.com](http://devdutt.com) पर जाएं।

पेंगुइन द्वारा प्रकाशित लेखक की और किताबें:

जया  
मिथक

देवलोक  
देवदत्त पटनायक  
के संग



पेंगुइन ब्रुक्स

## अनुक्रम

लेखक की ओर से कुछ टिप्पणियां

परिभाषाएं

1. धार्मिक ग्रंथ
2. रामायण और महाभारत
3. त्रिमूर्ति
4. रंग
5. शिव
6. जीव और जन्तु
7. इंद्र
8. वरदान और श्राप
9. स्वर्ग और नर्क
10. शक्ति
11. गणेश
12. अस्त्र-शस्त्र
13. पवित्र जानवर
14. गंगा
15. गीता
16. तीर्थ यात्रा
17. भगवान और भोजन
18. युग
19. सृष्टि
20. दिशाएं
21. विवाह
22. विभिन्न रूप
23. विष्णु के अवतार
24. ग्रह नक्षत्र
25. वनस्पति और भगवान

## 26. पूजा

## लेखक की ओर से कुछ टिप्पणियां

- यह एक संग्रह है पौराणिक कथाओं के बारे में बातचीत का, इस नाम के टेलिविज़न शो पर आधारित।
- यहाँ की गई चर्चा तथ्य हो, यह ज़रूरी नहीं—आप अपने गुरु से सलाह ले सकते हैं इसे बेहतर समझने के लिए।
- यहाँ पौराणिक कहानियों को सरलता से बताया गया है, जो हमारे शास्त्रों और लोक कथाओं में मिलती हैं।
- कोशिश की गई है कि कहानियों का मर्म न बदले और इन्हें पढ़कर पाठक इनमें छुपे तत्त्वज्ञान, फिलॉसफी को समझने की कोशिश करें।
- जो मैंने यहाँ दिया है वो एक आत्मपरक, सब्जैक्टिव सच है। मेरा सच, जो कई प्रकार के सत्य में एक है, क्योंकि-

अनंत पुराणों में छिपा है सनातन सत्य,  
इसे पूर्णतः किसने देखा है?  
वरुण के हैं नयन हज़ार,  
इंद्र के सौ,  
आपके मेरे केवल दो।

## परिभाषाएं

पश्चिमी चिंतन प्रक्रिया के आदी लोगों के लिए हिंदू विश्वदृष्टि चौंकाने वाली हो सकती है – अगर हम अंग्रेज़ी शब्द, मिथ, (जिसके लिए हिंदी में ‘मिथक’ शब्द चलन में है) की पुरानी परिभाषाओं (‘अतार्किक, अविवेकपूर्ण, असत्य’) को चुनौती ना दें और इसके लिए नई परिभाषा (‘कथाओं, प्रतीकों और अनुष्ठानों में व्यक्त आत्मपरक सत्य, जो भारतीय या पश्चिमी, प्राचीन या आधुनिक, धर्मिक या धर्मनिरपेक्ष सभी संस्कृतियों को गढ़ता है’) ना पेश करें। आत्मपरक सत्य के लिए संस्कृत शब्द ‘मिथ्या’ है – जो वस्तुगत सत्य का विपरीत नहीं बल्कि सत्य की (जो असीम है) एक सीमित अभिव्यक्ति है।

हिंदी अनुवाद में, इन सीमाओं को दृष्टि में रखते हुए, अंग्रेज़ी के ‘मिथ’ शब्द के लिए मुख्यतः ‘आख्यान’ का उपयोग किया जा रहा है।



## 1

### धार्मिक ग्रंथ

भारतीय पौराणिक संस्कृति के अनुसार बहुत सारे ग्रंथ हैं। जैसे वेद, पुराण, महाभारत और रामायण। तो सबसे पहले कौन सा ग्रंथ आया था?

‘ग्रंथ’ शब्द का हमें संभालकर इस्तेमाल करना चाहिए क्योंकि ग्रंथ केवल 2000 साल पहले आये थे। उससे पहले मौखिक परम्परा चलन में थी।

जो पहला वेद आया वह था ऋग्वेद। कुछ समय बाद आये सामवेद, और फिर यजुर्वेद की रचना हुई। इसके थोड़े बाद अथर्ववेद की रचना हुई। तो वेद सबसे पहले मौखिक ग्रंथ हैं, जिन्हें 4000 साल सुनाना शुरू किया गया था।

3000 साल पहले उपनिषदों की रचना हुई। उपनिषद् व्याख्यान हैं। 2000 साल पहले रामायण, महाभारत और बाद में पुराण आते हैं, जो संस्कृत में थे।

करीब 1000 साल पहले कवियों ने इन्हें स्थानीय भाषा में लिखना शुरू किया। जैसे कंबन रामायण है तमिल में, बलराम दास रामायण है उड़िया में, मराठी में एकनाथ रामायण है। मल्यालम में एज़ूथचन रामायण है।

अब, हम मॉडर्न ऐज में आते हैं। तुलसी रामायण, अवधी में, लगभग 500 साल पहले ही लिखी गई।

#### उपनिषद् क्या हैं?

उपनिषद् का सही मतलब है मेरे साथ बैठ के बात करो। तो किसी एक विषय के उपर परिचर्चा करना—मिमांसा जिसे हम कहते हैं। यहां खास फोकस है आत्मा पर—अन्तःमन, चेतना, मर्म, इत्यादि।

वेदों में बहुत मंत्र हैं, बहुत से रीति-रिवाज़ हैं। उपनिषद् में वेदों के रहस्यों पर चर्चाएं हैं राजाओं के बीच में, ऋषियों के बीच में, बच्चों, पुरुषों और स्त्रियों के बीच में, पति-पत्नियों के बीच में, वेदों का अर्थ जानने के लिए।

और इसके बाद आते हैं रामायण और महाभारत जहाँ, ये जो रहस्य हैं, उनको कहानियों के माध्यम से व्यक्त किया जा रहा है।

तो पहला वेद, (4000 साल पुराने) जहाँ ये विचार जन्मे थे। उसके बाद उपनिषद् (3000 साल पुराने) वेदों का मतलब समझाते हुए। पुराण और महाकाव्य (2000 साल पुराने) जो इन विचारों को कहानियों के माध्यम से बताते हैं।

पौराणिक कथाएं सदियों से हैं। हमें कई कहानियाँ गीतों के रूप में सुनने को मिलती

थीं। कई कहानियाँ हमें नाटक के रूप में देखने को मिलती थीं। तो पहले क्या आया? पहले क्या नाटकों और गीतों में कहानियाँ सुनाई जाती थीं या दोनों पहले से ही थे?

पहले गीत आया क्योंकि हमें पता है कि पहले वेदों में मंत्र का जाप होता था। जाप ऐसे होता था—उच्चारण, ताल और लय का बहुत ध्यान रखा जाता था। तो गीत बहुत जरूरी है। सामवेद असल में, लय और संगीत पर केंद्रित है।

तो धीरे-धीरे जब यजुर्वेद आया, ये जो गीत थे, जो मौखिक परम्परा थी, वो यज्ञ के अनुष्ठानों से जुड़ने लगी। इसका मतलब है कि लोग प्रदर्शन करने लगे और यज्ञ अपने आप में एक विस्तृत प्रदर्शन बन गए। उसमें पात्र थे और कौन सी लाईन कब बोलनी है, यह तय था। फिर यज्ञ के बीच में लोगों का मनोरंजन करने के लिए कहानियाँ सुनाई जाने लगीं। और यहाँ से नाटक की शुरुआत हुई और नाटक इतना लोकप्रिय हुआ कि पता नहीं चलता था कि वह यज्ञ का हिस्सा है या यज्ञ के बीच वाला हिस्सा है। फिर ऐसा हुआ कि नाट्य शास्त्र, जो नाटक के बारे में है, वो पंचम वेद बन गया।

हालांकि वेदों में इंद्र, सूर्य और दूसरे देवता हैं, लेकिन उनकी कोई कहानियाँ नहीं हैं। एक-आध बार इधर-उधर कोई कहानी का कोई वर्णन आता है। लेकिन जब पौराणिक काल शुरू हो जाता है, मतलब 2000 साल पहले, तब बड़े-बड़े काव्य लिखे गए जैसे रामायण, महाभारत, और तब नाटक की परम्परा सही में शुरू हुई। कहते हैं, यवन ये परम्परा भारत में लेके आये थे सिकंदर के संग। कुछ कहते हैं हमारे पास भी नाटक की परम्परा थी और हमने दोनों को मिला कर नए तरीके से नाटक बनाए। हम ऐसा इसलिए समझते हैं कि कुछ शब्द हैं संस्कृत में, जैसे यवनिका—जो शब्द यवन से आता है और उसका मतलब है मंच का पर्दा। अगर आप श्रीनाथ जी के मन्दिर में जायेंगे तो, श्रीनाथ जी, जो राजस्थान में और गुजरात में बहुत लोकप्रिय मंदिर हैं, तो वहाँ एक पिछवाई पेंटिंग, चित्र होता है जो असल में मंच की पृष्ठभूमि है।

तो जब 1000 साल पहले मंदिर बनने लगे तो मंदिरों के अंदर नाट्यशालाएं भी बनने लगीं जहाँ रामायण और महाभारत का प्रदर्शन होता था। तो भगवान के सामने नाच-गाना और उसके साथ नाटक होता था। कृष्ण के जन्म का नाटक या रामायण की कहानी। तो जो पहले दरबार में होता था, राजाओं के सामने, वह मंदिरों में होने लगा। जैसे आजकल कथककली है। मगर जब मुगल शासन आया, मंदिरों से वह वापस राजाओं के दरबारों में पहुँच गया। गीतों और नाटकों के विकास की कहानी एक बड़ा ही दिलचस्प इतिहास है।

**ये जो कथाकार थे, क्या ये उनकी अपनी या मूल कहानियाँ थीं या वो कहीं से सुनकर हमें सुनाते थे? ये कहानियाँ कहाँ से आईं?**

यह मूल शब्द यहाँ खतरनाक है। देखिए सनातन धर्म में कुछ मूल नहीं होता। विचार आते हैं, विचार जाते हैं। चक्रवात में लहरें जैसे गिरती और उबरती हैं और कुछ भी मूल नहीं रहता। कहते हैं ब्रह्मा के सर से जब चार वेद निकले थे तो असुरों ने चोरी कर उन्हें पानी के अंदर छुपा दिया। फिर विष्णु ने हैगिरव के रूप में उसे समुद्र से निकाला। हैगिरव का मतलब है घोड़ा। हैगिरव का मनुष्य का शरीर होता है लेकिन

घोड़े का सर। असुरों को मार के, वे वेदों को वापस ले के आए। तो कहानी है कुछ खोने, पाने और फिर सुनाने के बारे में। तो वेदों का असली स्रोत या मूल क्या है? वे ब्रह्मा के सर से निकले तो वे स्रोत हो सकते हैं, पर हैगिरव दे दी तो वो भी स्रोत हो सकते हैं।

तो यह पहली हर कहानी सुनाने वाले के सामने आती है। जैसे रामायण, वाल्मीकि की कहानी थी या नारद की जिससे वाल्मीकि ने सुनी थी? या काकभूसंडी की, जिसने शिव से सुना और नारद को सुनाया? यह क्यों कहते हैं कि किसी को पता नहीं? क्योंकि मूल भाव किसका है, स्रोत कौन है, किसी को नहीं मालूम।

महाभारत में भी यही है। सही महाभारत किसको पता है? क्या व्यास को पता है? एक कहानी है जिसमें जामिनी को कुछ सवालों के जवाब चाहिए होते हैं महाभारत से संबंधित तो वे व्यास के पास जाते हैं। उनके ना मिलने पर वे व्यास के शिष्य वैशम्पयान के पास जाते हैं। वैशम्पयान बताते हैं कि मैंने मौन व्रत लिया है तो मैं कह नहीं सकता। तो जामिनी कहाँ जाएँ? तो कोई चार पक्षी होते हैं जो उन्हें जवाब देते हैं – इससे एक और रास्ता निकला मूल के लिए। तो व्यास ने गणेश को बताया थी वो मूल महाभारत है? या वैशम्पयान ने जैनभ्या को बताई? या रोमहर्शन ने उग्रसरैव को सुनाई वैशम्पयान से सुनने के बाद?

मूल पाठ कहाँ से आया, इस बारे में कहानियाँ हैं, यह दिखाने के लिए कि मूल या असल भाव कुछ नहीं होता। सब कहीं ना कहीं से आता है। यह जो ओरिजनल, मूल की धारणा है, बहुत ही पाश्चात्य विचार है। यहाँ फ़र्क है। यह गोलाकार में कोना ढूँढ़ने जैसा है—आप ढूँढ़ते रहेंगे, कभी नहीं मिलेगा।

**हमने वेदव्यास के बारे में सुना है कि वह बहुत ही बुद्धिमान थे और बहुत ही अच्छे व्यवस्थापक थे। उनके बारे में आप क्या बता सकते हैं?**

वेदव्यास ने महाभारत की रचना की थी, तो उनका नाम उससे जुड़ा हुआ है। लेकिन जो नाम है, वेदव्यास, उसका मतलब है ही व्यवस्था करना। तो वेदव्यास वो है जिसने वेदों को व्यवस्थित किया और पुराणों को भी। कहानी यह है कि एक समय अकाल आया। बारह साल का अकाल, कोई कहता है, चौदह साल का अकाल, कोई कहता है 100 साल का अकाल आया था, जब वेद खो गए। तब वेदव्यास ने उनको समेटा और व्यवस्थित किया एक तरह से – जैसे अब हम उन्हें चार वेदों की तरह जानते हैं। वे एक मछुआरिन के बेटे थे। हम सोचते हैं वे ब्राह्मण थे क्योंकि ऐसा दर्शाया गया है। जातियाँ पिछले 2000 साल पहले ही इतनी बड़ी हुई हैं।

अगर आप वेदों को देखें ध्यान से, अगर आप पढ़ें, समस्यायें हैं कि, मैं हमेशा लोगों से कहता हूँ कि आप वेदों को 'पढ़' नहीं सकते। आपको 'सुनना' चाहिए वेदों को। जैसे बीटल्स का संगीत आप पढ़ नहीं सकते—सुनना ही पड़ेगा। सो इट इस लाइक यू कान्ट रीड द बीटल्स—यू हैव टू हियर देम।

वेदों में दस किताबें हैं जिनको मंडल कहते हैं—मंडल एक गोलाकार है, चक्राकार है। और हर मंडल में सूक्त होते हैं। और हर सूक्त में छंद होते हैं जिन्हें ऋग या ऋचा कहते हैं। छंद मिलकर सूक्त बनाते हैं जो अध्याय या मंडल बनते हैं। इन मंडलों के

एक संग्रह को समहिता कहते हैं। तो आपके पास हैं ऋग संहिता, यजुर संहिता, ज्ञान संहिता, अथर्व संहिता। तो यह वेदव्यास ने किया था—जैसे कम्प्यूटर में एक्सेल शीट होती है। तो पहली संहिता के पहले मंडल के पहले सूक्त के पहले ऋग को 1.1.1 कहेंगे।

वेदव्यास को लगा कि कोई साधारण आदमी वेदों को समझ नहीं पाएगा। वे बहुत भावात्मक हैं, काव्य हैं, मुहावरों और रूपकों से भरे हैं। तो उन्होंने पुराणों की रचना की। व्यास पुराणों से भी जुड़े हैं। तो कहानियों के माध्यम से उन्होंने सब लोगों को समझने का मौका दिया। वे महान आदमी थे।

इतिहास के हिसाब से व्यास 4000 साल पुराने थे और महाभारत और पुराण करीब 2000 साल पुराने। तो व्यास कितने साल जिये? 2000 से ज्यादा साल? या ये कहानियाँ साहित्य के इन दो महाकाव्यों को जोड़ती हैं, वेदव्यास के जरिये? हमें इन कहानियों को सीधे-सीधे पढ़ने का ध्यान रखना चाहिए।

अगर आप इतिहासकारों को पूछेंगे तो वह कहेंगे कि वेद एक आदमी नहीं थे पर एक परम्परा थे। आज भी एक मंच होता है जहाँ से आप लेक्चर, व्याख्यान देते हैं, उसको व्यासपीठ कहते हैं। मोटे तौर पे, हो सकता है व्यास, विद्वानों का या पुस्तकालय अध्यक्षों का गुट रहा होगा जिन्होंने बरसों के ज्ञान को व्यव. स्थित किया। मैं ये नहीं कह सकता कि वह आदमी थे या औरत, लम्बे या छोटे, काले या गोरे। हमें ये कहानियाँ अच्छी लगती हैं, पर शायद यह एक परम्परा थी।

ऋषि वाल्मीकि ने रामायण लिखी, ऐसा सब कहते हैं। पर आपने जैसे बोला था, शायद उन्होंने नहीं लिखा, नारद ने लिखा था। तो इसमें सच क्या है—क्या ऋषि वाल्मीकि ने लिखा था या नारद ने?

रामायण सनातन है, असीम है—इसका न आरंभ है ना अंत। ऋषि वाल्मीकि आदि कवि थे, सबसे प्रथम कविता के रचयिता।

पर वे ऋषि कैसे बने यह एक दिलचस्प कहानी है। उन्होंने नारद मुनि से राम की कथा सुनी थी और वे उसके बारे में वन में विचार कर रहे थे। एक दिन, वे एक पक्षियों के जोड़े को उड़ते हुए देख रहे थे कि अचानक एक बहेलिए का तीर आकर मादा पक्षी को लगा और उसकी वहीं मृत्यु हो गई। जब उन्होंने नर पक्षी की वेदना देखी जो अपनी साथिन के चारों ओर वियोग में चक्कर काट रहा था, तो वाल्मीकि ने बहेलिए को श्राप दिया: 'तुम भी इसी नर पक्षी की तरह तड़पो। तुम्हारे दुश्कर्म तुम्हें जीने न दें'

उनके ये वाक्य पद की तरह निकले और वे कविता की तरह सुनाई दिए। उनके शोक में निकले शब्द श्लोक बन गये। इस तरह कविता का जन्म हुआ।

इस बात से प्रसन्न होकर, अपनी कविताओं को, अपने विचारों को, और राम के बारे में अपने विचारों को गूँथकर उन्होंने राम पर एक सम्पूर्ण कविता लिखी जो थी, रामायण।

आम तौर पर माना जाता है कि ऋषि वाल्मीकि एक चोर थे। दरअसल ऋषि

वाल्मीकि भृगु वंश से हैं और ऋषि च्यवन से उनका संबंध है। वहीं लगभग 500 साल पुरानी लोक कथाओं में रत्नाकर नामक एक साधारण चोर की कहानी है। एक बार, एक साधु ने उससे चोरी करने का कारण पूछा और उसने उत्तर दिया कि वह ये सब अपने परिवार के लिए करता है। साधु ने उसे सलाह दी कि वह अपने परिवार से पूछे कि जिस तरह उन्होंने उसके साथ लूट का माल बाँटा था, क्या वो उसी तरह उसके बुरे कर्मों को भी बाँटेंगे? जब उसे यह समझ में आया कि वे ऐसा कुछ नहीं करेंगे तो उसने साधु की सलाह पर चोरी छोड़ कर राम नाम का जाप अपनाया। जब साधु चले गए तो रत्नाकर भूल से 'मरा, मरा, मरा' जपने लगा जो धीरे-धीरे 'राम, राम, राम' बन गया और अंत में उसे प्रबुद्धता प्राप्त हुई।

स्कन्द पुराण में, कृतिवास रामायण और एक मल्लालम संस्करण में, शायद रचनात्मक कारणों से, इन दोनों कहानियों को मिला दिया गया है, और रत्नाकर को वाल्मीकि से जोड़ दिया गया है लेकिन इसका उल्लेख वाल्मीकि रामायण में नहीं है। यह एक आधुनिक रूपांतर है और यह आवश्यक नहीं कि हम इसे मानें।

**जो वेद हैं, पुराण हैं, और उपनिषद् हैं, उनका मूल पाठ, टेक्स्ट हमें कहाँ से मिल सकता है?**

यह बहुत ही सिंपल है – फोन है आपके पास, इंटरनेट है आपके पास इसमें गूगल है, गूगल में सर्च कर लीजिए। आजकल सब इंटरनेट पर है। आप 'सेक्रेड टेक्स्ट्स ऑफ़ इंडिया' गूगल पर डाल कर सर्च कर सकते हैं। हम जानते नहीं हैं कि अनुवाद, मूल पाठ, पुस्तकालयों की सामग्री, इत्यादि, सब इंटरनेट के ज़रिए मिल सकता है।

ऋग्वेद थे वे 4000 साल पहले लिखे गये, जो पहले 2000 साल पहले तक मौखिक परम्परा में थे। उसके बाद किसी ने उसे लिखा होगा। पहली बार ब्राह्मी लिपि में, शायद पत्तियों पर लिखा गया, राजा अशोक के समय में। पत्ते खराब हो जाते हैं तो धीरे-धीरे एक प, दूसरा पत्ता, करके इनको दोबारा लिखा गया। यह काम आश्रमों में या विश्वविद्यालयों में, या ब्राह्मणों के घरों में किया गया। बाद में शारदा लिपि में और उसके बाद देवनागरी लिपि में लिखे गये। पेपर में 500-600 साल पहले ही लिखे गए।

हम ब्रिटिश लोगों को बुरा मानते हैं लेकिन यह उनकी वजह से ही इन ग्रंथों को पुस्तकालयों में रखा गया जहाँ से अनुवाद, समीक्षाएं छपे हुए संस्करण मिलने लगे। तो आजकल वह हर पुस्तकालय ने भारत में, अमरीका में, यूरोप में इंटरनेट पर डाला है। इसकी वजह से हमारे कई मूल शास्त्र अब आराम से मिलते हैं।



2

## रामायण और महाभारत

**1980 में दो बड़े-बड़े टीवी शोज़ बने थे: रामायण और महामारत। और भारत में शायद ही कोई परिवार होगा जिसने ये शोज़ नहीं देखे। यह दोनों ऐपिक्स इतने महत्वपूर्ण कैसे बन गये?**

यह दो एपिक, महाकाव्य, फैमिली लाइफ़ के बारे में हैं। इनका महत्व समझने के लिए हमें हिस्ट्री में जाना पड़ेगा 2500 साल पहले जब बौद्ध धर्म भारत आया था।

गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म का प्रचार किया। उनका कहना था कि जीवन में दुख, इच्छाओं के कारण है। अगर इच्छाएँ नहीं होंगी तो दुख भी नहीं होगा। इसकी वजह से सन्यास लेने की परम्परा बहुत प्रचलित हो गई और लोग सन्यास लेने लगे। उस समय कई बुद्धिमानों ने सोचा कि ऐसे जीवन तो नहीं चल सकता। अगर सब सन्यासी बन जाएँगे तो सांसारिक जीवन का मूल्य कम होने लगेगा और समाज में असंतुलन हो जायेगा।

तब उस समय के कवियों, ऋषियों और ब्राह्मणों ने आध्यात्मिक मूल्यों को आम जीवन में जोड़ने के तरीके ढूँढ़े। तब उन्होंने रामायण और महाभारत की रचना की जो पारिवारिक मूल्यों के बारे में हैं। और आप देखें तो ये प्रोपर्टी डिस्प्यूट्स, सम्पत्ति के विवादों पर हैं। रामायण में इसके ऊपर युद्ध होता है कि किसका बेटा राजा बनेगा और महाभारत में भाईयों में लड़ाई होती है कुरुक्षेत्र में। ये घर-घर की कहानियाँ हैं। तो रामायण में राम के माध्यम से और महाभारत में कृष्ण के माध्यम से वे पारिवारिक समस्याओं के ऊपर बहस कर रहे हैं — कि यह कितना मेरा और कितना तुम्हारा, अपना और पराया का मतलब क्या है, इत्यादि। इन कहानियों के माध्यम से वेदों के ज्ञान को व्यक्त किया जा रहा है और इसलिए ये इतने लोकप्रिय हो गए।

2000 साल पहले ये कथाएँ आईं। और 400-500 साल लगे इन्हें विकसित होने में। तो मौर्य काल (2300 साल पहले) और गुप्त काल (1700 साल पहले) इस अवधि के बीच में रामायण और महाभारत की रचना संस्कृत में हुई। ये कहानियाँ शायद और पुरानी रही होंगी। हमें नहीं पता।

**तो पहले क्या आया, रामायण या महाभारत?**

यह थोड़ा मुश्किल प्रश्न है। पौराणिक दृष्टिकोण से हमारे चार युग—पहला सतयुग, उसके बाद त्रेतायुग, द्वापर युग और आखिर में कलियुग आता है।

रामायण की घटनाएँ त्रेतायुग की समप्ति और द्वापर युग की शुरुआत में होती

हैं। महाभारत की कहानी तब आती है जब द्वापर युग समाप्त होता है और कलियुग की शुरुआत होती है। तो पौराणिक हिसाब से अगर देखें तो रामायण पहले आती है। वेदव्यास की महाभारत में युधिष्ठिर को रामायण की कथा सुनाई जाती है जैसे वो अतीत में हैं। इसका मतलब राम कृष्ण से पहले आए थे।

लेकिन अगर लिटरेचर के हिसाब से देखें तो लगता है जैसे महाभारत पहले आई थी और रामायण बाद में क्योंकि जो संस्कृत इस्तेमाल की गई है महाभारत में वो थोड़ी अशुद्ध लगती है। ये कहानियाँ 600 साल में धीरे-धीरे लिखी गई थीं। यह नहीं कि एक आदमी ने एक महीने में पूरा काव्य लिख दिया। इसके पहले 400 साल पहले की मौखिक परम्परा भी थी। तो ये सब 1000 साल में विकसित हुआ। यह समझना आसान नहीं है।

अगर एन्थ्रोपोलोजिस्ट से पूछो या सोशियॉलजिस्ट, समाजशास्त्री से पूछो। तो वो कहेंगे कि महाभारत में एक स्त्री के पाँच पति हैं, बहुपतित्व समाज है, तो यह ज्यादा प्राचीन है। रामायण में, एक पत्नीक समाज है, यानि मॉनोगैमी। इससे लगता है कि महाभारत पहले आई।

अगर आप इतिहासकारों से पूछोगे तो एक और उत्तर आएगा। वो कहेंगे कि महाभारत की कहानी उत्तर भारत के बारे में है — जो पंजाब का क्षेत्र है और अब हरियाणा, दिल्ली और उत्तरप्रदेश है। लेकिन रामायण की कहानी साऊथ, दक्षिण भारत जाती है, तो यह शायद बाद में आई।

**इन सबके बीच में कृष्ण की रास लीला किधर है — रामायण में है या महाभारत में?**

इसका भी एक उत्तर नहीं है। कृष्ण की जो बचपन की कहानी है, जब वो ग्वाले थे, वृंदावन और गोकुल की कहानियाँ, महाभारत में नहीं आतीं। कहीं-कहीं कुछ शब्द जैसे गोविन्द, गोपाल, एक आध बार आ जाते हैं महाभारत में, लेकिन यशोदा, देवकी, और लोग नहीं आते। ये हरिवंश पुराण में आती हैं। हरिवंश पुराण 1600 साल पहले लिखा गया था और विष्णु पुराण जो 1500 साल पहले लिखा गया था, उसमें इसके बारे में जिक्र आता है। भागवत पुराण जो 1000 साल पहले लिखी गई थी उसमें कृष्ण के बचपन की पूरी कथा है। दिलचस्प ये है कि इसमें राधा का वर्णन नहीं है। रास-लीला का वर्णन है लेकिन राधा नहीं हैं। वो जयदेव की गीत गोविंद में जो 800 साल पहले लिखी गई थी उसमें आती हैं। लोग कहते थे कि प्राकृत काव्य में राधा का नाम कहीं छिपा हुआ है मगर इसका कोई प्रमाण नहीं है। अगर देखें तो कृष्ण की रास लीला रामायण और महाभारत के बाद लिखी गई है। लेकिन कहानी के हिसाब से वह रामायण के बाद और महाभारत के पहले की है।

**इन सबके बीच हमारे प्यारे शिव कब आते हैं, और उनकी कहानियाँ कब आना शुरू होती हैं?**

रामायण, महाभारत, भगवद् यह सब विष्णु की कहानियाँ हैं और विष्णु पुराण का हिस्सा मानी जाती हैं। विष्णु के कई अवतार इंसान होते हैं, उनमें राम और कृष्ण सबसे प्रसिद्ध हैं। ये महाकाव्य उनके ऊपर वैष्णव परम्परा में लिखे गए। इसके संग-संग शैव परम्परा भी विकसित हो रही थी। भारत में।

हिन्दू धर्म एक पेड़ की तरह है। एक शाखा वैष्णव परम्परा है दूसरी शाखा शैव परम्परा है। वैष्णव परम्परा गृहस्थ जीवन में भाग लेने के बारे में है। इसमें एक रामायण की कहानी है, जहाँ पे राम एक पत्नित्व का पालन करते हैं, महाभारत में हम देखते हैं कि द्रौपदी के पाँच पति हैं, और एक कृष्ण की रास-लीला है। जब कृष्ण शादी करते हैं तो उनकी कई पत्नियाँ होती हैं। तो कई अलग-अलग परम्पराएँ निकल रही हैं यहाँ पे, अलग-अलग सभ्यताओं के बारे में बात हो रही है, लेकिन गृहस्थ जीवन से जुड़े रहते हुए। शैव परम्परा संसार से विमुख होने के बारे में है। शिव की कहानियाँ शिव पुराण से आती हैं, जो 1500-2000 साल पहले लिखी गई थीं, महाभारत और रामायण के समय।

**शक्ति कहाँ हैं इस सब में? उनकी कहानियाँ कहाँ हैं?**

तो जब दो शाखाएँ निकलीं, लोगों ने शैव पुराण से यही प्रश्न पूछा है कि देवी कहाँ हैं? रामायण और महाभारत, दोनों में देवी का वर्णन है किन्तु थोड़ा वो बैकग्राउंड में है, शिवपुराण में भी यही है। देवी उभर कर सामने आई करीब 200 साल पहले, भागवत पुराण से पहले। ये सब ग्रंथ संस्कृत में थे। इनका राजकीय भाषाओं में ट्रान्सलेशन, अनुवाद 1000 साल बाद शुरू हुआ। 100-200 साल पहले, अंग्रेजी में ट्रान्सलेशन होना शुरू हुआ। ऐसा करने की प्रक्रिया 1000 साल पहले शुरू हुई।

**रामायण और महाभारत को हम इतिहास बुलाते हैं। क्या यह कहना सही होगा कि ये सही में ऐतिहासिक हैं?**

यह शब्द इतिहास दो प्रकार से देखा जा सकता है एक तो आध्यात्मिक रूप से, दूसरा वैज्ञानिक तरीके से देख सकते हैं। जैसे आप वैज्ञानिक तरीके से देखें तो हमें पुरातात्विक सबूत चाहिए होंगे, इसे तथ्य मानने के लिए। उस हिसाब से रामायण और महाभारत का कोई सबूत नहीं है। तो वैज्ञानिक तरीके से हम इन्हें इतिहास नहीं कहेंगे। काव्य कहेंगे।

लेकिन, अगर आध्यात्म के हिसाब से देखो तो इतिहास का मतलब है लोगों की यादें। जो लोगों का बताया गया है कि यह तुम्हारा इतिहास है। तो याद और इतिहास में बहुत फर्क होता है। फिलोसोफ़िकली अगर देखो तो इतिहास शब्द का मतलब है कि ऐसी ही जिंदगी होती है। रामायण, महाभारत एक प्रकार का माध्यम हैं फिलौसफी समझने का।

राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं जो नियम और धर्म का पालन करते हैं। अगर आप महाभारत देखें तो वहाँ कृष्ण लीला पुरुषोत्तम है, जो नियमों का पालन नहीं करते। परंतु धर्म का करते हैं। तो हर तरह के लोग हैं — जो नियम को मानते हैं और जो नहीं मानते — और दोनों कैसे साथ में जीते हैं और उनका रिश्ता क्या होता है वो रामायण और महाभारत समझाती हैं।

इतिहास का मतलब है, 'ऐसा ही होता था, ऐसा ही होता है, और ऐसा ही होता रहेगा' — इसलिए इतिहास सनातन है। जब तक मनुष्य है, तब तक प्रापर्टी इशूस, ज़मीन की समस्याएँ हैं, तब तक ये सारी प्रॉब्लम्स भी रहेंगी। तो इतिहास को वैज्ञानिक, आध्यात्मिक या विश्वास के ज़रिये देखा जा सकता है — ये आप पर निर्भर

है, कैसे? जो मीनिंग आपको लेना है वो आप ले सकते हो ।

**हमारे पुराण कितने हैं?**

कहते हैं कि 108 पुराण हैं जिसमें महापुराण होते हैं, उप पुराण होते हैं, गाँव या मंदिर के स्थल पुराण हैं। जो 108 पुराण हैं उनमें से मेन पुराण शिव पुराण, विष्णु पुराण, ब्रह्म पुराण, और देवी पुराण हैं। ब्रह्म पुराण असल में शिव पुराण और विष्णु पुराण को मिलाकर है और देवी पुराण बहुत महत्वपूर्ण है।

**जैसा आपने कहा था कि विष्णु पुराण गृहस्थ जीवन के बारे में है और शिव पुराण सन्यास के बारे में है। देवी पुराण का विषय क्या है?**

अगर आपको एक सन्यासी को गृहस्थ बनाना है तो उसकी शादी करा देनी चाहिए। या जो गृहस्थ है और उसे सन्यासी बनाना है तो वह किस का त्याग करेगा — स्त्री का त्याग करेगा। तो देवी पुराण सांसारिक जीवन के बारे में बात करता है — प्रकृति और संस्कृति के बीच के फ़र्क के बारे में। कब जीवन का अनुभव लेना चाहिए या कब जीवन त्याग के सन्यास लेना चाहिए। यह मेन थीम है हिन्दु धर्म की। और इसलिए देवी के साथ उनका रिश्ता क्या है यह आवश्यक है। विष्णु कहते हैं कि उनका रिलेशनशिप देवी के साथ बहुत अनोखा होता है। कुछ कहानियों में वह उनकी माता हैं (रेणुका), कुछ में उनकी पत्नी होती हैं (सीता), या कुछ में उनकी दोस्त होती हैं (द्रौपदी)।

शिव का देवी से रिश्ता बहुत सिंपल होता है। शिव बैरागी हैं, देवी उनको गृहस्थ बना देती हैं। जब उनकी देवी से शादी होती है, तो वे शिव शंकर बन जाते हैं और जब वे देवी से दूर रहते हैं तब गौरी शंकर बन जाते हैं। प्रेम करने वाले पति के रूप में वे उमा महेश्वर बन जाते हैं, एक गृहस्थ।

**तो रामायण और महाभारत की कहानियाँ हैं वे पहली बार कब सुनाई गईं, और किस रूप में?**

हिस्टॉरिकली तो हमें पता नहीं, लेकिन पुराणों में कहते हैं कि पहली बार रामायण राम को ही सुनाई गई थी उनके बच्चों लव और कुश द्वारा। वे वाल्मीकि के आश्रम में बड़े हुए और वाल्मीकि उन्हें रामायण सुनाते हैं जो उन्हीं ने लिखी होती है। लव और कुश फिर अपने पिता को सुनाते हैं। कहते हैं कि राम ने जब पहली बार रामायण सुनी, उन्होंने पूछा कि वो किसकी कहानी है तो लव और कुश ने कहा, 'हम आपकी कहानी सुना रहे हैं।' तो राम ने कहा, 'जो तुम कहानी सुना रहे हो वो मेरी कहानी से बेहतर है।'।

महाभारत की कहानी दो-तीन बार सुनाई जाती है। नौमिषा जंगल में ऋषि रहते हैं, वहाँ एक सन्यासी आता है जिसका नाम उग्रश्रवा सूत होता है। सूत का मतलब है स्टोरी टेलर, कहानीकार और सुनाने वालों का जो सरदार होता है उसे कहते हैं शॉनक। साउती शॉनक को महाभारत की कहानी सुनाता है और वह कहता है, 'मैंने यह कहानी अपने पिता रोमर्हषण से सुनी है। रोमर्हषण का अर्थ है रोंगटे खड़े होना—मतलब की वह इतनी अच्छी कहानी सुनाते हैं कि रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उग्रश्रवा मतलब बुलंद आवाज़ वाला। तो उग्रश्रवा महाभारत पहली बार सुनाता है। उसने अपने

पिता से सुनी है और उन्होंने वैशम्पायन से सुनी। जिन्होंने व्यास से सुनी।

भागवद् पुराण की कहानी दिलचस्प है। अर्जुन के बेटे का नाम था अभिमन्यु और अभिमन्यु के बेटे का नाम था परीक्षित और परीक्षित को एक तक्षक नाम के साँप ने डस लिया। वे जब मर रहे थे तो उनको बहुत दुख हो रहा था कि मैं क्यों मर रहा हूँ? मैंने क्या ग़लती की है? इस ज़िंदगी का क्या मतलब है? वो मानव के अस्तित्व के बारे में परेशान थे। तब सुकमणि उनके पास आए जो व्यास मुनि के बेटे थे। सुक का मतलब है तोता। सुकमणि तोते की तरह जो उनके पिता ने कहा था परीक्षित को बता देते हैं। वे भागवद् पुराण की कथा बताते हैं, कृष्ण के बचपन की कहानियाँ, रास-लीला की कहानियाँ, उनका जीवनी, इत्यादी। ये कहानियाँ सुनने के बाद परीक्षित शांत हो जाते हैं और उन्हें मृत्यु से डर नहीं लगता।

**गीता महाभारत का अंश है। इसके बारे में कुछ बताइए।**

जिस गीता की आप बात कर रहे हैं, वो भगवत गीता है जो कृष्ण ने अर्जुन को सुनाई, कुरुक्षेत्र के युद्ध से पहले। लेकिन महाभारत में कई गीताएँ हैं। एक व्यास गीता होती है जो युधिष्ठिर को मार्कण्डेय ऋषि सुनाते हैं। फिर काम गीता है जो कृष्ण युधिष्ठिर को सुनाते हैं। फिर अनु गीता है जो युद्ध के बाद अर्जुन को कृष्ण सुनाते हैं और उसके बाद भगवत गीता दोबारा सुनाते हैं। तो गीताएँ बहुत हैं पर जो प्रचलित है वो भगवत गीता है जिसे हम केवल 'गीता' कहते हैं। यह भीष्म पर्व के उस अध्याय से शुरू होती है जो महाभारत का बीच का हिस्सा है, और जहाँ से चीज़ें बदलने लगती हैं।

**तो क्या यह कहना सही होगा कि रामायण और महाभारत संस्कृत में लिखी गयी हैं?**

हाँ, लिखी गई हैं। लेकिन, जो हमारे मन में है, और जो संस्कृत में लिखी गई हैं उसमें बहुत फ़र्क है। जैसे हम रामायण में लक्ष्मण-रेखा की बात करते हैं पर लक्ष्मण-रेखा संस्कृत रामायण में नहीं है। तो जो रामायण हमारे मन में है, वह है लोक रामायण, जो रीजनल भाषा में लिखी गई थी। हमारे देश में कई भाषाएँ हैं। दक्षिण भारत में — तमिल, तेलगु, मल्यालम, कन्नड प्राथमिक फिर तुलु, कोंकड़ी, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, बंगाली, उड़िया, आसामी, इत्यादि। तो इन सभी भाषाओं में कवियों द्वारा रामायण लिखी गई। उन्होंने अपनी ज़रूरत के हिसाब से रामायण की पुनर्रचना की। संस्कृत का सीधा अनुवाद नहीं किया। तो रामायण एक ग्रंथ नहीं है — एक परम्परा है।

अलग-अलग भाषाओं में रामायण है। हर भाषा में बीस-पच्चीस या 100 तक रामायण होंगी तो अगर आप कहें कितनी रामायण हैं भारत में, तो कहेंगे 300, 500, या 1000। माँ जब भी अपने बच्चे को रामायण सुनाती हैं, तो वह अपनी रामायण, अपना रूपांतर सुनती हैं और यह रूपांतर वाल्मीकि रामायण से और ज़्यादा महत्वपूर्ण है। वाल्मीकि रामायण को मूल रामायण कहेंगे, तुलसी रामायण या व्यास रामायण को नहीं। ज़्यादातर लोगों को यह भी पता नहीं कि व्यास की भी एक रामायण नहीं है। महाभारत के अंदर एक अध्याय है जहाँ युधिष्ठिर को मार्कण्डेय राम की कथा सुनाते हैं। क्योंकि युधिष्ठिर का तेरह साल का बनवास था जो उनके जुए में हारने की वजह से हुआ और वे इस बात को लेकर रोते रहते हैं। तब मार्कण्डेय कहते हैं कि राम ने तो कुछ

गलती नहीं की थी तब भी उन्हें चौदह साल वह वनवास हुआ। वे तो कभी रोए नहीं। इसको रामोपख्यान कहते हैं। जहाँ महाभारत के अंदर रामायण आती है।

तो संस्कृत में भी कई रामायण हैं भावभूति की लिखी, भासा की लिखी, और विख्यात कवि कालिदास की लिखी (रघुवंश)। तो जब आप संस्कृत रामायण की बात करते हो तो मुश्किल है कहना कि कौन सी रामायण की बात हो रही है। जैसे लक्ष्मण-रेखा मैंने कहा कि संस्कृत रामायण में नहीं है। वह कृतिवासी रामायण, यानी बंगला रामायण में आती है पंद्रहवीं शताब्दी में। अवधी रामायण बाद में आई जो तुलसीदास ने लिखी। यह हिन्दी की रामायण नहीं कहलाएगी क्योंकि हिन्दी भाषा अभी आई है। तो अगर आप रामायण का इतिहास पढ़ोगे तो पूरे भारत का इतिहास आपको पता चलेगा। कंबन रामायण दसवीं शताब्दी में लिखी गई, दांडी रामायण जो उड़िया में है वह सोलहवीं शताब्दी में लिखी गई, फिर कृतिवासी रामायण पंद्रहवीं शताब्दी में लिखी गई। कहानी तो वही है लेकिन अंदर विवरण अलग-अलग हैं। जैसे लक्ष्मण-रेखा किसी ने डाल दिया, जो पहले नहीं था या वाल्मीकि की रामायण में रावण सीता को उठा ले जाता है। सीता का तब विस्तृत स्वयंवर वाल्मीकि रामायण में नहीं है; राम आते हैं, धनुष उठाते हैं, कमान तोड़ देते हैं और सीता से शादी कर लेते हैं।

रामलीला की परम्परा लगभग 400-500 साल पुरानी है। इसके पहले अलग-अलग नाटक होते थे। बौद्ध धर्म में भी एक रामायण है जहाँ बुद्ध स्वयं रावण को शिक्षा देते हैं कि तुम बहुत ही बुरा काम कर रहे हो, इसे छोड़ दो, इन इच्छाओं को त्याग दो। जैन धर्म में भी एक रामायण है जहाँ राम को पद्म कहा गया है। राम को पद्म इसलिए कहते हैं क्योंकि वे बहुत सुंदर हैं।



3

## त्रिमूर्ति

हमें त्रिमूर्ति के कॉन्सेप्ट के बारे में बताइए।

त्रिमूर्ति, में तीन देवता हैं — ब्रह्मा, विष्णु और शिव। ब्रह्मा ब्रह्माण्ड के रचयिता हैं, विष्णु ब्रह्माण्ड का पालन करते हैं और शिवजी ब्रह्माण्ड के डिस्ट्रॉयर हैं — तो एक जैनरेटर है, एक ओरगेनाइज़र है, और एक डिस्ट्रॉयर है 'GOD' का लॉजिक बहुत अच्छा लगता है, लेकिन अगर यथार्थ में देखें तो, जब भी आप गाँव में जाएँगे, आप रिसर्च करेंगे तो आप देखेंगे कि त्रिमूर्ति का कोई मंदिर नहीं है। शैव परम्परा के मंदिर में शिव की मूर्तियाँ होंगी। वैष्णव परम्परा के मंदिर में विष्णु की मूर्तियाँ होंगी और तीसरा होता है, देवी का मंदिर, मतलब शाक्त परम्परा। तो जब हम असल में त्रिमूर्ति कहते हैं, वहाँ पर ब्रह्मा नहीं होते, वहाँ पर देवी होती हैं।

तो ब्रह्मा की कोई पूजा नहीं करता, उनका कोई मंदिर नहीं है ऐसा कैसे हो सकता है?

ऐसे मंदिर हैं, एक-आध। पुष्कर में एक ब्रह्मा का मंदिर है, साउथ में कुम्भकोणम में ब्रह्मा का एक छोटा मंदिर है। लेकिन ब्रह्मा की कोई परम्परा नहीं है। इसका कारण बताने के लिए कई कहानियाँ हैं, कुछ हिस्टोरिकल रीज़न्स से भी हैं, कुछ ऐन्थ्रोपोलोजिकल रीज़न्स से भी हैं। हिन्दू धर्म 4000 साल पुराना है। और इसके दो भाग हैं। एक वैदिक काल होता है जो पहले 2000 साल हैं और जो नेक्स्ट 2000 साल हैं, उन्हें पौराणिक काल में काउन्ट किया जाता है। वैदिक काल में ज्यादातर देवता होते हैं, प्रकृति के — जैसे सूर्य, चंद्रमा, इंद्र, अग्नि, इनका पूजन ज्यादा होता था। वहाँ पर भगवान का कॉन्सेप्ट ज्यादा नहीं था। जो हम ब्रह्मा, विष्णु और शिव कहते हैं यह कॉन्सेप्ट तब नहीं था। यह पौराणिक काल में आता है।

वैदिक काल में यज्ञ होते थे — पर मंदिर नहीं होते थे, मूर्ति पूजा नहीं होती थी। वहाँ पर कहानियाँ भी नहीं होती थीं। बेसिकली एक यज्ञ होता था, एक रिचुअल्स होता था, कॉम्पलीकेटिड, जो ब्राह्मण करते थे। इसमें कोई नहीं जा सकता था। बहुत ही गुप्त होता था। मंदिर भी बहुत ही अलग थे। वहाँ नाट्य-मंडप होते थे या भोग मंडप होता था, जहाँ खाना लगता था, रिचुअल्स होते थे। देवी-देवता होते थे और उत्सव होते थे। जो मूर्तियाँ होती थीं, वह शिव की होती थीं या विष्णु की होती थीं और उनके अवतार, या देवी की होती थीं। ब्रह्मा की मूर्तियाँ नहीं होती थीं। इसका कारण हो सकता है, कि ब्रह्मा का संबंध वैदिक काल में यज्ञ से जुड़ा हुआ था। पौराणिक काल में वैदिक परम्परा को हमने त्यागा और अगम परम्परा या मंदिर परम्परा को हमने स्वीकारा। तो इस शिफ्ट के कारण ब्रह्मा की पूजा नहीं होती। यह इसका ऐन्थ्रोपोलोजिकल, हिस्टोरिकल रीज़न हो सकता है। लेकिन अगर स्टोरीज़ देखें तो

बहुत सी कहानियाँ हैं इस विषय पर।

एक कहानी के हिसाब से, जो वैष्णव परम्परा से आती है, कि ब्रह्माण्ड की शुरुवात कैसे हुई थी। कहते हैं कि विष्णु जब सो रहे थे तब प्रलय थी। जब वे जागे तो सृष्टि की स्थापना हुई और उनकी नाभी में से कमल का एक फूल निकला, उसके अंदर ब्रह्मा बैठे हुए थे। जब ब्रह्मा ने पहली बार दुनिया को देखा तो वे डर गए। विष्णु ने उन्हें सम्भाला। तो ब्रह्मा की पूजा नहीं कर सकते क्योंकि भगवान कभी भयभीत नहीं हो सकते, भगवान तो वो हैं जो भय को निकालते हैं। तो इसलिए विष्णु की पूजा करते हैं हम और ब्रह्मा की नहीं करते।

शैव परम्परा में एक और कहानी है। कहते हैं, एक बार ब्रह्मा और विष्णु के बीच में बहुत लड़ाई होती है। ब्रह्मा कहते हैं कि मैंने दुनिया की रचना की है तो मेरी पूजा होनी चाहिए और विष्णु कहते हैं कि पालनहार मैं हूँ तो मेरी पूजा होनी चाहिए। एक बार सृष्टि की यात्रा करते-करते, ब्रह्मा, विष्णु के आवास पर पहुँचे तो विष्णु उनके स्वागत के लिए खड़े भी नहीं हुए — इस बात पर ब्रह्मा बहुत ही क्रोधित हो गए और उन दोनों के बीच लड़ाई हो गई यह तय करने के लिए कि दोनों में सबसे महान कौन है। बात यहाँ तक पहुँच गई कि दोनों के बीच युद्ध आरम्भ हो गया। तब शिव प्रकट हुए और उन्होंने दोनों के बीच में एक विशालकाय अग्नि-स्तम्भ का रूप ले लिया। जो इतना ऊँचा था कि उसका न कोई आदि था न अंत था और यह निर्णय हुआ कि जो स्तम्भ के अंतिम-कोने का पता लगाएगा, वह ही ज्यादा महान माना जाएगा। तुरंत ही विष्णु ने खुद को एक वराहा में परिवर्तित कर लिया और स्तम्भ के अंत का पता लगाने के लिए पाताल की ओर निकल पड़े। ब्रह्मा ने खुद को एक राजहंस में परिवर्तित करके स्तम्भ की ऊँचाई खोजने के लिए आकाश में उड़ान भरी। फिर एक मोड़ पर ब्रह्मा की एक केतकी पुष्प से मुलाकात हुई जो धरती की ओर बढ़ रहा था। केतकी पुष्प ने बताया कि वह अग्नि स्तम्भ के ऊपरी छोर से गिरा है। ब्रह्मा यह समझ गए कि उस शिखर तक पहुँचने में युग बीत जाएंगे तो कूटनीति से ब्रह्मा ने उस केतकी पुष्प से झूठा साक्ष्य देने के लिए मना लिया। साक्ष्य ऐसा कि विष्णु से पुष्प कहे कि ब्रह्मा स्तम्भ के ऊपरी छोर तक पहुँचने में कामयाब रहे और प्रमाण में वही केतकी पुष्प को लाए हैं। दुर्भाग्यवश शिव को उनके झूठ का पता चल गया और उन्होंने ब्रह्मा का नाश करना चाहा। ब्रह्मा की क्षमा याचना से वे कुछ हद तक शांत हो गए, परन्तु शिव ने ब्रह्मा को श्राप दिया, 'तुमने स्वयं को पूजनीय बनाने के लिए झूठ का सहारा लिया और इसी कारण तुम किसी के द्वारा पूजे नहीं जाओगे।'

तीसरी कहानी शाक्त परम्परा से आती है। ब्रह्मा यज्ञ कर रहे थे और बगल में उनकी पत्नी सावित्री बैठी थीं। सावित्री ने कहा, 'मैं नहा के आती हूँ और आप तब तक यज्ञ शुरू ना करें।' ब्रह्मा रुक गये और उनका इन्तज़ार किया परन्तु महरत निकला जा रहा था। वे परेशान हो गए। उन्होंने गाय से एक स्त्री को जन्म दिया, जिसका नाम पड़ा गायत्री। उनको बगल में लेकर उन्होंने यज्ञ शुरू कर दिया। जब सावित्री वापस आईं उनको बहुत गुस्सा आया। उन्होंने कहा, 'आप थोड़ी देर रुक नहीं सकते थे? इतने अधीर देवता की कोई पूजा नहीं करेगा।'

शिव को डिस्ट्रोयर, विनाशक कहा जाता है। अगर वो डिस्ट्रोयर हैं तो हम उनकी

**पूजा क्यों करते हैं? ब्रह्मा की पूजा क्यों नहीं करते, जो रचयिता हैं?**

ज्यादातर क्या होता है कि हम डिस्ट्रॉयर वर्ड सुनते हैं तो हमारे दिमाग में एक नैगेटिव तस्वीर आती है। पर वे दुष्टता के नाशक हैं, इसलिए हम उनकी पूजा करते हैं। लेकिन यह सही इसलिए नहीं लगता क्योंकि उसी सोच से फिर ब्रह्मा और विष्णु दुष्टता के रचयिता और पालनहार बन जाते हैं। यह लॉजिक ठीक नहीं है, क्योंकि हमें पूछना चाहिए कि ऐसा क्या किरएट किया किसी ने और क्या डिस्ट्रोए कर रहे हैं जिससे किरएटर की पूजा नहीं हो रही, मगर डिस्ट्रोयर की हो रही है। अगर आप ऋग्वेद पढ़ें तो वहाँ हमेशा कहेंगे कि किरएशन, निर्माण हमेशा इच्छा से नहीं होता। भारत में 2500 साल पहले बौद्ध धर्म आया था। जिसमें एक अत्यावश्यक बात कही गई थी, कि दुख का कारण है इच्छाएं। मतलब ब्रह्मा का संबंध दुख से हो गया और इच्छा से भी। शिव इच्छाओं को खत्म करने वाले और कष्टों के नाशक हैं।

कहानी कुछ ऐसे है कि ब्रह्मा ने ब्रह्माण्ड की रचना एक आकर्षक औरत की तरह की, जिसपे वे मोहित हो गए। उनकी आसक्ति इतनी बढ़ गई कि शिव को उन्हें योग से रोकना पड़ा। भोग, यानि इच्छापूर्ति और योग, यानी इच्छाओं को दबाने की शक्ति के बीच का संतुलन है विष्णु। विष्णु काम, इच्छा को निकाल देते हैं और दूसरों को देते हैं — इन्सान को अपनी इच्छाएं नहीं बल्कि दूसरों की इच्छाएं पूरी करनी चाहिए। वे इच्छा को मारते नहीं पर उसकी जगह बदल देते हैं। इस वजह से भूमिकाएं बदल जाती हैं। तो रचना यहाँ हो रही है इच्छाओं और कष्टों की; संरक्षण यहाँ है दूसरों की इच्छाओं की और उनके कष्टों का निवारण हो रहा है; और नाश हो रहा है उनके कष्टों की वजह का। शिव कामदेव का नाश करते हैं और यमदेव का भी। वे कामांतक भी हैं और यमांतक भी — काम और मृत्यु, दोनों का नाश करने वाले।

**इन तीनों देवताओं की अपनी विशेषताएँ हैं। हमें ब्रह्मा, विष्णु और शिव की छवियों के बारे में बताएँ।**

ब्रह्मा एक वृद्ध शिक्षक या ऋषि की तरह नज़र आते हैं। उनके हाथों में यज्ञ करने के साधन दिखाई देते हैं : एक कमण्डल, एक चम्मच घी डालने के लिए, एक वेद संहिता या ग्रंथ। वे ब्राह्मण वर्ण से संबंधित हैं। दूसरी ओर विष्णु का रूप हमेशा राजकीय होता है — सिर पे मुकुट, रेश्मी कपड़े, चंदन का टीका और फूलों की माला जिसे वनमाली कहते हैं। उनके हाथों में शंख, चक्र और गदा होता है। अपने राम अवतार में विष्णु धनुष लिए होते हैं और कृष्ण अवतार में बाँसुरी। शिव बिल्कुल अलग हैं। उनके सारे शरीर पे राख लगी हुई होती है और वे दिगम्बर के नाम से जाने जाते हैं क्योंकि वे कपड़े नहीं पहनते। पर तस्वीरों में उन्हें गज चर्म, हाथी की चर्म या व्याग चर्म, बाघ की चर्म और जटाओं के साथ दिखाते हैं। शिव का संबंध प्राकृतिक चीजों से है। मगर, विष्णु बनावटी और बनाई हुई चीज़ें पहनते हैं। आपको इन चीज़ों को पाने के लिए किसानों, सूत कातनेवालों, बुनकरों, रंगरेज़ों की पलटन चाहिए। इन सब सामान को पाने के लिए सभ्यता से जुड़े हैं। तो हमारे पास ब्रह्मा हैं जिन्होंने यज्ञ से सभ्यता का निर्माण किया। इस सभ्यता को चलाने और पालने के लिए हैं राजा, विष्णु। और नाश करने वाले वैरागी हैं, और वे उसी तरीके के कपड़े पहनते हैं। जिस तरह ये तीन देवता दिखते हैं और उनसे जितने चिन्ह जुड़े हैं, वो प्रकृति और समाज का दर्पण है।

आपने पहले शाक्त परम्परा के बारे में बात की थी और हम त्रिदेव के बारे में बात कर रहे थे। ये सारे मेल गाँड़स हैं, हमारी देवी इन सब में कहाँ हैं?

हिन्दू धर्म में एक फंडामेंटल प्रिंसिपल, मौलिक सिद्धांत है कि प्रकृति अचल है, और प्रकृति देवी है। यह कैनवस है जिसमें मनुष्य आता है। तो जब हम मेल गाँड़स के बारे में बात करते हैं तो बेसिकली हम अपने मन के बारे में बात कर रहे हैं। मनुष्य के दिमाग का देवी के साथ रिश्ता दिखाने के लिए कई कहानियाँ हैं देवी-देवताओं की। तो शाक्त परम्परा में ब्रह्मा के साथ देवी का रिलेशनशिप दोहरा होता है, एक तो वे ब्रह्मा की माँ हैं काली के रूप में, और गौरी के रूप में बेटी हैं। काली आरण्य या जंगल का प्रतीक हैं। बेटी जो है वह संस्कृति है, वो ग्राम है, यानी विलेज, जो डोमैस्टिकेटिड लैंड है, सभ्यता है। मनुष्य आता है जंगल से संस्कृति की ओर, जिसका वह निर्माण करता है — तो निर्माण का पिता है और जंगल का पुत्र है, ब्रह्मा। पर वे इस रिलेशनशिप को रिस्पेक्ट, आदर नहीं करते, तो ब्रह्मा को पूजा नहीं जाता। शिव के साथ देवी का रिलेशनशिप बहुत अलग है — पत्नी का। शक्ति जो प्रकृति की देवी हैं, वे पहले सती के रूप में, और दूसरी बार पार्वती के रूप में, शिव के पास जाती हैं। वे शिव को मोहित करती हैं, वे उन्हें गृहस्थ में खींचती हैं और भाग लेने को प्रेरित करती हैं।

विष्णु के साथ भी उनका सबसे अनोखा रिलेशनशिप है। अगर आप विष्णु की पुरानी मूर्तियाँ देखें तो उनके बगल में लक्ष्मी और सरस्वती होती थीं — दोनों ही इनकी पत्नियाँ हैं। जब विष्णु राम का अवतार लेते हैं तो देवी, सीता का रूप लेती हैं। जब परशुराम का रूप लेते हैं तो शी बिकमस् रेणुका, यानि उनकी माता। विष्णु का एक फिक्स्ड रोल नहीं होता — ये देवियों की ज़रूरत के हिसाब से बदलता रहता है। तो अगर देवी ने द्रौपदी का रूप लिया है तो वे कृष्ण बन जाते हैं। उनके दोस्त और उस हिसाब से हैल्प करते हैं। जैसे ही देवी राधा बनती हैं, तो कृष्ण बन जाते हैं उनके प्रेमी।

ब्रह्मा का रिलेशनशिप है कि देवी मुझे क्या दे सकती हैं। वे हमेशा उन्हें वश में करना चाहते हैं, अपने फ़ायदे, भोग के लिए उन्हें बदलना चाहते हैं, इसलिए उनकी पूजा नहीं होती। शिव को यह सब भोग नहीं चाहिए मगर देवी कहती हैं उन्हें, कि प्लीज़ भोग लीजिए, लाइफ़ में पार्टिसिपेट कीजिए। विष्णु के साथ, वे धर्म की संस्था होती हैं जहाँ पे दोनों ही लाभांवित होते हैं। जहाँ विष्णु भोग देते हैं और भोग लेते भी हैं। और दोनों ही योग भी दिखाते हैं। अनोखी बात यह है कि विष्णु को पुरुषोत्तम यानि सर्वोच्च पुरुष भी कहते हैं। पर उनका रूप हमेशा औरत-समान, फ़ेमिनिन है। जैसे कह रहे हों कि सर्वोच्च पुरुष स्त्रीनुमा है!

मैंने एक कहानी सुनी है जहाँ पे शिव, ब्रह्मा का सर काट देते हैं। तो यह कैसे पॉसिबल है कि एक भगवान दूसरे भगवान का सर काट दे?

पौराणिक कथा को कभी भी लिटरली, सीधा-सीधा नहीं लेते। वहाँ हमेशा रूपक होते हैं। आइडियाज़ समझने चाहिए, जैसे भगवान के तीन सर होते हैं। अब रियल लाइफ़ में ऐसा तो नहीं होता है — पाँच हाथ, तीन सर, दस हाथ। पुराणों में ब्रह्मा के पाँच सर होते हैं। तो कहते हैं कि ब्रह्मा ने जब सृष्टि को देखा तो वह स्त्री के रूप में थीं और

वह इतने मोहित हो गए थे कि उनका दूसरा सर, तीसरा सर, चौथा सर, और पाँचवाँ असर निकल आया उनकी सुंदरता को देखने के लिए। पाँचवाँ सर घमंड का प्रतीक है। घमंड हो गया था उनको कि उन्होंने सृष्टि का निर्माण किया है। सभी देवी-देवता और जीव-जन्तु उन्हें देख के घबरा गये। ये हमारे पिता हैं, क्रिएटर हैं, यह ऐसा क्यों कर रहे हैं, और सभी देवी देवता रोने लगे। उनके रूदन से रूद्र आते हैं, शिव का भयंकर स्वरूप आता है। वे ब्रह्मा का पाँचवाँ सर काट देते हैं। इसलिए शिव को कपालिका कहते हैं — वो जिनके हाथ में कपाल, सर होता है। यह अनोखी बात है कि ब्रह्मा, विष्णु की नाभी में कमल में बैठते हैं और उनका पाँचवा सर शिव के हाथ में है।

**त्रिमूर्ति की कहानी से हमें मार्टन लाइफ़ में क्या सीख मिलती है?**

हमारी जिंदगी में भी हम बनाते हैं, चीज़ों को सम्भालते हैं, और खत्म करते हैं। जैसे पैसे को हम क्रिएट करते हैं, सम्भालते हैं और डिस्ट्रोए भी करते हैं। ब्रह्मा क्रिएट्स, विष्णु इनवैस्ट्स ताकि बाज़ार चलें, शिव वो हैं जो पैसे में इंटरस्ट नहीं रखते, वैराग्य मार्ग है उनका। दूसरी ओर ब्रह्मा के बच्चों को पैसे में इतना इंटरस्ट है कि वे पैसे नहीं देते किसी को और उस पर लड़ते हैं, तो कोई उनकी पूजा नहीं करते। लेकिन जो पैसे को इनवैस्ट करके मार्केट में भेजते हैं वह विष्णु हैं। जो वर्ल्ड के साथ व्यापार बाज़ार है, पैक्सचेंज है, वह उनके साथ इनवोल्व्ड हैं — तो हम विष्णु की पूजा करते हैं। जब हम बूढ़े हो जाएँ, जब हमारा कार्य समाप्त हो जाए और हममें वैराग्य भाव आ जाए, तो शिव के जैसे हम पैसे को त्याग सकते हैं। तीनों गुण हमारे भीतर हैं — ज्यादातर ब्रह्मा है, पर इनकी पूजा नहीं करनी चाहिए। विष्णु की करनी चाहिए ताकि अन्त में शिव की तरह भौतिकता को त्याग कर आगे बढ़ सकें।



4

## रंग

हम अपने कल्चर में देखें तो कलर, रंग हमें सब जगह दिखता है। मंदिरों में जाएँ, देवी देवताओं को जो कपड़े हम पहनाते हैं, वो बहुत कलरफुल होते हैं। उनके जो स्किन का रंग होता है, वो भी बहुत प्रॉमिनेन्टर होता है। इसकी हिस्ट्री क्या है? कलर हमारे लिए बहुत महत्व रखता है। ऐसा क्यों है हमारे कल्चर में?

अगर आप यूरोप जाएं तो सब जगह आपको ग्रे दिखाई देगा — ग्रे बिल्डिंगज़, दे वियर व्हाइट क्लोदस, वे सफ़ेद कपड़े पहनते हैं, ब्लैक या व्हाइट रंग ज्यादा यूज़ नहीं होता है। इंडिया में रंग गृहस्थ जीवन के साथ जुड़ा हुआ है। भारत में दो परम्पराएँ निकलीं — एक होती थी वैराग्य की परम्परा जिसमें हमेशा गेरूए वस्त्र पहनते थे और दूसरी थी गृहस्थ परम्परा — सांसारिक जीवन की, जहाँ रंगों को बहुत महत्व दिया जाता था। तो जो सन्यासी होता था वो बहुत ही सिम्पल कपड़े पहनता था। जो गृहस्थ है, शादी-शुदा है, जिसके बच्चे हैं वहाँ रंग की बहुत इम्पोर्टेन्स है। रंग का मतलब होता था कि वहाँ खुशहाली है, समृद्धि है। शायद हम बोल सकते हैं कि जो इन्द्रधनुष हमने देखा तो हमने कहा वहाँ देवता रहते हैं। तो रंग वहाँ से आते हैं। शायद इसलिए हमने रंग को बहुत इम्पोर्टेन्स दी है। भगवान विष्णु को कहते हैं कि वो रंगनाथ हैं। या वैकुण्ठ को कहेंगे कि वो रंगभूमि है। दुनिया को कहते हैं कि वो रंगभूमि है। जो बेसिकली रंगमंच है, स्टेज है। लाइफ़ इज़ अ स्टेज, ज़िंदगी रंगमंच है जहाँ भगवान की लीला चल रही है। यहाँ पर रंग बिकम्स वेरी इम्पोर्टेन्ट। इनजॉयमेंट का भी एक रंग होता है। जैसे फूड के फ़्लेवर्ज़ होते हैं अलग-अलग, वैसे ही रंग का एक स्पेक्ट्रम होता है। पूरे इन्द्रधनुष का स्पेक्ट्रम, वर्ण-पट।

लेकिन इसका एक प्रैक्टिकल रीज़न भी है। भारत अपनी टेक्स्टाइल इंडस्ट्री के लिए, यानी कपड़ों के व्यापार के लिए बहुत ही फेमस होता था पुरातन काल से। लेकिन ब्रिटिश आए और उन्होंने इसको तोड़ दिया, डिस्ट्रॉय कर दिया। इसलिए खादी को इतनी इम्पोर्टेन्स दी गई है। क्योंकि हमारे यहाँ कपड़े हम बनाते थे और स्पेशल यह था कि हमारे पास एक रहस्य था जो और कहीं दुनिया में नहीं था। वो था रंग के जोड़ने का। हम इसे फिक्सर कहते हैं — जब आप रंग लगाते हो कपड़े पर, जिससे रंग जुड़ता है कपड़े पर, वो केवल भारत में होता था और कहीं नहीं। यूरोप के देशों में भी नहीं। तो हमारी ये खूबी है, इंडिया की ये खूबी है, कि रंग-बिरंगे कपड़े देते थे दुनिया को और अगर दुनिया को देते हैं तो देवी-देवताओं को भी देंगे। और इसलिए कहीं पे भी जाओ, इवन साऊथ ईस्ट एशिया में, रशिया में भी जाओ, तो वहाँ हमेशा कहेंगे कि हमें इंडियन टैक्सटाइल चाहिए। तो इंडियन टैक्सटायल्स सोने की तरह हैं।

इंडिया को, हमें, सोना चाहिए था और हम टैक्सटाइल्स बेचते थे। तो पूरा जो व्यापार होता था, बिफोर ब्रिटिश, तो वहाँ पे कपड़ों का व्यापार और उसमें भी रंगीन कपड़ों का व्यापार बहुत ही महत्वपूर्ण होता था। और शायद यही कारण है कि पुरातन काल में, पौराणिक कहानियों में, देवी-देवताओं की कहानियों में हम रंग को बहुत महत्व देते हैं। तो एक फ़िलोसोफ़िकल रीज़न है और एक प्रैक्टिकल रीज़न है।

हमारे कल्चर में व्हाइट और फेयर स्किन को बहुत इंपॉर्टेन्स देते हैं। हमारे मार्किट में भी कई प्रोडक्ट्स हैं लड़कों के लिए, लड़कियों के लिए जिससे गोरापन आ जाता है। लेकिन दूसरी ओर हम कृष्ण को पूजते हैं। उनको मानते हैं। उनका रंग तो डार्क है। तो क्या कृष्ण ऐक्चुली डार्क थे क्या उनका रंग ब्लू था, और उसका महत्व क्या है? उनके काले रंग को हम क्यों इतना इंपॉर्टेन्स देते हैं?

यह फेयर और डार्क की कहानी हर एंग्रीकल्चरल कम्युनिटी, कृषि-प्रधान समाज, में होती है। चाइना में भी ब्लैक-व्हाइट का बहुत बड़ा डिवाइड होता है। क्योंकि यह माना जाता है कि जो अमीर हैं वो घर के बाहर नहीं जाते तो उनको सनबर्न नहीं होता इसलिए उनका कौम्प्लेक्शन व्हाइट होता है। और जो फील्ड में, खेतों में काम करते हैं, वो डार्क होते हैं। रंग से आपको क्लास पता चल जाती है। एक शब्द है, असूर्यस्पर्शा, फोर अ ब्यूटीफुल गर्ल, एक लड़की जिसने कभी सूर्य नहीं देखा हो। मतलब हर स्किन वुड बी वेरी लाइट, उसकी त्वचा हल्के रंग की होगी। तो यह डिवाइड एंग्रीकल्चरल कम्युनिटी में होता है, केवल भारत में ही नहीं। दूसरी बात है, इंडिया में नार्थ से कई इन्वेडर्स, आक्रमणकारी आए थे, जो बहुत ताकतवर थे और गोरे रंग के थे। तो गोरा रंग हम पावर से एसोसिएट करते हैं या अमीरी से करते हैं।

पुराणों से इनका कोई ताल्लुक नहीं है। पुराणों में तो यह एक आध्यात्मिक विषय है। और यहाँ गोरे और काले का बहुत ही अलग मतलब होता है। भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे खुशनुमा समय क्या होता है? बारिश का मौसम और उसके ठीक पहले जब बारिश के बादल आते हैं। लोग बहुत ऐक्साइटिड हो जाते हैं। हमारे खेतीहर ऐक्साइटिड हो जाते हैं। और वो डार्क क्लाउड्स, घने-काले बादल घनश्याम हैं — तो वो जो खुशी आती है, वो सुख आता है, उसको हमने कृष्ण के साथ जोड़ा है। उनका डार्क कौम्प्लेक्शन, डार्क, गहरे रंग की भूमि से, इमली के गहरे जंगलों से जुड़ा होता है — जो उपजाऊ होने का प्रतीक होता है।

काले के साथ हमेशा सफ़ेद को जोड़ा जाता है। जैसे शिव हिमालय में रहते हैं और हिमालय श्वेत है, सफ़ेद है। तो शिव को कहा गया है कर्पूरगौर, कैफ़र, कपूर के जैसा व्हाइट कलर है उनका। तो अगर कृष्ण काले हैं तो शिव गोरे हैं। विष्णु काले होंगे तो शिव गोरे। कौंट्रास्ट हमेशा रहेगा।

आप पूछ सकते हैं कि शिव का रंग काला क्यों नहीं है जैसे कई फोटो में दिखते हैं? तो जब भी आर्ट में पर्पल या बैंगनी कलर दिखाते हैं, उसका मतलब है भभूत का रंग, राख का रंग। क्योंकि शिव वैरागी हैं, तो राख में लिप्त हैं। लेकिन अगर पोंट्ररी में देखें या लिटरेचर में देखें तो उनको कर्पूरगौर बताया गया है। विष्णु डार्क हैं, शिव व्हाइट हैं, बलराम व्हाइट हैं कृष्ण ब्लैक हैं। गौरी सफ़ेद रंग की हैं और काली देवी ब्लैक रंग की हैं। यमुना जो नदी है वो ब्लैक रंग की है, कालिंदी जिसको कहेंगे और

गंगा व्हाइट कलर की होगी। यह विरोध बार-बार आता है यह दिखाने के लिए कि ये एक दूसरे के पर्याय हैं। जैसे बौल कथा, बंगाल में जो कथा होती है। जब शिव पार्वती के साथ होते हैं, तब पार्वती ने काली का रूप धारण किया होता है और शिव श्वेत रंग के होते हैं। कुछ समय बाद काली कहती हैं, 'मैं एक नया रूप लूँगी। मैं कृष्ण बन जाऊँगी' और शिव कहते हैं, 'मैं राधा बन जाता हूँ और मैं श्वेत रंग लेके आऊँगा।' अचानक लिंग भी चेंज हो गया, लेकिन रंग वही रहा।

निवृत्ति मार्ग और प्रवृत्ति मार्ग दो मार्ग होते हैं पौराणिक कथाओं में। निवृत्ति मार्ग है जो दुनिया से वैराग्य का है। और गृहस्थ जीवन को, जग में लीन जीवन प्रवृत्ति मार्ग कहेंगे। कृष्ण प्रवृत्ति मार्ग के हैं और शिव निवृत्ति मार्ग के हैं। फिज़िक्स, भौतिक विज्ञान की दृष्टि से कह सकते हैं — काला रोशनी सोख लेता है और सफ़ेद उसे प्रतिबिंबित करता है — यहाँ फिर वही उलटपन है। रंग एक रूपक है। जिसके माध्यम से वो यह फिलोसोफी दिखाना चाहते हैं। दोनों देवता एक दूसरे को कौप्लीमेंट कर रहे हैं।

**कृष्ण की जो पेंटिंग्स हैं उसमें भी वो ब्लू रंग में दिखते हैं। इसका क्या अर्थ है?**

जैसे शिव का कलर पर्पल दिखाने के लिए, राख दिखाने के लिए, जब पेंट कर रहे थे, ब्लैक कलर की जगह वे इंडिगो रंग करते हैं, जिसे नील कहते हैं। इंडिगो को अगर पेपर पे डालें तो वो ब्लैक दिखता है। लेकिन अगर थोड़ा लाइट कर दो, तो वह ब्लू हो जाता है। धीरे-धीरे हमने कृष्ण को ब्लू करना शुरू कर दिया क्योंकि हमें प्राकृतिक काले रंग से ज्यादा अप्राकृतिक नीला पसंद है। हम इसकी वजह ये देते हैं कि वे आकाश के रंग के, या व्योम के रंग के हैं; इसे ब्लू ब्लैक कहेंगे, पर पूरा ब्लैक नहीं! वहाँ पे ये रंग का भेदभाव तो है ही। वो तो पता नहीं कब जाएगा।

**हमको पता है लक्ष्मी और दुर्गा चटक लाल साड़ियाँ पहनती हैं परंतु जो सरस्वती हैं वो हमेशा व्हाइट पहनती हैं। इनके पीछे कोई कहानी है जो आप बता सकते हैं?**

रंगों के पीछे हमेशा एक कहानी होती है। एक आईडिया होता है, जो इस फिलोसोफी के बारे में बताती है। सरस्वती हमेशा ज्ञान के साथ, सादगी के साथ जुड़ी होती है। जिस रंग के ऊपर कभी डाई नहीं होता।

कभी-कभी सरस्वती को पीला कपड़ा भी पहनाते हैं, बसंत ऋतु में जब उनकी पूजा होती है। यह इसलिए क्योंकि बसंत में जो सरसों के फूल होते हैं, वे पीले कलर के होते हैं। लक्ष्मी का रंग हमेशा अर्थ, भूमि के साथ जोड़ा जाता है। और बारिश के पहले अगर आप खेतों की मिट्टी देखें तो वह लाल रंग की होती है क्योंकि उसे जोता जाता है। और बारिश के बाद वो हरा हो जाता है। इसका मतलब पहले वे कुमारी हैं और उसके बाद वो माता हैं। तो कुमारी रूप में जो देवी होती है, वो दुर्गा माँ का कुमारी रूप है। तब लाल कपड़े होते हैं। जब वे माता बन जाती हैं, गौरी पूजन के समय — वे गणेश की माता हैं। बंबई में इस पूजा को बहुत मनाया जाता है। वहाँ हरे रंग की साड़ी पहनाते हैं। लाल रंग कुमारी के साथ, पावर के साथ जुड़ा है। लाल रंग रक्त का रंग है, शक्ति का रंग है। तो इन सब अलग-अलग रंगों से अलग-अलग आईडियाज़ आ रहे हैं, कहानी के माध्यम से, कपड़ों के माध्यम से, हमारे सबकॉशियस माईंड, अचेतन मन

से अलग-अलग पहलू आते हैं, और हमारे जीवन और सोच में घुल-मिल जाते हैं। अगर रंगों की बात हो रही है, तो ऐसा नहीं हो सकता कि हम होली की बात न करें। यह कैसे शुरू हुई?

उसकी एक कहानी है। कृष्ण जब बच्चे थे तो वे अपनी माता यशोदा के पास जाते हैं और कहते हैं कि उन्होंने उनको काला क्यों बनाया जबकि राधा गोरी थीं — ऐसा अन्याय क्यों? यशोदा हल्दी का पेस्ट उनके गाल पे लगा देती हैं और कहती हैं अब उनका रंग बदल गया है। कृष्ण उसके बाद राधा के लिए काला जामुन लाते हैं और उनको आँखें बंद करने को कहते हैं ताकि वे उन्हें जामुन खिला सकें लेकिन, शरारत करते हुए वो जामुन का रस उनके गाल पर लगा देते हैं और कहते हैं, अब वह भी काली हो गई।

एक और रंग है जो बहुत इंपॉर्टेंट है हमारे कलचर में। वह है सैफ़रन, जिसे हम केसरी कहते हैं। जो हमारे पंडित हैं वो भी केसरी पहनते हैं। हनुमान जी का कलर भी केसरी है और केसर हर शुभ कार्य में इस्तेमाल होती है। इसका क्या महत्व है?

केसरी को भगवा रंग भी कहते हैं और यह हमारे नैशनल फ़्लैग में है तो आजकल हिंदु धर्म को केसरी रंग से जोड़ा गया है। लेकिन अगर आप हिस्ट्री में देखें तो ऐसा नहीं था। हिन्दुत्व को ज्यादातर लाल रंग के साथ जोड़ा जाता था। उसे रक्त-चंदन कहते थे। अगर आप गणेश जी की मूर्ति या हनुमानजी की मूर्तियाँ वाराणसी में देखेंगे तो वे लाल हैं। वो धीरे-धीरे समय के साथ औरेंज की तरफ जा रहा है। इतिहासकार और कवि यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि यह सडनली औरेंज कहाँ से आया। ज्यादातर यह भगवा रंग मोजैस्टिक आर्डर से जुड़ा हुआ है। लेकिन हिंदु धर्म की जो परम्परा है, मैं दोहराऊँगा — उसमें एक वैरागियों की दुनिया होती है और एक गृहस्थों की दुनिया होती है। और वैरागी भगवा रंग पहनता है लेकिन जो गृहस्थ होते हैं, वो हर रंग का कपड़ा पहनते हैं और उसमें लाल रंग बहुत महत्वपूर्ण होता है, पीला, नीला, सफ़ेद भी। तो अचानक सैफ़रन की इंपॉटेंस कैसे बढ़ी? शायद इसलिए क्योंकि जो सन्यासियों और महंतों की दुनिया है वो बहुत शक्तिशाली बन गयी पिछले 1000 सालों में। हम ये भी मानने लगे हैं कि वे ही हमारे गुरु हैं, जबकि ऐसा नहीं है। हमारी परम्परा में शादी-शुदा गुरु भी हैं, संन्यासी भी हैं, हर प्रकार के गुरु हैं, स्त्री गुरु हैं, पुरुष गुरु हैं, हर जाति के गुरु हैं। लेकिन कहीं न कहीं सन्यास के साथ हिन्दुत्व जुड़ने लगा। शायद बौद्ध धर्म से त्याग जुड़ने लगा। इनके गेरूआ वस्त्रों को महत्व दिया गया। गेरूआ वस्त्र धीरे-धीरे भगवा हो गया। भगवा रंग, केसरी रंग का हो गया।

केसरी रंग टाइगर, बाघ का रंग भी है। टाइगर इज़ एसोसिएटिड विद पावर। जब फ्रीडम स्ट्रगल शुरू हुआ था तब लोकमान्य तिलक ने केसरी रंग को बहुत महत्व दिया। केसरी का मतलब भी है, टाइगर और ये बल और पौरुष से जुड़ा है। तो यह मैसक्यूलिनिटी, पुरुषत्व से जुड़ा है, वैराग्य से जुड़ा है। एक और कारण हो सकता है : हल्दी और कुमकुम, ये पूजा में बहुत इस्तेमाल होते हैं, अगर आप हल्दी और कुमकुम को मिलाते हैं तो औरेंज कलर निकलता है। शायद लाल रंग बहुत स्ट्रांग था उसको माइल्ड करने के लिए आप हल्दी मिलाते हैं और उससे केसरी रंग निकला।

ज्यादातर, केसरी रंग, ब्रह्मचारी देवता पहनते हैं जैसे हनुमान। पर कृष्ण कभी नहीं पहनेंगे। कृष्ण हमेशा पीताम्बर या पीला रंग पहनेंगे। तो यह भगवा रंग हमेशा वैराग्य या ब्रह्मचर्य से ज्यादा जुड़ा हुआ है। और यह मॉडर्न ज़माने में यह हिन्दुत्व से भी जुड़ गया है।

काला रंग हमारे कल्चर में अशुभ माना जाता है। लेकिन साउथ में अयप्पा के भक्त काला पहनते हैं और हम काली देवी की पूजा भी करते हैं।

हिंदु धर्म में कोई भी चीज फिक्सड नहीं होती। हमेशा बदलाव आते-जाते हैं, हिस्ट्री से चीजें बदलती हैं, ज्योग्राफी से बदलती हैं जो नॉर्थ में होता है वो साउथ में नहीं होता, जो ईस्ट में होता है, वो वेस्ट में नहीं होता। तो जब हम कहेंगे कि हमारे धर्म में यह रंग अशुभ है, तो वो केवल एक प्रांत में होगा या एक संप्रदाय में होगा। भारत बहुत बड़ा देश है और हिंदु धर्म बहुत ही विशाल है। ज्ञान न होने के कारण लगता है मेरे घर में या बगल में जो हो रहा है, वो पूरे भारत में हो रहा है। ऐसा नहीं है।

अब जैसे काले रंग के लिए हमने कहा है, कि प्रोब्लम है क्योंकि काला रंग जादू-टोने से जुड़ा है। लेकिन काला रंग पूजा में भी इस्तेमाल होता है। ऐसी खास पूजा है जहाँ काला रंग इस्तेमाल होता है, जैसे अगर किसी की आकस्मिक मृत्यु हो जाय तो काला रंग इस्तेमाल करेंगे। अगर आपको अगम लिटरेचर के बारे में पता है तो यह शुभ-अशुभ जगह के साथ बदल जाता है। और अगर आप देखें तो अयप्पा संप्रदाय के लोग जो केरल में रहते हैं वे काला रंग पहनते हैं। अगर इसका कारण ढूँढ़ेंगे तो भी आसानी से नहीं मिलेगा। आप केवल अंदाज़ा लगा सकते हैं। क्योंकि केरल में मुस्लिम बहुत हैं। हिंदु भी बहुत हैं। तो जो हज जाते थे वे सफ़ेद रंग पहनते थे तो शायद अयप्पा लोगों ने कहा कि वे सफ़ेद नहीं काला रंग पहनेंगे। दूसरा कारण यह हो सकता है कि अयप्पा के मंदिरों में केवल ब्राह्मण ही नहीं, हर जाति के लोग जाते थे। ब्राह्मण सफ़ेद पहनते थे तो भक्तों ने कहा कि हम काला पहनेंगे।

कोई रंग शुभ या अशुभ नहीं होता। वो स्थितियों के हिसाब से बदल जाता है। जैसे आयुर्वेद में कहेंगे कि कोई दोष अच्छा या बुरा नहीं होता। उसके अनुपात में गड़बड़ी हो सकती है। हिन्दु धर्म में भी कुछ अच्छा या बुरा नहीं है। नहीं तो हमें अपने बाल सफ़ेद करवाने पड़ेंगे। गीत गोविन्द में एक फेमस लाइन है जहाँ राधा कृष्ण के ऊपर गुस्सा हैं और कहती हैं, 'मुझे काला देखना भी नहीं।' वे अपने बाल और भवों को सफ़ेद डाई करना चाहती हैं और रात को घर से बाहर नहीं जाना चाहतीं। उनकी जो सखी होती है वो बोलती है, 'अच्छा तो अगर आँख बंद करोगी तो काला रंग ही दिखेगा। तो काले से कहाँ भाग के जाओगी?'



5

## शिव

शिव त्रिमूर्ति के अभिन्न अंग हैं। उनका जो रूप है वह भड़कीला है। आप शिव के इतिहास के बारे में क्या बता सकते हैं?

शिव का इतिहास बहुत पुराना है। वेदों में भी उनका ज़िक्र है और इंदर, सूर्य, अग्नि, वायु का जिक्र है। लेकिन शिव, विष्णु का नाम ज्यादा नहीं आता है वेदों में। शिव का नाम आता है और उनका जो पुराना नाम है रूद्र वह आता है। बहुत सारे स्तोत्र हिम्सू है। रूद्र के जैसे रूद्र स्तुति या रूद्र स्त्रोत और वहाँ ऐसा लगता है कि कवि भय से रूद्र के बारे में लिख रहा है। उन्हें वनस्पतियों से जोड़ा हुआ है। पशुओं से जोड़ा हुआ है। कहते हैं कि इंडस वैली सिविलाइजेशन, सिंधु घाटी सभ्यता, में भी शायद शिव की पूजा होती थी क्योंकि वहाँ की मोहरों में योगी बैठे हुए दिखाया गया है त्रिशूल के साथ। वेदों में रूद्र का नाम आता है लेकिन शिव या शक्ति का जैसे शब्द हैं, वैसा नहीं है। उनका संदर्भ वनस्पति के साथ, जंगल के साथ, जड़ी-बूटियों और रात के साथ डर या विस्मय के संग आता है — जैसे कि उनका नाम नहीं ले सकते। ऐतरेय ब्राह्मण भी कहते हैं कि इनका नाम भी नहीं लेना चाहिए यज्ञ के शुरूआत में, लेकिन यज्ञ के पश्चात उनका नाम ले सकते हैं। वे बहुत पावरफुल देवता हैं लेकिन उनके बारे में कोई कहानी नहीं मिलती, सिवाय पुराणों के जो बौद्ध काल के बाद आए हैं।

ये जो कहानियाँ हैं, यहाँ शिव की शादी के ऊपर बहुत-सी कहानियाँ हैं। यह बात आश्चर्यचकित करने वाली है क्योंकि पौराणिक काल के पहले बुद्ध काल आया था और बुद्ध काल में वैराग्य का महत्व था। पौराणिक कहानियाँ — रामायण, महाभारत, शिव पुराण की कहानियाँ आई जहाँ पे गृहस्थ जीवन को ऊपर बहुत महत्व दिया गया। हम देखते हैं कि पौराणिक कथाओं में वेद के जो पात्र हैं वो नई भूमिका ले लेते हैं। गृहस्थ जीवन और वैराग्य जीवन के बीच क्लियर टेंशन है।

शिव के मंदिर बनने शुरू हुए 2000 साल पहले — जैसे कैलाश ऐलोरा में, ब्रीहदेश्वर मंदिर तनजावुर में। फिर 1000 साल पहले बहुत बड़े-बड़े शिव मंदिर बने जो ये दर्शाते हैं कि शिव एक बेहद चहेते देवता बन गए। शैव मठ शुरू हो जाता है। जो वैष्णव मठ और शाक्त मठ की बराबरी करते हैं। जैसे साउथ में अयैर और अयंगार का कैपिटेशन होता है वैसा ही शैव और वैष्णव का पूरे भारत में एक दूसरे की प्रतिस्पर्धा में रहते हैं। शिव का इंपोटेंस पिछले 2000 साल में बढ़ा है। तो इंडस वैली से शिव के बारे में उल्लेख शायद शुरू हुआ उसके बाद वेद में शायद कुछ शब्द आते हैं। आजकल जो हम उनकी फोटोज़ देखते हैं — भभूत लगाए हुए, हाथी या बाघ का चर्म पहने,

और साँप लपेटे हुए हैं — यह सब पुराणों के समय हुआ।

**कई कहानियों में शिव योगी हैं और कई स्टोरीज में वे गृहस्थ हैं। आप कह रहे हैं कि वो दोनों हैं लेकिन असली रूप क्या है उनका?**

इसे समझने के लिए हमें बौद्ध धर्म के ऊपर ध्यान देना पड़ेगा। कहानी इस प्रकार है कि जो सिद्धार्थ गौतम थे वे कपिलवस्तु के युवराज थे और शादीशुदा थे और उनका एक बच्चा था। सब कुछ था मगर वो खुश नहीं थे — उनको लगा कि बीमारी आने वाली है, बुढ़ापा आने वाला है। मृत्यु आने वाली है। तो जीवन में बहुत दुख है। वे दुख से मुक्ति चाहते थे तो उन्होंने सन्यास लिया, घर-बार सब छोड़ के उन्होंने तपस्या की। जिससे उनको समझ आया, इच्छा और काम दुख का कारण है।

लेकिन शिव पुराण में इसकी बिल्कुल ऑपोज़िट कहानी है। हिमालय पर्वत के ऊपर शिव, एक योगी रहते हैं जिन्हें देवी यानी गौंडेस आके कैलाश पर्वत से नीचे ले आती हैं और उनके साथ वे शादी करती हैं। तो जो सन्यासी था वह गृहस्थ बन जाता है। तो दोनों कहानियों में यह दोनों एक दूसरे से उलट चीजों हो रही हैं, और दोनों बहुत इंपोटेंट हैं।

तो बेसिकली यहाँ एक टेंशन है। वे योग या वैराग्य की तरफ जा रहे हैं और देवी उनको भोग की तरफ ले जा रही हैं। और शादी के बाद उनका रूप पूरा बदल जाता है। तो सडनली ही इज अ म्यूज़िशियन, वे वीणा पकड़ते हैं, हाथ में, और वीणापानी बन जाते हैं, वी नाचते हैं तो नटराज बन गए। रामायण, महाभारत में शिव-शक्ति की कहानी सुनाते हैं। जब हम तंत्र-शास्त्र के बारे में बात करते हैं, तो हमेशा ये कहानी बताएंगे कि पार्वती ने शिव से एक पूरुष पृच्छा और उन्होंने उत्तर दिया। अब स्टोरीटेलर, कहानीकार बन गए, स्कॉलर, ज्ञानी बन गए — इसके पहले तो वह बिल्कुल गंभीर थे। आँखें बंद थीं। वो किसी के साथ बातें नहीं करते थे। अब बातें करते हैं और बहस भी। देवी ने उनको दुनिया के साथ एंगेज कर दिया। शिव वह हैं जो दुनिया को त्याग चुके हैं और शंकर वो हैं जो दुनिया के हैं। तो ये दो फॉर्म निकल के आते हैं पुराणों में।

**विष्णु के कई अवतार हैं जैसे कि राम और कृष्ण लेकिन शिव के अवतार नहीं हैं रूप हैं, ऐसा क्यों?**

शिव के फॉर्मज हैं लेकिन वे थोड़े अलग प्रकार के हैं। शिव वैराग से संसार की तरफ आते हैं और विष्णु संसार में रह के भूलोक की तरफ आते हैं, और यहाँ पे वो जन्म और मृत्यु अनुभव करते हैं तब उसे अवतार कहा जाता है। वैकुण्ठ से वो ऊपर से नीचे आये तो अवतरण किया है।

शिव की स्टोरीज में उनका समय से, जन्म और मृत्यु से, कोई लेना-देना नहीं है। वे परे हैं इस सबसे और इसलिए उनके अलग-अलग रूप होते हैं। नॉर्थ इंडिया में फेमस जो रूप है वह है भोलेनाथ का रूप जिसको कुछ दुनियादारी समझ में नहीं आती। एक कहानी है जिसमें रावण उनके पास आता है और एक बहुत अच्छा गाना गाता है और शिव बहुत खुश होते हैं और उनसे पूछते हैं कि क्या चाहते हो। और रावण कहता है, 'मैं चाहता हूँ कि आपकी पत्नी मेरी पत्नी बन जाएँ।' शिव कहते हैं हाँ ठीक है, ले लो,

क्योंकि भोलेनाथ हैं। उनको समझ में नहीं आता कि पत्नी का मतलब क्या है। तो पार्वती जान जाती हैं कि उन्हें ही प्रोबलम हैडल करना पड़ेगा!

दूसरा रूप होता है भैरव रूप, बहुत ही गुस्से वाला। छोटी-छोटी बातों में इतना गुस्सा आ जाता है, उनके नाखून बढ़ जाते हैं, आँखें लाल हो जाती हैं, बहुत ही भयानक रूप होता है भैरव। भैरव रूप में उनके साथ कुत्ते होते हैं, भूत होते हैं। भय से आता है भैरव और वो भयंकर रूप धारण कर लेते हैं।

और एक रूप होता है आशुतोष यानी जिसे गुस्सा भी जल्दी आ जाता है और जल्दी ठंडा भी हो जाता है। अगर आप माफ़ी माँग लें, तो आसानी से क्षमा करेंगे आपको। एक और रूप है, अर्धनारीश्वर, जो आधा पुरुष और आधा स्त्री है। वे अपनी पत्नी से इतना प्यार करते हैं कि अपने शरीर का आधा भाग उनको दे देते हैं ताकि वे दोनों हमेशा संग रहें।

कुछ तस्वीरों में शिव को वैरागी दिखाते हैं पर उनके संग शक्ति और उनके बच्चे हैं, जो दिखाते हैं कि वे सन्यासी और गृहस्थ दोनों हैं। जैसे हमारे मूड्स अलग-अलग होते हैं, इमोशन अलग होते हैं, और हम सिचुएशन के हिसाब से बदलते हैं, तो भगवान के भी कई रूप होते हैं। लेकिन वे हैं योगी जिनको देवी ने भोगी बनाया दिया है।

**मंदिरों में राम की कृष्ण की और अन्य भगवानों की मूर्तियाँ होती हैं लेकिन शिव के मंदिरों में उनकी मूर्ति नहीं होती है। ऐसा क्यों है?**

वेद, मंत्रों द्वारा और यज्ञ के द्वारा कुछ बातें बताना चाहते थे। उपनिषदों ने वेदों से मीनिंग निकालने की कोशिश की। इससे वेदांत का जन्म हुआ यानी वेदों का अंत। उपनिषद् में आत्मा शब्द बहुत इंपोटेंट हो जाती है और पूछा जाता है, आत्मा का रूप क्या है? आत्मा तो निराकार है, और मुझे आत्मा की पूजा करनी है तो मैं कैसे करूँ? तो हमने उसको एक रूप दिया है, शिवलिंग का, मतलब वो आत्मा का एक रूप है। ये एक पहली है कि, जिसका कोई नहीं होता जो निर्गुण है, उसे आप कैसे सगुण बना रहे हो — इसलिए शिवलिंग शिव मंदिरों में स्थापित करते हैं।

**ये कहानी बताइए जिसमें गंगा शिव की जटाओं से बहती है?**

गंगा को देखें तो नदी है, जो अस्थिर है। शिव पहाड़ के ऊपर बैठते हैं। स्थिर पहाड़ आत्मा है और नदी प्रकृति। ये दोनों उलट हैं। तो आत्मा और प्रकृति के बीच की बात-चीत, शिव और शक्ति का संवाद है जो स्थिर है।

कहानी ये है कि एक राजा है सागर, जिनके सब बेटे मर गए हैं। और वे सोच रहे हैं कि मेरे बेटों का पुनर्जन्म होगा या नहीं। कपिला मुनि, भगीरथ, सागर के पोते को बताते हैं कि अगर स्वर्ग से गंगा भूलोक पे आ जाए और उस नदी में आप अपने पिता और चाचाओं की राख विसर्जित कर दो, तो उनका पुनर्जन्म जरूर होगा। तो भगीरथ नाम का जो युवक है, वह बहुत तपस्या करता है और इंद्र को प्रसन्न करता है और कहता है कि आप गंगा को बोलिए स्वर्गलोक से भूलोक आने के लिए। गंगा कहती हैं मैं आ जाऊँगी लेकिन मेरा जो फोर्स है, बहाव है, वह दुनिया को तहस-नहस कर सकता है। ब्रह्मा कहते हैं तुम शिव के पास जाओ जो स्थिर हैं, वे अस्थिर चीजों को पकड़ सकते हैं। शिव कहते हैं, 'मैं एक जगह बैठ जाऊँगा और गंगा मेरे सर के ऊपर गिर

सकती हैं।' गंगा हँसती हैं, 'अगर मैं किसी के सर के ऊपर गिरूंगी तो वह फट जाएगा।' शिव कहते हैं, 'देखते हैं।' गंगा उनके सिर के ऊपर गिरती हैं और जटाओं में फँस जाती हैं। उनकी ताकत कम हो जाती है और वे साधारण वेग से बहने लगती हैं।

जो पानी हैगिंग पॉट से शिवलिंग पे गिरता है मंदिरों में, वह गंगा को सिंबलाइज़ करता है। शिव जो हैं वो वैरागी हैं। वे दुनियादारी से परे हैं। लेकिन जब तक वो दुनिया में इन्टरस्ट नहीं लेंगे तब तक प्रॉब्लम सौल्व नहीं होगा हमारी दुनिया में। मतलब आत्मा को जागृत करना बहुत महत्वपूर्ण है। जैसे मैंने कहा कि शिव पुराण में देवी होती हैं शिव से शादी के लिए। तो शादी एक तरीका है उनको दुनिया के साथ एंगेज करने का। शिव बैठ के तप करते हैं, या भांग पीके बैठे रहते हैं, तो वे दुनियाँ से अनभिग्य हैं। तो उनको जगाने के लिए ये सब प्रयास हैं। शिव मंदिरों में भक्त ताली बजाते हैं ताकि वे उठ जाएँ और हमारी बात सुनें। शिवलिंग के चारों ओर जो योनि है वह देवी का रूप है। देवी उनको कस के पकड़ के रखती हैं ताकि वह भाग न जाएँ। उनकी पत्नी गौरी उनको पकड़ के रखती हैं, गंगा उन पर पानी फेंकती हैं और भक्त ताली बजाते हैं, ताकि वह उठें और उनकी बातें सुनें।

शिव का मंदिर कहीं भी हो सकता है — पेड़ों के नीचे, शमशान भूमि में। बड़ा मंदिर बनाने की आवश्यकता नहीं है, जैसे कृष्ण के मंदिर बड़े-बड़े, भव्य होते हैं। विष्णु के मंदिर, राम के मंदिर भव्य होते हैं। शिव की मूर्ति एक सिंपल पत्थर की होती है। एक साधारण शिवलिंग होता है और उसके ऊपर गंगा बह रही हैं और नीचे योनि के रूप में देवी हैं। यह काफ़ी है — आप वहाँ बेल का पत्ता फेंक सकते हो, कुत्ता भी वहाँ नाच सकता है। कुछ भी कर सकते हो। वे भोलेबाबा हैं, ज्यादा कुछ डिमांड नहीं करते। यहाँ पे हम कच्चा दूध भी चढ़ा सकते हैं। दूसरे मंदिरों की तरह नहीं जहाँ मक्खन चढ़ाना पड़ता है। आजकल वैसे कुछ लोगों ने इन सब चीज़ों का व्यवसाय बना लिया है। लेकिन शिव भोले हैं उनको सिंपल चीज़ें पसंद है, डायरेक्ट हैं। अगर गुस्सा आता है तो बहुत गुस्सा आता है और अगर शांत हैं तो एकदम शांत हो जाते हैं। भांग पीकर मस्त रहते हैं। बहुत ही अलग प्रकार के देवता हैं। वे देव या असुर में फर्क नहीं देखते हैं। वे सबको बहुत प्यार करते हैं। रावण उनका प्रिय भक्त है, राम भी और हनुमान भी। कोई तो कहते हैं हनुमान शिव के स्वरूप हैं।

**शिव अपनी तीसरी आँख कब इस्तेमाल करते हैं?**

यह फेमस वाक्या है, जब पार्वती जाती हैं शिव के पास और चाहती हैं कि शिव उनकी तरफ़ देखें लेकिन शिव ध्यान में हैं और उन्हें फ़र्क नहीं पड़ता। वे एक हिला देने वाले वाक्ये से गुज़रे हैं: सती, उनकी पत्नी ने आत्मदाह कर लिया है। गुस्से में शिव ने दक्ष का यज्ञ बरबाद कर दिया और फिर दुनिया से अपने आप को अलग कर लिया, अपनी गुफ़ा में। पार्वती उन्हें अपनी ओर खींचती हैं पर वे नहीं हिलते। इंद्र सोचते हैं कि वे बीच में आयेंगे और चीज़ों को मज़ेदार बना देंगे। वे कामदेव के पास जाते हैं जो इच्छाओं के देव हैं, और कहते हैं आप शिवजी की तरफ़ एक बाण चला दो। काम देव बसंत ऋतु के साथ आते हैं, अप्सराओं के साथ भी और कैलाश पर्वत की ओर एक तीर चलाते हैं।

शिव अपनी आँख बंद रखते हैं, लेकिन अपनी तीसरी आँख खोल लेते हैं और काम

को भस्म कर देते हैं और वह राख अपने ऊपर लगा लेते हैं। तो यह उनका बहुत भयानक रूप होता है। थर्ड आई, तीसरी आँख का मतलब है आप अपनी डिज़ायर को, इच्छाओं को, डिस्ट्राँय करते हो, क्योंकि दुनिया डिज़ायर से निकली है। इसलिए हम शिव को डिस्ट्रायर कहते हैं। उन्होंने दुनिया को डिस्ट्राँय नहीं किया है, उन्होंने काम को डिस्ट्राँय किया है।

लेकिन शाक्त परम्परा में दूसरी कहानी है जो कहती है कि शिव की तीसरी आँख देवी की वजह से आई। क्योंकि जब पार्वती उनके सामने आई उन्होंने कहा कि इतनी सुंदर स्त्री है और उनके सौंदर्य को दो आँखों से ही कैसे देखेंगे। इसलिए तीसरी आँख आ गई ताकि वे उनका पूरा अनुभव कर सकें।

पहली स्टोरी संस्कृत में पुराण से आती है और दूसरी मौखिक है। बंगाल के बॉल लोग शिव की तीसरी आँख देते हैं, जो असल में एक शस्त्र है, और एक रोमैन्टिक नज़रिया देते हैं इस शाक्त परम्परा की कहानी से।



6

## जीव और जन्तु

ब्रह्माण्ड में कई प्रकार के जीव-जन्तु हैं। मनुष्य हैं, देव हैं, असुर हैं, नाग हैं। ये सब कहाँ से आए हैं?

ये सब ब्रह्मा के पोते हैं। कहते हैं कि प्रकृति हमेशा से थी, लेकिन जो जीव, जन्तु हैं, ये सब ब्रह्मा से आये हैं। ब्रह्मा के कई मानस पुत्र थे। कुछ कहानियों में वे सप्तऋषि थे और कुछ कहानियों में वे दस प्रजापति थे। और फिर ब्रह्मा ने भी अपने दिमाग से एक स्त्री को जन्म दिया पर कुछ कहानियों में कहते हैं कि उन्होंने अपने शरीर से स्त्री को जन्म दिया और अपने दिमाग से ऋषियों को जन्म दिया। फिर इन ऋषियों को एक पत्नी दी, जिनसे अलग-अलग प्रकार के जीव-जन्तु पैदा हुए। जैसे कश्यप ऋषि की दो पत्नियाँ थीं, एक का नाम था दिति और दूसरी का अदिति, अदिति से आदित्य आए जिनको हम देव कहते हैं। और दिति से दैत्य आये जिनको हम असुर कहते हैं। कश्यप ऋषि की अन्य पत्नियाँ भी थीं। जैसे कि विनीता जिसने गरुड़ पक्षी को जन्म दिया और दूसरी पत्नी है कदरू जिसने नाग बच्चों को जन्म दिया और एक है सुरासा जिसने रेंगने वाले जानवरों को जन्म दिया। तो ये जानवर, पक्षी, यक्ष सब ब्रह्मा के पुत्र कश्यप के बच्चे हैं।

इस प्रकार वंश बनते हैं – पिता एक ही होता है। कश्यप मुनि और कई कहानियों में ब्रह्मा स्वयं, लेकिन अलग-अलग माताएँ होती हैं। इसलिये उनका चरित्र अलग होता है। क्योंकि देह माँ से आती है और दिमाग पिता से आता है।

**ब्रह्माण्ड के अलग-अलग जीव जन्तु की विशेषताएं क्या हैं?**

जो देव होते हैं, स्वर्ग में वो विलासपूर्ण जीवन जीते हैं, अमीरों की तरह। उनके पास सब सुख होता है, वे अप्सराओं का डांस देखते हैं। गन्धर्वों के गीत सुनते हैं और कुछ नहीं करते। अगर आप उनको यज्ञ के लिए बुलाओगे तो जब तक आप उनको भेंट न दो, वो तब तक नहीं आएंगे और जब आएंगे तो कुछ देकर जाएंगे।

असुरों के बारे में सोच अलग है। अगर आप देवताओं के दृष्टिकोण से देखें तो असुर उनके लिए एक श्रेष्ठ, खतरा होते हैं। उनके हिसाब से, वे जेलस, ईषालु होते हैं, जो देवताओं का धन चाहते हैं, उनके दुश्मन हैं। लेकिन उन असुरों के दृष्टिकोण से देखें तो वो कहेंगे कि देवताओं ने हमारा धन छीना है, और असुरों को दबाया गया है। राक्षस वो हैं जो दूसरों की चीजों को छीन लेता है, जैसे रावण ने कुबेर का राज्य छीना और राम से सीता छीनीं। यक्षाश आर एसोसियेटेड विद् होरडिंग, यानी यक्ष धन जमा करते रहते हैं और किसी को नहीं देते। उनको हमेशा छोटे कद का दिखाया

जाता है। विकृत होते हैं लेकिन उनके अलग-बगल हमेशा सुन्दर स्त्रियों होंगी जिन्होंने महँगे गहने पहने हुए होंगे – उन स्त्रियों को भी उन्होंने इकट्ठा किया है।

देवता को हमेशा हैन्डसम दिखाया जाएगा और असुरों को अगली, बदसूरत दिखाया जाएगा, राक्षस को पावरफुल दिखाया जाएगा और यक्षों को विकृत दिखाया जाएगा। सबसे सुन्दर गर्न्धव को दिखाया जाएगा, सुगन्ध से जन्म लिया है जिन्होंने। अप्सरायें भी बहुत सुन्दर होती हैं। अप्सरा का मतलब है पानी, तो वह वॉटर की तरह होती हैं, दैट्स देयर एसेंस, ये उनका मूल तत्व है। नागाज़ आर एसोसियेटेड विद फरटिलिटी और मेजिकल पावर्स होते हैं उनके पास। लोग सेक्सी होते हैं। डराते हैं और मोहते भी हैं। नागिन विष कन्या जैसी होती है। मतलब वह आपको अट्रैक्ट करेगी और अगर पकड़ लिया तो आपको मार भी सकती हैं।

**अगर देवता स्वर्ग से आते हैं तो असुर और राक्षस कहाँ से आते हैं?**

ब्रह्माण्ड एक मल्टीस्टोरीड बिल्डिंग, बहुमंजिला इमारत की तरह है। जो धरती के ऊपर है उसको लोक कहते हैं और जो धरती के नीचे है उसको तल कहते हैं। तो देव धरती के ऊपर लोक में रहते हैं, और असुर पाताल में, धरती के नीचे रहते हैं। पाताल शब्द पा-तालम से आता है, मतलब पैर के नीचे। कई लोग कहते हैं कि असुर, यक्ष, नागा, वेदों से नहीं आए हैं। ये नोनवेदिक ट्रैडिशन से आए हैं जैसे जातियों और जनजातियों से। हिन्दुइज्म में एक स्ट्रीम ऑफ थॉट, वेदों से आया है। असुर शब्द का इस्तेमाल वेदों में होता है, लेकिन वे भगवान के बराबर होते हैं। लेकिन पुराणों में असुर विलेन बन जाते हैं और उनको धरती के नीचे रहना पड़ता है। गीता में वे नर्क में रहते हैं। तो आप देखेंगे कि उनका स्टेट्स शिफ्ट होने लगता है। तो इसलिये देव, देवी, असुर, नागा, यक्ष से सब अलग-अलग पीरियड से और अलग-अलग कम्प्यूनिटी से आए और इनकी कहानियाँ पुराणों में सम्मिलित हो गई।

**अमृत मंथन की कहानी हमने सुनी है। इसका रहस्य बताइये?**

मरने का डर हर जीव-जन्तु को होता है लेकिन देवताओं के पास एक ऐसी चीज़ है जिससे वह मरते नहीं हैं, यानी वे अमर रहते हैं। तो वेदों से पुराणों तक यह कॉन्सेप्ट बहुत इम्पॉर्टेंट पाता है। एक सागर है जो दूध का सागर है, क्षीरसागर जिसको कहते हैं। मानते हैं कि अमृत उसी में छिपा हुआ है। लेकिन जो सबसे पुरानी कहानी है, अमृत मंथन की, वह अमृत के बारे में है ही नहीं। इस कहानी के हिसाब से क्षीरसागर में लक्ष्मी छिपी हुई थीं। एक बार ऋषि दुर्वासा आए और इन्द्र ने उनकी इन्सल्ट की उनको इग्नोर करके। दुर्वासा को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने इन्द्र को श्राप दिया कि उनकी सारी धन-दौलत चली जाएगी। वे अपना शरीर यानी लक भी गँवा देंगे और यह श्राप सत्य हो जाता है। लक्ष्मी स्वर्ग छोड़ के क्षीरसागर में छिप जाती हैं। देवता बहुत अपसेट, दुखी होते हैं और लक्ष्मी को वहाँ से निकालना चाहते हैं, लेकिन उनमें इतना पावर नहीं होता। वे असुरों की मदद लेते हैं। नार्मली कहानियों में देव और असुर हमेशा झगड़ा करते हैं, लेकिन इस बार वे मिलके मंथन करते हैं। ऐसा लग सकता है कि वह रस्साकशी कर रहे हैं जहाँ पे केवल एक पार्टी ही जीत सकती है, लेकिन मंथन में ऐसा नहीं होता। फोर्स और काउन्टर फोर्स रिज़ल्ट लाते हैं। क्योंकि जब एक खींचता है, दूसरा छोड़ देता है। मंथन में चर्निंग होता है यानि जैसे दूध से

मक्खन निकलता है, इसी प्रकार लक्ष्मी या अमृत भी निकल सकता है। लेकिन बहस करके कुछ नहीं मिल सकता। उसी प्रकार जब दो देश बहस करते हैं तो मक्खन नहीं निकलेगा, यानी लक्ष्मी नहीं आएगी।

यहाँ एक फिलोसोफी हैं। मंथन से कई चीजें और प्राणी निकलते हैं और सबका अपना महत्व है। जैसे हम सुनते हैं पुरुषार्थ में धर्म, अर्थ और काम होते हैं। धर्म के चिन्ह हैं हाथी और घोड़ा, अर्थ के चिन्ह हैं परिजात का पेड़, कामधेनु गाय और चिन्तामणी, काम के चिन्ह हैं, रोमांटिक मून लाइट, अप्सराएं और बारूनी। तो अमृत मंथन में यह सारी चीजें निकलीं जो सांसारिक जीवन – गृहस्थी के लिए चाहिए। इसलिए अमृत मंथन का उच्चारण शादियों में भी होता है ताकि घर में धर्म, अर्थ और काम हों। अमृत मंथन में मोक्ष की बात नहीं होती क्योंकि वह सन्यास के बारे में है। ये सिम्बल्स, चिन्ह गृहस्थ जीवन के बारे में हैं, जो देवों और असुरों के कॉऑपरेशन, तालमेल से आता है।

फाइनली अमृत निकलता है और जब अमृत निकलता है तो पाँयजन, जहर भी निकलता है। तो यह ये दिखाता है कि, आप नेचर से जब भी कुछ लेते हैं तो टॉक्सिन्स भी निकलते हैं। आईडिया यह है कि नेचर से सब कुछ मिलता है, लेकिन उसे केयर, ध्यान से हैंडल करना पड़ता है; इस एक कहानी से बहुत से आईडियास निकलते हैं।

**लोग नागों को क्यों पूजते हैं?**

नाग इज अ वेरी इंटरेस्टिंग कॉन्सेप्ट इन पुराणाज। नाग हमेशा लड़ते हैं गरुड़ से। नाग ज़मीन पर रेंगते हैं, जबकि गरुड़ आकाश में उड़ते हैं। यहाँ एक कॉन्फ्लिक्ट, विरोध दिखता है—किरचर जो ग्राउन्ड में रहते हैं, और जो किरचर स्काई में रहते हैं उनके बीच में। नाग हमेशा धरती के नीचे रहते हैं। जिसको कहते हैं रसातल, द लेन्ड ऑफ रसा, वहाँ मणि और खजाने होते हैं। नागलोक का रसातल हमेशा धन से जुड़ा होता है। महाभारत में उल्लुपी के पास नागमणि होती है जो सब कुछ ठीक कर सकती है। दिस लेन्ड इज ऑलसी एसोसियेटेड विद् फरटीलिटी। लोग यह मानते थे कि नागों के पास रीजुविनेटिंग पॉवरस हैं, जिससे वह अपना स्किन बदल सकते हैं और कभी बूढ़े नहीं होते। नाग की पूजा हम फरटीलीटी, उर्वरता के लिए करते हैं ताकि हमारे बच्चे हों, धन आए, अच्छी फसल हो। यह सब कुछ गृहस्थ जीवन से जुड़ा हुआ है।

**राक्षस, यक्ष और असुर क्या एक होते हैं?**

अगर आप कॉमिक्स में देखो तो सबको काला रंग दे देते हैं, परन्तु ये सब अलग-अलग हैं। असुर वो हैं जो देवताओं के साथ लड़ाई करते हैं। देवता स्वर्ग में रहते हैं और असुर पाताल में रहते हैं। राक्षस इन्सान के साथ लड़ाई करते हैं जैसे राम और रावण की लड़ाई, राम, मनुष्यों के राजा थे और रावण राक्षसों का। यह लड़ाई भू-लोक में होती है। राक्षस हमेशा जंगल में पाए जाते हैं, उन्हें हम बारबेरियन्स, जंगली कहते हैं। रामायण में कहते हैं कि रावण और कुबेर भाई थे। कुबेर यक्षों का राजा था और रावण राक्षसों का और दोनों विश्रवा के बच्चे थे। कश्यप की तरह विश्रवा भी ब्रह्मा के पुत्र थे। उनकी दो पत्नियाँ थीं। एक पत्नी से राक्षसों का जन्म हुआ और दूसरी पत्नी

से यक्षों का। जैसे देवासुर हमेशा लड़ाई करते रहते हैं, नाग और गरुड़ हमेशा लड़ाई करते हैं, उसी तरह राक्षस और यक्ष भी लड़ाई करते हैं। यक्षों ने जितना धन एकत्रित किया था, लंका में जमा करके रखा था, लेकिन राक्षसों ने यह धन छीन लिया और साउथ से नार्थ भेज दिया। अलंका या अलाका उत्तर में है कैलाश पर्वत यक्षों का घर है जबकि लंका राक्षसों का।

इसका कोई ज्योतिषी महत्व हो सकता है या पौराणिक भूगोल से कुछ संबंध। यह ये दर्शाता है कि हर फोर्स का काउन्टर फोर्स होता है जैसे देव-असुर, गरुड़-नागा, राक्षस-यक्ष, यह एक थीम बार-बार पुराणों में आती है। यह टेंशन इसलिये है ताकि बेलेन्स आए। बड़ी बात ये है कि अगर रस्साकशी हो तो फिर हिंसा होगी। लेकिन अगर मंथन है तो तालमेल होगा, उत्पादकता बढ़ेगी।

**राहु और केतु असुर हैं, फिर भी हम उनको पूजते हैं, ऐसा क्यों?**

एक कहानी है अमृतमंथन में कि एक असुर ने जब अमृत पिया था तब विष्णु ने उसका सर काट दिया था। तो जो सर है, वो राहु बनता है और जो बाँड़ी है वह केतु बनता है। राहु मिन्स डीमन ऑफ़ एकलिप्स, ग्रहण का राक्षस और केतु का मतलब है दिशाहीन धूमकेतु जो अशांत उर्जा है, तो हम इस नेगेटिव एनर्जी की पूजा क्यों करते हैं? यज्ञों में दोनों देवताओं और असुरों का आह्वान किया जाता है। यह नई सोच है कि देवता पूरे अच्छे हैं और असुर केवल खराब हैं। ट्रेडिशनली दोनों की पूजा करते हैं क्योंकि दोनों फोर्स और काउन्टर फोर्स हैं। अमृत मन्थन में, दुनिया में अलग प्रकार के फोर्सेस हैं, जो आपको अच्छे ना लगे लेकिन वे दुनिया के लिए आवयस्क हैं। पोज़िटिव फोर्सेस की वैल्यू नेगेटिव से ही बनती है। इसलिए हिन्दूइज़्म में दोनों की पूजा करते हैं।

शिव के मंदिर में रावण की भी मूर्ति रखी जाएगी भले ही वह राक्षस क्यों न हो। हम लोग सबकी पूजा कर सकते हैं चाहे वह असुर हों, राक्षस हों, नाग हों, यक्ष हों, पेड़ हों या पत्थर हों। इट्स अबाउट हाउ मच यू कैन हैंडिल, आपका दिल कितना बड़ा है? आइडिया यह है कि सबको इन्क्लूड करना है। हम शितला माँ की भी पूजा करते हैं जो स्मॉल-पॉक्स, चेचक से एसोसियेटेड है। जरी मरी की भी पूजा करते हैं जो कोलेरा से एसोसियेटेड है। हम उनको रेस्पेक्ट देते हैं। और हम कहते हैं कि हमारे घर मत आइये।

**अब हमें जय और विजय की कहानी बताइए जिनको श्राप दिया गया था कि वह पृथ्वी में जन्म लें।**

यह कहानी है चार ब्राह्मण मानस पुत्रों की जो एक बार विष्णु से मिलने जाते हैं लेकिन उनको गेट पे रोक दिया जाता है कि वे विष्णु से नहीं मिल सकते क्योंकि विष्णु सो रहे थे। उन मानस पुत्रों ने उन गेट कीपर्स को श्राप दिया कि उनको भूलोक में तीन बार जन्म लेना होगा, पहले असुर के रूप में, फिर राक्षस के रूप में और फ़ाइनली इन्सान के रूप में। वे गेटकीपर्स जिनका नाम जय और विजय था, विष्णु के पास जाते हैं और कहते हैं कि हमें श्रापमुक्त करें क्योंकि हम अपनी ड्रयूटी कर रहे थे। विष्णु कहते हैं कि वह ये नहीं कर सकते और उनको पृथ्वी पर जन्म लेना ही होगा लेकिन वे वादा करते हैं कि वे उनका साथ कभी नहीं छोड़ेंगे और भूलोक में उनकी मृत्यु हमेशा

विष्णु के अवतारों के हाथों ही होगी। रीबर्थ के कॉन्सैप्ट में आपके पुण्य या पाप कर्म के हिसाब से आप देव या असुर या यक्ष या कोई जीव-जन्तु या पिशाच बन सकते हैं। यह कहानी ये बताती है कि हम सब एक दूसरे से जुड़े हैं।

जिसको आप एक जानवर होने के कारण नीचा देखते हो इस जनम में, वो शायद पिछले जन्म में आपका भाई या माँ हो सकती है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' एक फ्रेमस फ्रेज़ है कि पूरी दुनिया एक फैमली, एक परिवार है। ये आजकल ट्रेवल शोज़ में काफ़ी इस्तेमाल होती है, पर इसमें है सबसे संग होने और सबके जुड़े होने का भाव।



7

## इंद्र

इंद्र को देवताओं का राजा मानते हैं। लेकिन जैसे हम त्रिमूर्ति की पूजा करते हैं वैसे हम इंद्र की पूजा नहीं करते। ऐसा क्यों?

हिंदू धर्म सनातन माना जाता है, लेकिन इतिहास के हिसाब से सिर्फ 4000 साल पुराना है, जब वेदों की रचना हुई। वेदों में इंद्र का वर्णन है। और अग्नि और सूर्य देव की तरह उनका भी आह्वान होता था। इंद्र शब्द इंद्रियों से आता है। तो कह सकते हैं इंद्र शरीर के देवता है।

पौराणिक कथाओं में, जो 2000 साल पहले आई, एक नया शब्द निकलता है— भगवान—जो आत्मा को कहते हैं।

देवताओं की दुनिया बाहरी दुनिया है। प्रकृति की दुनिया है, संस्कृति की दुनिया है। लेकिन भगवान की दुनिया आंतरिक है, दिमागी है। मन के बारे में, आत्मा के बारे में है। सनातन है। यहाँ एक बदलाव है, वैदिक परम्परा की बाहरी दुनिया से पौराणिक दुनिया की ओर जो आंतरिक है। तो इंद्र जो बाहरी दुनिया के देवता हैं, जिनको वेदों में इतनी महत्व दिया गया, वो पौराणिक काल में महत्वपूर्ण नहीं रहे। इसलिए उनके लिए मंदिर की रचना नहीं करी गयी। यज्ञ में आह्वान होते थे, लेकिन मंदिर नहीं बने।

इंद्र के बारे में ये भी कहा जाता है कि वो बहुत ही आरामदायक, विलासपूर्ण जीवन जीते थे। उनके पास सब कुछ था। फिर भी वो असुरों के साथ हमेशा झगड़ा क्यों करते थे?

इंद्र केवल हिंदुधर्म में ही नहीं, बौद्ध धर्म में भी है, और जैन परम्परा में भी है। वे विलासिता के देव हैं और जिस लोक में वो रहते हैं, इंद्र-लोक, उसे स्वर्ग कहते हैं। वहाँ एक बाग है जिसका नाम है नंदनकानन, वहाँ कल्पतरू है। वह एक ऐसा पेड़ है जिसके नीचे खड़े होकर आप जो भी माँग लो, मिल जायेगा। उनके पास गाय है, कामधेनु, वह भी इच्छाएं पूरी करती हैं। उनके पास एक रत्न है, चिंतामणि, उसे हाथ में पकड़ लो, इच्छा करो और वह इच्छा पूरी कर देगा। मतलब इंद्र के पास सब कुछ है, वे पूरे दिन अप्सराओं का नाच देखते हैं, गंधर्वों का गाना सुनते हैं – बेसिकली हैविंग ए पार्टी ऑल द टाइम, सारा समय उनका ऐश करने में बीतता है।

लेकिन असुर हमेशा स्वर्ग के ऊपर आक्रमण करते हैं। इससे यह पता चलता है कि एक राजा है जो अमीर है, जिसके पास धन, धान्य और संपत्ति सब कुछ है, लेकिन शान्ति नहीं है। वो हमेशा भोग चाहते हैं। भोग उसे इंद्रियों का सुख देता है। मटीरियल, भौतिक दुनिया का राजा है वह। लेकिन यह नहीं सोचता है कि अगर मेरे

पास धन है तो दूसरों के पास धन नहीं है। जिसको अंग्रेजी में हम कहते हैं, 'हैव एंड हैव नॉट', तो जिसके पास नहीं होता है वो तो जरूर आपके ऊपर आक्रमण करेंगे क्योंकि जो आपके पास है, वो उनके पास नहीं है। आपके पास भोग है उनके पास नहीं है। तो एक प्रकार का उन्हें दुख है। देव और असुर भाई हैं, सौतेले भाई – लेकिन वे ब्रह्मा के पुत्र हैं। देवता अमीर हैं और असुर गरीब हैं। एक के पास सब कुछ है, एक स्वर्ग में है और दूसरा एक पाताल में है। यह परिवार में झगड़े की तरह ही है जहाँ सब धन के बंटवारे पर लड़ते हैं। आप कह सकते हैं कि ये समझाया जा रहा है लोगों को, जब राजाओं के पास सब कुछ है, वे एक विलासपूर्ण, सुखमय जीवन बिता रहे हैं तो जो राजमहल के बाहर रहते हैं, वो आप जैसे सुख में नहीं हैं। आप अपने दरबार में जाकर नाच-गाना कर रहे हो लेकिन बाहर लोगों का दुख नहीं सुन रहे हो तो जरूर टेन्शन होगा ही। तो वो शायद इस बात को बताने के लिए, उसको कहानी के माध्यम से समझाने के लिए, उन्होंने देवासुर संग्राम की रचना की है।

**एक कहानी में कृष्ण वृन्दावन के लोगों को इंद्र के कोप से बचाते हैं, आपको नहीं लगता कि इंद्र ने इस कहानी में देवता होने के बावजूद अपनी शक्तियों का नाजायज फायदा उठाया है?**

यह भगवद् पुराण की कहानी है जो 2000 साल पहले लिखी गई। यह वह समय था जब देवताओं और भगवान के बीच में तनाव था। आज हम दोनों को भगवान कहते हैं लेकिन देवता और भगवान दो अलग शब्द हैं। वे जूनियर मैनेजर और सीनियर मैनेजर की तरह हैं। देवता या देव, जूनियर हैं और भगवान सीनियर। देवताओं का रिश्ता केवल बाहरी चीजों से होता है – जैसे सूर्य, चंद्रमा, तारे, इंदिरियाँ, शरीर, धन-दौलत। लेकिन भगवान का हमेशा मन, आत्मा से, जो आंतरिक है। कृष्ण अपने गोकुल वासियों को कहते हैं कि दूर वाले देवता की पूजा करने से कोई फायदा नहीं है। अपने अंदर वाले भगवान की पूजा करो। तो वो दूर की दुनिया से अंदर की तरफ आ रहे हैं। जिस वर्षा से इंद्र गाँववालों को सजा दे रहे हैं वो आये न आये। अगर वो बहुत ज्यादा है या वह बहुत कम है तो वह दुख का कारण बनती है। वर्षा, बदलते भावों का सूचक है। गोवर्धन पर्वत ठहराव का सूचक है, जैसे आत्मा। तो आंतरिक संसार, भौतिक संसार से महत्वपूर्ण हो जाता है। इंद्र पुराने देवता बन जाते हैं, भोग के, भौतिक दुनिया के। कहानियों के जरिये कृष्ण की ओर, भक्ति की ओर बदलाव है। इस बदलाव को 1000 साल लगे।

**यह भी कहानी है कि इंद्र अपनी सबसे खूबसूरत अप्सरा मेनका को ऋषि विश्वामित्र की तपस्या भंग करने के लिए भेजते हैं। उनको इतनी इंसिक्योरिटी, घबराहट किस बात की है? वे असुरों से लड़ते हैं, ऋषियों से डर जाते हैं...**

2000 सालों पहले पौराणिक कथाएँ लिखी गई थीं। तब उनमें एक विभाजन हुआ। एक तरह की कहानियाँ हैं स्वर्ग की, और दूसरी हैं वैकुण्ठ की जो विष्णु की दुनिया है। स्वर्ग और वैकुण्ठ में एक फ़र्क है। स्वर्ग में समृद्धि है लेकिन सुख नहीं है। वैकुण्ठ में दोनों चीजें हैं। समृद्धि भी है और सुख भी है। स्वर्ग में ज्यादातर भौतिक चीजों पर ध्यान दिया गया है – इंदिरियों के ऊपर, भोग के ऊपर – तो इंद्र उस दुनिया का राजा है जहाँ पर कुछ परमानेंट नहीं है। तो उसे हमेशा लगता है कि उसकी जो पोजिशन है, वो

परमानेन्ट नहीं है। कहते हैं कि 1000 यज्ञ करने के बाद आदमी इन्द्र बनता है तो उसे हमेशा लगता है कि कोई और आके उसके सिंहासन को छीन सकता है। तो ये कहानियाँ इस घबराहट की मानसिकता को दर्शाती हैं जो सफलता और धन से आती है। जितने भी दुनिया के सक्सेसफुल लोग हैं जैसे फिल्म इंडस्ट्री के लोग या इंडस्ट्रियलिस्ट, अगर आप उनको ठीक तरह से देखेंगे तो आपको उनकी इंसिक्योरिटी दिखाई देगी। उनकी जैलिसी, ईर्ष्या दिखाई देगी। मतलब आपको इन्द्रत्व दिखाई देगा क्योंकि आत्मज्ञान नहीं है। जब तक आत्मज्ञान नहीं होगा। तब तक सुख नहीं रहेगा। वो बताने के लिए यह कहानी लिखी गई है। इन्द्र के पास सब कुछ है – कल्पतरू, कामधेनु, चिंतामणी है और अप्सराएँ हैं, तो यह कहानी समझाती है कि ऐसी जिंदगी बहुत खोखली है। दूसरी ओर विष्णु वैकुण्ठ में आराम से लेटे हुए हैं और उनके साथ लक्ष्मी भी हैं – उनके पास आत्मज्ञान है। आपको दोनों की आवश्यकता है – लक्ष्मी की और सरस्वती की भी।

**यह जो नाम है नरेन्द्र, सुरेन्द्र, विरेन्द्र, इन नामों में इन्द्र शब्द का क्या मतलब है?**

पुराणों में इन्द्र संज्ञा है लेकिन इन्द्र का असली मतलब है लीडर, नेता। जैसे सुरेन्द्र देवों के लीडर हैं (सुर + इन्द्र) और नरेन्द्र लोगों का लीडर हैं (नर + इन्द्र)। धर्मेन्द्र, धर्म का लीडर है (धर्म + इन्द्र)। तो इन्द्र लीडरशिप और रॉयलटी से जुड़े हैं।

**असुरों और इन्द्र की युद्ध की कहानी सुनाइये?**

इन्द्र की असुरों के संग की लड़ाइयों की कहानियाँ एक जैसी होती हैं। अलग-अलग असुर हैं, जैसे अंधका है, या महिषा है, हिरण्यक्ष, हिरण्यकश्यपु है, पर कहानी एक सी होगी। जैसे हिन्दी फिल्मों की। एक असुर होगा जो तप करेगा और तप का वरदान मिलेगा उसे ब्रह्मा से और इस वरदान से वो स्वर्ग पे हमला करेगा। इन्द्र कमजोर होंगे क्योंकि वे विलासपूर्ण जीवन जी रहे हैं। उनमें कोई शक्ति नहीं है। उनके बीच लड़ाई होती है और इन्द्र हारते हैं। इन्द्र ब्रह्मा के पास जाते हैं और उनको उसे बचाने के लिए कहते हैं। ब्रह्मा उन्हें विष्णु, शिव या देवी के पास भेजते हैं। उनमें से एक उनकी मदद करते हैं और असुरों को हराते हैं और फिर वापिस इन्द्र स्वर्ग पहुँच जाते हैं। आप को लगेगा कि इसके साथ कहानी खत्म हो जायेगी। लेकिन ये कभी नहीं होगा। क्योंकि वापस एक असुर का जन्म होगा और यही कहानी दोबारा घटेगी।

हमारी कहानियाँ चक्रीय होती हैं। कोई पूर्ण विराम नहीं होता, सिर्फ विराम होता है। इन्द्र सफलता हासिल करते हैं, आलसी हो जाता है, अपना राज-पाट खो देते हैं, उसे पाने के लिए मेहनत करते हैं, फिर आलसी हो जाते हैं, यही होता रहता है। श्रुत चक्र या जीवन चक्र चलता रहता है।



8

## वरदान और श्राप

पुराणों में लिखी गई सारी कहानियों में पात्रों के जीवन में बेहद बदलाव आ जाता है सिर्फ एक श्राप या एक वरदान से। तो यह श्राप और वरदान क्या हैं और हर कहानी में इनका इतना उपयोग क्यों होता है?

अपनी ज़िंदगी में कोई घटना घटती है तो हम सोचते हैं कि यह किस कारण हुआ। इसकी वजह क्या है? तो यह सिर्फ मनुष्य की प्रकृति है, पशु-पक्षी नहीं पूछते यह प्रश्न, लेकिन मनुष्य के पास दिमाग है और हमेशा हम सवाल करते और सोचते रहते हैं। हर सभ्यता में अलग-अलग उत्तर होते हैं। कुछ में कहते हैं कि यह देवताओं की वजह से यह हुआ है। कुछ कहते हैं यह शैतान की वजह से हुआ है। कोई कहता है यह भूत-प्रेत की वजह से होता है। वेदों में यह मानना है कि जो भी हमारी ज़िंदगी में होता है, हर घटना हमारी वजह से होती है। जो भी कार्य हम करते हैं, वह एक बीज की तरह होता है। हर बीज का एक फल होता है। जैसे हमने एक्शन किया है, उसका एक रिएक्शन होता है। इस रिएक्शन की वजह से हमारी ज़िंदगी में घटनाएं घटती हैं। इसलिए अगर कोई अच्छी घटना होती है तो कहा जाता है कि तुमने अतीत में, दस घंटे, या दस साल या दस जन्म पहले कुछ अच्छा काम किया होगा। कुछ पुण्य किया होगा। अगर कुछ बुरा होता है तो कहा जाता है कि जरूर तुमने कुछ पाप किया होगा।

पुराणों में कई कहानियाँ बनाई गईं ताकि आम आदमी कर्म, पाप, पुण्य को समझ सके। पुण्य समझाने के लिए, उन्होंने वरदान शब्द का इस्तेमाल किया। और पाप समझाने के लिए उन्होंने श्राप शब्द का इस्तेमाल किया। वरदान तब मिलता है जब कोई किसी के लिए अच्छे काम करे – उसे पुण्य मिलता है। अगर आपने किसी को चोट पहुँचाई है तो वो आपको श्राप देगा – यहाँ पाप आता है। यह कहानी कहने का तरीका है। हिंदुइज्म, जैनिज्म और बुद्धिज्म में कर्म के ऊपर बहुत विश्वास किया गया है। किसी सभ्यता में कर्म के ऊपर इतना विश्वास नहीं है, अगर आप ग्रीक माईथोलॉजी या बाईबिल पढ़ेंगे तो वहाँ श्राप और वरदान का इस्तेमाल नहीं किया गया है। अगर आता भी है तो भगवान या देवता से आता है। हमारी कहानियों में जैसे रामायण और महाभारत, श्राप और वरदान मनुष्य भी देते हैं। जैसे उर्वशी अर्जुन को, ऋषि गौतम अहल्या को, इत्यादि।

ऋषि भृगु के बारे में एक दिलचस्प कहानी है। असुरों और देवताओं की लड़ाई के समय हारते हुए असुर भृगु के आश्रम में शरण लेते हैं। जब देवता उन्हें भृगु के आश्रम में ना होने पर असुरों पे हमला करते हैं तो उनकी पत्नी देवताओं के मुखिया इन्द्र को डरा देती हैं। बाद में जब विष्णु देवताओं की मदद करना चाहते हैं तो वे

उनको चेतावनी देती हैं, तो विष्णु उनका सर काट देते हैं। उसी समय भृगु आश्रम लौटते हैं, और यह भयंकर दृश्य देखते हैं। दुख और गुस्से से व्यथित हो कर वे विष्णु को श्राप देते हैं कि उन्हें धरती पर जन्म लेना पड़ेगा और तीन बार मृत्यु का सामना करना पड़ेगा।

**भृगु ऋषि ने भगवान विष्णु को श्राप दिया। हर कहानी में ऋषि दूसरों को श्राप देते हैं – ऐसा क्यों?**

ऋषि शब्द से हमारे मन में ज्ञानी या विद्वान की तस्वीर उभरती है। लेकिन पौराणिक कथाओं में ऋषियों की एक विशेष भूमिका होती है। वो ज्यादातर तपस्वी होते हैं। तपस्वी अपनी शक्ति या तप (उष्मा) को बचाते हैं जो समय के साथ बढ़ती जाती है, जैसे बैंक में पूँजी और उनकी शक्ति बन जाती है। ऋषि तपस्या करते हैं तो इस धन को खर्च नहीं करते, उनकी सारी इन्द्रियाँ कन्दरोल में होती हैं। उनके पास सारी शक्ति इकट्ठी होती है और फिर उससे पावर आती है। धीरे-धीरे उनमें ओजस, आध्यात्मिक ऊर्जा आ जाती है और उसके बाद सिद्धि प्राप्त होती है – पूर्णता प्राप्ति, इत्यादि। उनकी सिद्धि में इतनी शक्ति होती है कि दुनिया को बदल सकती है। ऋषि को यह शक्ति क्यों चाहिए? उन्हें सांसारिक जीवन से मुक्ति चाहिए, मोक्ष चाहिए। लेकिन संसार उन्हें मोहित करता है, सकारात्मक या नकारात्मक तरीके से। अगर उन्हें कोई खुशी देता है तो उन्हें वे उसे वरदान देते हैं। एक बार जब उन्होंने वरदान दे दिया तो वे बन्धन में आ जाते हैं कर्म से। वैसे ही किसी ने अगर उन्हें दुख दिया होता है तो उन्हें गुस्सा आ जाता है। जब गुस्सा आता है तो वे श्राप दे देते हैं – वापस बंधन में आ जाते हैं। सीख यह है कि अगर आप तप कर रहे हो तो आपके पास शक्ति तो जरूर है लेकिन इसका सही इस्तेमाल जरूरी है। यह आपको बाँध सकती है और मुक्ति से दूर कर सकती है। संसार, प्रकृति मायावी हैं वो जो क्षणभंगुर हैं – वो आपको मुक्त नहीं होने देंगी आपको कुछ करने के लिए उकसाती रहेंगी।

**क्या ऋषियों में इतनी शक्ति है कि वे भगवान को भी श्राप दे सके?**

प्रकृति के भी जो नियम हैं, उनको सबको मानना ही चाहिए। भगवान प्रकृति के नियम के बाहर नहीं हैं। वे भी प्रकृति के नियम के भीतर हैं। मनुष्य, देव, असुर, गंधर्व, राक्षस, यक्ष जितने प्रकार के भी प्राणी हैं, पशु-पक्षी – सब को श्राप लग सकता है। सब कर्मों के इंद्रजाल में बंधे हुए हैं। जैसे हम कोई काम करते हैं। अगर वह अच्छा नहीं लगा, तो हमें श्राप लग सकता है। अगर वो अच्छा लगा, तो वरदान मिल सकता है। भगवान भी अच्छे और बुरे से परे नहीं हैं। भगवान और मनुष्य में कोई भी किसी को श्राप या वरदान दे सकता है। हमारी पौराणिक कहानियों में इस बारे में किसी से कोई फ़र्क नहीं है। यह हमारे मिथकों की अनूठी बात है। शिव, विष्णु, ब्रह्मा, सबको श्राप मिल चुका है।

**यह कौन तय करता है कि क्या पाप है और क्या पुण्य है?**

यह एक मुश्किल सवाल है। कहानी से समझाता हूँ। कृष्ण हमेशा, हीरो होते हैं और उनके कंस मामा विलेन। कृष्ण मथुरा आते हैं और उनको मल्लयुद्ध में मारते हैं। ये अच्छा है या बुरा है? अपने रिश्तेदार को मारना बुरा है लेकिन लोग कहेंगे कि उन्होंने

कंस को मारा जो अत्याचारी था जो बहुत अच्छा हुआ। पुण्य ही कहलाया जाएगा। लेकिन क्या ये सचमुच में अच्छा है? भगवद् पुराण में ये कहानी आगे बढ़ती है।

कंस के ससुर, जरासंध मगध के राजा थे। उनकी दोनों बेटियों की शादी कंस से हुई थी। उन्हें बहुत गुस्सा आता है कि उनके दामाद को कृष्ण ने मारा। वो मथुरा पर धावा बोल देते हैं। अंत में मथुरा को पूरा जलाकर ध्वस्त कर देते हैं, और कृष्ण और यादव वंश को द्वारका जाना पड़ता है, शरणार्थियों की तरह।

तो कंस का मारना अच्छा था या बुरा? शॉर्ट-टर्म में अच्छा था क्योंकि एक अत्याचारी से मुक्ति मिल गई लेकिन लॉंग टर्म में बहुत बुरा था क्योंकि उनको मथुरा छोड़ना पड़ा। तो कर्म को आप पाप कहेंगे या पुण्य कहेंगे, वरदान कहेंगे या श्राप कहेंगे, इसके बारे में आप कभी पक्की तौर पर नहीं कह सकते।

**ऐसा हो सकता है कि वरदान बुरा हो और श्राप अच्छा हो?**

हमें सोचना चाहिए कि कब अच्छा होता है, और किसके लिए अच्छा है। जैसे चिप्स खाते समय बहुत मज़ा आता है, तो थोड़े समय के लिए अच्छा हुआ। बाद में बीमार पड़ सकते हैं। हमारे लिए अच्छा होगा क्योंकि हमें मज़ा आया लेकिन जब हम बीमार पड़ते हैं तो जो हमारी देखभाल करते हैं, उनके लिए अच्छा नहीं होता। वैसे ही पाप-पुण्य की कहानियों को अलग-अलग लोगों के दृष्टिकोण से देखा जाता है, यह जानने के लिए किसको फ़ायदा होता है।

जैसे भीष्म पितामह थे, उनको अपने पिता से इच्छामृत्यु का वरदान मिलता है। यह अच्छा है या बुरा है? यह बहुत ही मुश्किल प्रश्न है। भीष्म कहते हैं कि जब तक कुरुवंश की सारी समस्याएँ सुलझ नहीं जातीं, वो मरेंगे नहीं। समस्याएँ कभी खत्म नहीं होतीं। वे अपने भतीजों का जन्म देखते हैं, फिर उनके भतीजों के बच्चों और उनके बच्चों को भी देखते हैं पर मरने का नाम नहीं लेते। वे बरगद के पेड़ के जैसे बन जाते हैं जो किसी को बढ़ने नहीं देता। और क्योंकि वे सारे फैसले खुद ही लेते हैं, हर झगड़े में बीच में आते हैं। वो नए राजा बनने से रोकते हैं। तो उनका वरदान सबके लिए श्राप बन जाता है। आखिरकार कृष्ण बोलते हैं, बीच में आते हैं और अर्जुन उन्हें तीरों के बिस्तर पर लिटाते हैं। क्योंकि हर चीज का 'एक्सपायरी डेट' होता है!

**जब किसी को वरदान या श्राप मिलता है तो दो चरम सीमा पर होता है। क्या वह कभी बदलता है? वरदान और श्राप का कोई मध्यमार्ग है?**

जब हम गुस्सा होते हैं तो हमारे मुँह से कुछ ना कुछ निकल जाता है। उसके बाद हम क्षमा माँगे तो भी जो पहले की चोट है वो नहीं जाती। वो धागा जो टूट गया है उसको हम गाँठ से जोड़ सकते हैं, लेकिन वापस एक नहीं कर सकते हैं। पुराणों में हमेशा श्राप भी बाद में बदल जाता है। जैसे कुम्भकर्ण की कहानी है। कुम्भकर्ण अपनी तपस्या से ब्रह्मा को खुश करते हैं। ब्रह्मा उनको वरदान देते हैं। कुम्भकर्ण इंद्रआसन चाहते हैं। लेकिन मुँह से निकलता है, निद्रआसन, यानि, सोने की जगह। जब रावण ये सुनता है तो वो बीच में आता है और ब्रह्मा को कहता है वह ग़लत वरदान माँगा गया। उसे माफ़ कर दीजिए। ब्रह्मा कहते हैं कि वो वरदान को बदल सकते हैं, लेकिन पूरा हटा नहीं सकते। कुम्भकर्ण सोएगा लेकिन छः महीनों में एक बार उठेगा। और उस

दिन उसे कोई मार नहीं सकेगा। पर अगर उसको ग़लत समय पर उठाओगे तो वो मर जाएगा। तो जो वरदान होना चाहिए था वो श्राप बन गया और फिर उसे थोड़ा बदल दिया गया।

सबसे जानी-मानी शकुंतला की कहानी में गुस्से से भरे ऋषि दुर्वासा उन्हें श्राप देते हैं कि जिस प्रेमी के कारण दुर्वासा की तरफ़ अपने धर्म को भूल गई, वह उन्हें भूल जाएगा। जब और ऋषि उनसे प्रार्थना करते हैं तब वे उसे बदल देते हैं – जब तक उसकी दी हुई चीज़ शकुंतला के पास रहेगी उनका प्रेमी उनको याद रखेगा। पर फिर कहानी कुछ ऐसे पलटी है कि वे अलग हो जाते हैं और अन्त में मिल जाते हैं। यहाँ श्राप वह हिस्सा है कहानी का जिसकी वजह से कहानी आगे बढ़ती है।

हालांकि अमर होने का वरदान सबको नहीं मिलता, असुर उसे अक्सर माँगते हैं क्योंकि देवताओं ने अमृत पिया होता है। पर वे भी अमर नहीं होते क्योंकि प्रलय होने पर, सब कुछ मिट जाता है। कि कुछ भी हमेशा नहीं रहता यह सीख है।

जब असुर हमेशा अमर होने की इच्छा करता है तो ये वरदान कभी नहीं दिया जाता। जैसे महिषासुर चालाकी से माँगता है कि वो देव, असुर या गंधर्व के हाथ न मरे। लेकिन स्त्री के खिलाफ वरदान नहीं माँगता, देवता इसी बात का फ़ायदा उठाते हैं और दुर्गा उसे मार देती हैं। हिरण्यकशिपु को वरदान दिया जाता है कि न उसे कोई ऊपर मार सकता है और ना ही नीचे। ना कोई उसे दिन में मार सकता है और ना रात में। नर भी नहीं मार सकता और पशु भी नहीं। तो भगवान नरसिंह का रूप लेकर उसे सांझ में घर की चौखट पर मारते हैं। वह ना अंदर होता है, न बाहर, ना पशु होता है ना नर, ना दिन होता है ना रात। और उसे अपनी जाँघ पर रखकर मारते हैं।

हर चीज़ का एक तोड़ होता है। यह तोड़ भारतियों के लिए बहुत लाभकारी है। जैसे जब लोग पंडित के पास जाते हैं और वे सितारों में गड़बड़ बताते हैं, तो लोग उनसे उपाय पूछते हैं। तो देवता, असुर, मनुष्य और खासकर हमेशा उपाय ढूँढ़ते हैं।

**सबसे समझदारी का श्राप कौन सा है?**

श्राप समझदारी के नहीं होते हैं, लेकिन श्राप और वरदान के माध्यम से कहानी में बहुत बड़े बदलाव आ सकते हैं। जैसे रामायण में हमें लगता है कि दशरथ इतने बेचारे हैं क्योंकि उनके बेटे राम चौदह साल के लिए बनवास जा रहे हैं। फिर एक कहानी बताई जाती है कि कुछ सालों पहले दशरथ ने श्रवणकुमार को ग़लती से मार दिया था। उसके अंधे माता-पिता ने उनको श्राप दिया था कि दशरथ राजा हैं लेकिन पुत्र वियोग में मरेंगे। यहाँ पर हमें दशरथ के लिए बुरा लगता है लेकिन इस कहानी के बाद हमें लगता है कि वो उनके पापों का फल है। नज़रिया बदल जाता है। विलेन विक्टिम बन जाता है। और विक्टिम विलेन। यह एक 'समझदारी' का श्राप कहलाया जा सकता है।

**क्या मैं अपने पति को श्राप दे सकती हूँ?**

अगर मनुष्य वरदान दे सकता है, तो श्राप भी दे सकता है। तो आप दे सकती हैं। लेकिन वह पूरा होगा कि नहीं यह ज़रूरी नहीं। इसका कोई सबूत नहीं है।



9

## स्वर्ग और नर्क

हमें स्वर्ग और नर्क के बारे में बताइए।

यहाँ पे बहुत कन्फ्यूजन है क्योंकि हर सभ्यता में इस के ऊपर अलग-अलग विचार हैं और भारत में कई सभ्यताएँ हैं। हमारे यहाँ ईसाई धर्म है, इस्लाम है, हिंदु धर्म है, बौद्ध धर्म है, जैन धर्म है। सबके अलग-अलग विचार होते हैं तो लोग इन कॉन्सेप्ट की खिचड़ी बना चुके हैं। कुछ सभ्यताएँ हैं जो मानती हैं कि हम केवल ज़िंदगी एक बार जीते हैं। एक बार जन्म और एक बार मृत्यु। वैदिक परम्परा में यह मानते हैं कि हम पुनः जन्म लेते हैं तो एक जन्म नहीं कई जन्म होते हैं। और कई मृत्यु होती हैं। जहाँ पे यह मानना है कि आप केवल एक बार जीते हो वहाँ यह भी मानते हैं कि भगवान ने कुछ नियम बनाये हैं अगर आप उन नियमों का पालन करोगे तो आप स्वर्ग या जन्नत जाओगे और अगर आपने नियमों को तोड़ा तो आप नर्क जाओगे या जहन्नुम जाओगे। जहाँ पे पुनर्जन्म पर विश्वास है वहाँ ऐसा नहीं है। भगवान ने कोई नियम नहीं बनाए हैं। आपके कर्मों से और आपकी अभी की ज़िन्दगी से तय होगा कि आप किस जन्म में कहाँ रहोगे। अच्छे कर्म करने पर स्वर्ग में जाओगे। अगर बुरे कर्म करोगे तो नर्क में जाओगे। पर यहाँ स्वर्ग और नर्क, जन्नत और जहन्नुम जैसा नहीं है – ये थोड़े समय के लिए है। स्वर्ग यहाँ इंदर-लोक है। इंदर का आकाश में घर और नर्क यहाँ हैल नहीं है बल्कि यमलोक है, पाताल में यम का घर।

यहाँ और भी जटिलताएं हैं। जैसे पुराणों में वरतनी नदी है जिसको मरने के बाद आत्मा पार करती है पितृलोक जाने के लिए। वहाँ आत्मा तब तक रोकती है जब तक पुनर्जन्म का समय नहीं आता। पुनर्जन्म अगर अच्छी जगह हुआ है तो उसको स्वर्ग कहते हैं और अगर बहुत ही दुखी जीवन हो तो उसे नर्क कहते हैं। तो यहाँ एक रूपक हो गया।

ये कौन तय करता है कि आपके कर्म अच्छे हैं या बुरे हैं?

हिंदू धर्म में भगवान न्यायधीश नहीं होते। ये कॉन्सेप्ट आता है। ईसाई धर्म से या इस्लाम से। उन्होंने नियम बनाये हैं और आपको उनका पालन करना होता है। यहाँ हर सम्प्रदाय ने अपने नियम बनाए हैं। जैसे कुछ का मानना है कि अगर आप अहिंसा के मार्ग पर चलोगे तो आप स्वर्ग जाओगे। हिंसा करने से आप नर्क जाओगे। पर रामायण और महाभारत में बहुत हिंसा होती है और जो राजपुत्र हैं, जो युवराज हैं, वो सब क्षत्रीय हैं, जैसे अजुन हैं, भीम हैं, युधिष्ठिर हैं, वे सब युद्ध करते हैं।

महाभारत से याद आया, ये जो कहानी है, उसमें पांडवों को स्वर्ग में जगह नहीं मिली,

लेकिन जो कौरव थे, उन्हें मिल गई। इसका क्या मतलब है?

महाभारत का अन्त बहुत ही कान्ट्रवर्शल, विवादास्पद होता है। वहाँ कर्मों की जटिलता को समझाया जा रहा है और यह कि अच्छा और बुरा समझना कितना मुश्किल है। युद्ध के बाद क्या होता है? पांडव जीतते हैं और कौरव हारते हैं। पांडव राज करते हैं कुरुक्षेत्र के ऊपर, इंदरपुर और हस्तिनापुर के ऊपर छत्तीस सालों के लिए। उसके बाद वो वानप्रस्थ लेते हैं और कहते हैं कि वे स्वर्ग की ओर जाएंगे। उनको लगता है कि उन्होंने सही राज किया, धर्म निभाया तो वो स्वर्ग की ओर चलते हैं, वो मरे बिना ही स्वर्ग की प्राप्ति करना चाहते हैं। वो पहाड़ के ऊपर चढ़ते रहते हैं लेकिन सारे भाई एक-एक कर के मरने लगते हैं। युधिष्ठिर उनकी तरफ देखते भी नहीं। द्रौपदी की तरफ भी नहीं जब वो मरती हैं। वो सोचते हैं जिसको मरना है, उनका त्याग करने का समय आ गया है। अगर मेरे भाग्य में लिखा है तो मैं स्वर्ग जाऊँगा नहीं तो मैं भी मर जाऊँगा।

जब वो हिमालय के बिल्कुल ऊपर पहुँचते हैं तो उन्हें इंदर मिलते हैं जो उन्हें स्वर्ग में बुलाते हैं। वो उसे कहते हैं कि सबमें वो ही धर्मराज हैं तो उन्हें स्वर्ग मिलेगा। युधिष्ठिर का एक कुत्ता, जो राजमहल से उसके साथ आया था, वो उसे भी स्वर्ग ले जाना चाहते हैं पर इंदर मना कर देते हैं। युधिष्ठिर कहते हैं कि वो अपने हमसफर के बिना स्वर्ग नहीं जाएंगे। इंदर बहुत खुश होते हैं और कहते हैं, 'तुम्हें स्वर्ग में रहना ही चाहिए'। युधिष्ठिर शंखनाद और स्वागत के बीच अंदर जाते हैं तो देखते हैं कि कौरव स्वर्ग में बैठे हैं। उनको यकीन नहीं होता कि कौरव वहाँ कैसे बैठे हैं। वो भी उनका भाई की तरह स्वागत करते हैं। युधिष्ठिर आश्चर्यचकित हो जाते हैं और पूछते हैं कि कौरव यहाँ क्या कर रहे हैं जबकि वे अधर्मी थे जिनकी वजह से युद्ध हुआ था। इंदर बताते हैं कि नियम के अनुसार जो भी कुरुक्षेत्र में युद्ध कर रहा था, वो क्षत्रिय धर्म निभा रहा था इसलिए वे सब स्वर्ग में हैं। अगर आपने पुण्य भूमि में अपना धर्म निभाया है, तो आपको स्वर्ग की प्राप्ति होगी। आपके हिसाब से वो विलेन है लेकिन वो पुण्य भूमि में मरा है तो उसने स्वर्ग की प्राप्ति कर ली है।

यह सीधे-सीधे अच्छे या बुरे कर्मों से ज्यादा जटिल बात है। युधिष्ठिर फिर अपने भाईयों के बारे में पूछते हैं तो इंदर कहते हैं कि वो कहीं और हैं। तब इंदर उन्हें लेके जाते हैं – हिमालय के नीचे। बहुत ही भयानक जगह – वहाँ पे बहुत ही बदबू भरी थी और दुख भरी आवाजें आ रही थीं। तो वो नर्क था। नर्क के अंदर सारे पांडव बैठे हुए थे और तड़प रहे थे वे अपने कर्मों का फल भुगत रहे थे। भीम बहुत खाना खाता था तो वो उस पाप के लिए, अर्जुन बहुत इन्सिक्योर था, द्रौपदी भी वहीं थी क्योंकि वो पांडवों में अर्जुन को सबसे ज्यादा प्यार करती थी। नकुल भी था क्योंकि उसे अपने सौंदर्य का घमंड था। सहदेव अपने ज्ञान के घमंड के कारण वहाँ था। युधिष्ठिर कहते हैं कि उनके भाईयों ने धर्म का पालन करा था लेकिन उनकी छोटी-सी गलतियों के कारण वो नर्क में हैं और वो पाखंडी कौरव स्वर्ग में कैसे पहुँच गए? इंदर फिर बताते हैं कि वे कुरुक्षेत्र की पावन धरती पर अपना धर्म निभाते हुए मर गए।

युधिष्ठिर को बहुत गुस्सा आता है। वो स्वर्ग जाने से इन्कार कर देते हैं। तभी इंदर या कृष्ण, हमें ठीक से पता नहीं है कौन, कहते हैं, 'तुमने तो सब कुछ त्याग दिया था—

घर, राज्य, भाई। जब वे मरे तुमने उनकी ओर देखा तक नहीं। पर ऐसा लगता है, तुमने गुस्से को नहीं त्यागा है।' वो कहते हैं कि उनके दिल में अभी तक क्लेश है और गुस्सा है। 'तुमने कौरवों को हराया और मार डाला और उनके कुकर्मों की सज़ा उन्हें दे दी। छत्तीस साल तुमने उनके राज्य में राज किया—क्या वह उनकी सज़ा नहीं थी? पर इसके बाद भी तुमने उनको माफ़ नहीं किया है। तुम अभी भी भूत का भार लिए हुए हो। तुम्हें स्वर्ग की प्राप्ति कैसे हो सकती है?' जब तक तुम्हारे मन में गुस्सा है, दया नहीं है, तब तक तुम स्वर्ग की प्राप्ति नहीं कर सकते। तुम पुरानी बातों को अपने साथ लेके आ रहे थे।

अब ये फ़िलोसौफ़िकल कहानी बन गई। स्वर्ग और नर्क हमारी मनः स्थिति हैं। स्वर्ग में भोग और नर्क में दुख मिलता है, पर अगर आप गुस्सा, द्वेष, लालच, इत्यादि त्याग नहीं सकते तो स्वर्ग नहीं मिलेगा। तो स्वर्ग और नर्क बाहर नहीं, हमारे अंदर है।

कहते हैं सब एक ही स्वर्ग या नर्क में नहीं जाते—यहाँ कोई वी.आई.पी. जगह होती है जिसे हम बुक करा सकते हैं? कृप्या इस पर रोशनी डालें।

गरुड़ पुराण में कहते हैं कि अलग-अलग नर्क होते हैं अलग-अलग कुकर्मों के लिए — कोड़े, गर्म तेल, इत्यादि। ये सब जैसे बच्चों को डराने के लिए कहानियाँ हैं कि कभी बुरा काम नहीं करना है। जैसे अलग-अलग प्रकार के नर्क हैं। वैसे ही अलग-अलग प्रकार के स्वर्ग हैं। एक बिल्डिंग की तरह। कर्म के हिसाब से आप फ्लोर चढ़ोगे। अच्छे कर्मों से सबसे ऊपर और बुरे कर्मों से सबसे नीचे। यह ऊपर-नीचे की साइकिल चलती रहेगी। इसे संसार कहते हैं। अगर आपको मुक्ति चाहिए तो आपको कर्मों से मुक्त होना होगा। राग और द्वेष से मुक्ति पाकर, आप बिल्डिंग छोड़ सकते हो। कौरव और पाण्डव भी हमेशा वहाँ नहीं रहेंगे। कुछ सनातन नहीं, यह इसका दार्शनिक पहलू है।

स्वर्ग में देवी और देवता रहते हैं और नर्क में शैतान रहता है। लेकिन यमराज भी नर्क में रहते हैं। क्या यमराज शैतान है?

शैतान पौराणिक कथाओं में पात्र नहीं है। शैतान इसाई और इस्लाम धर्म से आता है। क्योंकि भारत में हम सब मिक्स हो गए हैं तो शब्द इधर-उधर चले जाते हैं। असुर पाताल लोक में रहते हैं, नर्क में नहीं रहते हैं। उनके लिए अलग जगह बनाई गई है। यमराज नर्क में नहीं रहते, वो पितृलोक के देवता हैं। पितृलोक जहाँ कर्मों का हिसाब रहता है। वो जज नहीं माने जाते हैं। लेकिन जब आप मरते हो और वरतनी को पार करते हो यमराज अपना खाता खोलते हैं और ऋण बताते हैं। इस नियम के हिसाब से वे बताते हैं कि अगले जन्म में आप स्वर्ग या नर्क जाओगे। पशु या पक्षी के रूप में जन्म लोगे, अमीर या गरीब बनोगे, ब्राह्मण, क्षत्रिय या शूद्र बनोगे। औरत या आदमी बनोगे, इत्यादि। यह उनकी इच्छा से नहीं लेकिन आपके कर्मों से पता चलेगा। यमराज की मदद उनका एकाउन्टेन्ट चित्रगुप्त करता है। यह दोनों फैसला लेते हैं कि आप किस योनि में जन्म लोगे। 84 लाख योनियों के बाद आपका मनुष्य जन्म होता है। मनुष्य जन्म बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि मनुष्य के शरीर द्वारा आपको मुक्ति प्राप्त हो सकती है। अगर आप ये मौका खो देते हो तो फिर 84 लाख जन्मों के चक्र में फँस जाओगे। तो तपस्या करना अवश्य है — यह एक लम्बी प्रक्रिया है।

यमराज को बहुत मजेदार तरीके से दिखाया गया है। उनको कोई सीरियसली नहीं लेता। यमराज की कोई कहानी सुना सकते हैं?

यमराज असल में एक बहुत ही ट्रैजिक कैरेक्टर, कारुणिक पात्र है। और मृत्यु बहुत नेगेटिव कॉन्सेप्ट है। हम उसको जोक के हिसाब से प्रिजेंट करते हैं ताकि लोगों को दुख न हो। लेकिन यमराज की कहानी वैदिक काल की सबसे पुरानी कहानी है। वेदों में चाहे आपको कुछ देवी देवताओं का नाम ना मिले, पर यमराज का नाम जरूर मिलेगा।

कहते हैं कि जो पहला पुरुष था वो दो जुड़वा थे – यम और यमी और कोई नहीं था दुनिया में। यमी यम को कहती हैं ‘मैं तुम्हारी बहन हूँ लेकिन शायद मुझे तुम्हारी पत्नी बनना पड़ेगा नहीं तो बच्चे नहीं पैदा होंगे’। यम कहते हैं ‘यह ठीक नहीं होगा क्योंकि हम भाई-बहन हैं। तो यह नहीं हो सकता।’ यमी मान जाती हैं। उसके बाद मृत्यु आती है और यमराज मर जाते हैं और पितरलोक के पहले वासी यमराज बन जाते हैं। वहाँ वो अटक गए हैं क्योंकि उनके बच्चे नहीं हैं। तो उनका पुनर्जन्म नहीं हो सकता। पुत्र शब्द आता है। ‘पूत’ से – मतलब वह नर्क जहाँ हम जाते हैं अगर हमने पुत्र-र, बेटे या पुत्र-री, बेटी को जन्म नहीं दिया है। इसलिए हमारी परम्परा में लम्बे-चौड़े अनुष्ठान हैं बिना बच्चों के दम्पतियों के लिए, जैसे गया, बिहार में एक अलग श्राद्ध होता है, इत्यादि।

यमी अपने भाई के लिए रोती हैं क्योंकि उन्हें पता है कि वे लौटेंगे नहीं। उनके आंसु यमुना बन जाते हैं। वह उनका एक अंश है। दूसरा हिस्सा है रात्रि या रात। यामिनी का मतलब है रात का समय। अगर यम दिन है तो यामिनी रात और दोनों कभी नहीं मिल सकते। यह पहले दो इन्सानों की कहानी है, फिर भाई-बहन की जो कभी नहीं मिल सकते नैतिक वजहों से। यह रूपक हो सकता है किसी प्रकार का यह कहानी वैदिक काल से सुनाई जा रही है। इसे बार-बार नहीं सुनाया जा सकता क्योंकि यह अटपटी और दुखद, दोनों है। यम पितृ लोक में फंसे रहते हैं और भूलोक पर तभी आते हैं जब मृत्यु होती है। तो मृत्यु उनके लिए महामार्ग जैसे है।

**पूर्वजों की आत्मा की शान्ति के लिए, श्राद्ध के दौरान हम कौओं को खाना क्यों खिलाते हैं?**

ये मनौती नहीं होती है। ऐसा मानना है कि जब कोई मर जाता है तो उसकी आत्मा वरतनी पार करके पितरलोक जाती है और उस पार जाने के बाद वो वहाँ इन्तज़ार करती है कि कब मेरा पुनर्जन्म होगा। जिनके बच्चे हैं, यहाँ पे, उनका फर्ज है आगे बच्चे पैदा करना ताकि जो पूर्वज हैं वो पुनर्जन्म ले सकें। तब तक पितृ लोक में उनको खाना नहीं मिलता है। पितृ पक्ष के समय, श्राद्ध के समय हम पितरों के लिए पिंड दान करते हैं जहाँ चावल के गोले दान दिये जाते हैं। तीन पिंड एक इन्सान के तीन भागों के सूचक हैं – दिमाग, शरीर और आत्मा या कुछ कहते हैं – दिमाग और शरीर और कर्म। चावल को पीसा जाता है देने से पहले क्योंकि पितरों के दांत नहीं होते। यह माना जाता है कि यम के संदेशवाहक कौओं के रूप में आते हैं।

हम जानते हैं कि कौए ‘का, का, का’ कहते हैं। यह वेदों में एक महत्वपूर्ण अक्षर है। हमारी अक्षरमाला भी ‘क’ से शुरू होती है। सारे सवाल-क्यों, कब, कैसे-भी ‘क’ से

शुरू होते हैं। तो कौए की कांव ऐसे है जैसे कि हमारे पितृ पूछ रहे हों 'क्या?'—'तुम अपनी ज़िंदगी के साथ क्या कर रहे हो?'

मृत्यु के समय आपको जीवन और इसके महत्व के बारे में याद दिलाया जाता है। यहाँ अन्नदान महत्वपूर्ण है। आप अन्न के बने हो—संस्कृत में एक शब्द है मांस या शरीर के लिए, अन्नकोश। आप अन्न की वजह से ज़िंदा हो पर उसके साथ आप क्या कर रहे हो? इस पितृ पक्ष के अनुष्ठान को इसलिए बनाया गया है ताकि आप अपने पितृओं को याद करो और अपने जीवन के बारे में सोचो।



10

## शक्ति

शक्ति क्या है? क्या ये दिव्य ब्रह्मांडीय शक्ति का सिद्धांत है, या फिर शक्ति एक देवी है?

पौराणिक कथाएँ एक विचार को व्यक्त कर रही हैं, अलग अलग तरीके से। वो रूपक का इस्तेमाल कर रही हैं; मुहावरों का इस्तेमाल कर रही हैं, फॉर्म का उपयोग कर रही हैं, कथाएँ यूँज कर रही हैं। दुनिया में दो प्रकार की चीजें, दो पैरेलल फोर्स चल रही हैं। एक है मटेरियल फोर्स, भौतिक प्रभाव जो चीजों की दुनिया है। यह एक अजीब दुनिया है। उसमें प्राण नहीं होता। जो प्राण-शक्ति है, वो इनटैन्जिबल, निर्गुण है। एक सगुण की दुनिया है और एक निर्गुण की दुनिया है। सगुण की दुनिया हम देख सकते हैं जो फिज़िक्स, केमिस्ट्री, बाइलॉजी हमें सिखाती हैं, लेकिन जो प्राण-शक्ति है, वो देख नहीं सकते, माप नहीं कर सकते। ये जो सगुण दुनिया है, इसको स्त्री रूप दिया गया है और निर्गुण को पुरुष रूप। हमारे शरीर के दो भाग होते हैं: एक दिखाई देने वाला, सगुण, जैसे हाथ और पैर। दूसरा है हमारा माइन्ड, मन। हम हाथ, पैर को देख सकते हैं लेकिन मन को नहीं देख सकते। हाथ, पैर सगुण हुए और मन निर्गुण हुआ। हाथ पैर प्रकृति होगी और शक्ति होगी। लेकिन मन को कहेंगे आत्मा। जब आत्मा चली जाती है तो शरीर निर्जीव हो जाता है। हालांकि आप उसे देख सकते हैं। प्रकृति हमेशा रहेगी। ये फेमिनिन साइड है। संस्कृत में कहेंगे नाम और रूप की दुनिया। नाम रूप के आगे है निर्गुण की दुनिया।

सरस्वती और पार्वती और लक्ष्मी, ये सब देवियाँ हैं। उनकी कहानियों में उनका जो महत्वपूर्ण रोल है, वो उनके मेल काउन्टपार्ट, समकक्ष पुरुष से ज्यादा है। कृपया इसके बारे में बताएँ।

फेमिनिस्ट रूप से देखें तो एक मेल-फीमेल डिवाइड है लेकिन अगर आध्यात्मिक रूप से देखें तो जो देवता होते हैं, त्रिमूर्ति – ब्रह्मा रचना करते हैं, विष्णु पालन करते हैं, और शिव नाश करते हैं। अगर देखा जाए तो इन सब शब्दों में क्रिया है। जब देवियों को देखते हैं तो सरस्वती, ज्ञान से जुड़ी हुई हैं, लक्ष्मी धन से जुड़ी हुई हैं और दुर्गा या काली शक्ति से जुड़ी हुई हैं। ये सब संज्ञा है और व्याकरण में संज्ञा भी चाहिए और क्रिया भी चाहिए। जो मेल फॉर्मस होते हैं वो क्रिया से जुड़े हुए हैं और फीमेल फॉर्म संज्ञा से जुड़े हुए हैं। दोनों जब मिलते हैं तभी भाषा निकलती है। ऐसे वो समझाते हैं कि दुनिया में, प्रकृति में धन है, ज्ञान है, शक्ति है।

तीन देव हैं, ब्रह्मा, विष्णु और शिव। उनकी तीन देवियाँ हैं जो शक्ति का रूप हैं – पार्वती, सरस्वती और लक्ष्मी। क्या त्रिदेवियाँ, त्रिमूर्ति से बढ़कर नहीं हैं?

देवता और देवी को आप अलग नहीं कर सकते हैं। अलग-अलग परम्पराएँ होती हैं। जैसे शक्ता परम्परा में मानते हैं कि देवी ही सबसे बढ़कर हैं, जबकि वैष्णव मानते हैं कि विष्णु सबसे बढ़कर है। हर संप्रदाय में उनका फेवरिट भगवान होता है। आध्यात्म में देखा जाए तो किसी को अप या डाऊन पोजिशन नहीं दी गई है। देवी और देवता हमेशा साथ में रहेंगे। यह शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप में भी दिखता है जहाँ वे आधे नर हैं और आधे मादा। कई मंदिरों में दाम्पत्य, शादी-शुदा दम्पति के ज़रिए इस बारे में बताया गया है। जैसे आप शरीर और मन को अलग नहीं कर सकते, वैसे ही देव भी चाहिए और देवियाँ भी।

**कहते हैं कि शिव बिन शक्ति शव हैं। इसके बारे में बताएँ।**

यह उस समय की कहानी है जब शिव की अपनी ओर विरक्ति से दुखी हो पार्वती उन्हें छोड़ देती हैं, ये कहकर कि उन्हें पार्वती की ज्यादा ज़रूरत है क्योंकि वे उनके भक्तों का ध्यान रखती हैं। कुछ समय बाद शिव एक आकाल देखते हैं जिसमें लोग काशी जा रहे होते हैं क्योंकि वहाँ की भूमि ऊपजाऊ है। वे पार्वती को लोगों को खाना खिलाते हुए पाते हैं और उनसे खाना माँगते हैं, ये कहते हुए कि उन्हें उनकी ज़रूरत है।

ये विरक्ती कहानी है लेकिन उसके पीछे एक फिलोसोफी है। जो अजीब है और जो जीवित है, उसमें फ़र्क क्या है? जो जीवित प्राणी है, जिसमें जीवन है, जिसमें आत्मा है उसे हमेशा भूख लगेगी। यह कहानी भूख की कहानी है। शिवजी महान तपस्वी हैं, भगवान हैं, ईश्वर हैं। तो उन्होंने भूख के ऊपर विजय प्राप्त कर ली है। यानि कि उन्हें भूख नहीं लगती। यहाँ ये देवी कह रही हैं, 'आप महान हो लेकिन बाकी सब आपके जो गण हैं, वो आप जैसे महान नहीं हैं। उन्होंने भूख के ऊपर काबू नहीं किया है। जो आपके भक्त भूखे हैं, उनके लिए आप क्या करेंगे? क्या आप उनको तप करने को कहेंगे? या फिर उन्हें खाना देंगे?'

मध्यकाल में हमें बड़े-बड़े संन्यासी मिले और उन्होंने कहा लोगों को कि, इच्छाएँ करना छोड़ दो और मुक्ति और मोक्ष प्राप्त कर लो। औरतों ने कहा कि यह अच्छा विचार है, लेकिन बच्चों को तो भूख लगती है और वे रोते हैं। आदमियों ने सोच लिया था कि वे किसी धाम जाएँगे और वहाँ वैरागी और संन्यासी बन जाएँगे। पर शाम को उन्हें भी भूख लगती थी। औरतों ने कहा कि जब तक आप खेती-बाड़ी या व्यापार नहीं करोगे, घर नहीं चल पायेगा। इस बात को पार्वती शिव को बड़ी सादगी से बताती हैं।

अन्नपूर्णा शिव को समझाती हैं कि कैलाशपर्वत पर शायद भूख न मिले लेकिन काशी में आम लोगों को भूख ज़रूर लगती है। तो जिनको भूख लगती है उनकी सेवा नहीं करेंगे शिव? तो शिवजी कैलास पर्वत से काशी आकर शंकर भगवान बन गए। शंकर जो लोगों को वरदान देते हैं और खाना देते हैं। अन्नपूर्णा, किचन की देवी जो खाना बनाती हैं, उनके पति शिव हैं जिनको भूख नहीं लगती वो खाना किसके लिए बना रही हैं? शिव भिक्षातन हैं, जो भीख माँगते हैं, लेकिन अगर उन्हें भूख नहीं लगती तो वो भीख क्यों माँगते हैं? वो अपने भक्तों के लिए माँग रहे हैं।

एक तरफ से वो खाना भी दे रहे हैं और ये भी बता रहे हैं कि भूख से बचो। जितना खाना लेते रहोगे उतनी भूख भी बढ़ती रहेगी। यह लालच को जन्म देता है। इसमें

लालच और संतोष के बीच में तालमेल की बात भी है। शिव संतोष की बात करते हैं, और शक्ति खाने और दूसरी जरूरतों की। हमें लालच और वैराग्य के बीच का संतुलन पाना है।

**अधिक प्रसिद्ध है देवी महात्म्या की कहानी दक्षिण भारत में। वहाँ धार्मिक उत्सव में इस पर नाटक होते हैं। देवी के इस स्वरूप के बारे में कुछ बताइए।**

देवी महात्म्या दुर्गा की बहुत ही प्रसिद्ध कहानी है। दुर्गा जिनकी पूजा बंगाल में होती है दशहरे के समय। दुर्गा जिनकी पूजा गुजरात में होती है, जब गरबा नाच होता है। उनके लिए नार्थ में जगराता होता है। बसंत का उत्सव होता है। बसंत नवरात्रा होता है, शरद नवरात्रा होता है। यह कहानी बहुत देर से आई है हमारी कहानियों में। अगर आप देखें तो विष्णु पुराण लगभग 1500 साल पहले और इसके बाद देवी महात्म्या की कहानी आती है। लेकिन ये देवी बहुत ही शक्तिशाली हैं, शायद, लोककथाओं में से निकली हुई हैं।

कहानी ये है कि असुर राजा रम्भा और राजकुमारी महिशी की शादी हुई और उनके एक पुत्र हुआ, महीष-असुर जो अपनी इच्छा से किसी भी जानवर का रूप ले सकता था। महीष-असुर को बहुत साल कड़ी तपस्या करने के बाद यह ब्रह्मा का वरदान मिलता है कि कोई देवता, असुर, जानवर या स्वयं त्रिदेव भी उसे नहीं मार पायेंगे। महीष अत्यधिक शक्ति पा लेता है और इन्द्र-लोक के सारे देवताओं को भी आसानी से हरा देता है। परेशान इन्द्र त्रिमूर्ति की मदद माँगते हैं। वे वरदान से निकलने का उपाय ढूँढ़ लेते हैं और एक औरत की रचना करते हैं। शिव अपना त्रिशूल देते हैं, इन्द्र अपना वज्र, अग्नि एक भाला और सूर्य उसे दस हजार सूर्यों की शक्ति देते हैं। राजा हिमावन उसे शेर वाहन के रूप में देते हैं और विष्णु दुर्गा का नाम। इन सब से लैस दुर्गा जबरदस्त लड़ाई करती हैं और मरने वाले असुरों, राक्षसों और हथियों की संख्या बढ़ती ही जाती है। जंग के मैदान में प्रवेश करने वाला अंतिम असुर है महीष। लड़ाई और भी संगीन हो जाती है। महीष दुर्गा पर वार करने के लिए रूप बदलता रहता है, पर वो हर रूप का नाश कर देती हैं और अंत में शिव के त्रिशूल से उसका वध।

अगर आप दुर्गा की मूर्ति ठीक से देखेंगे, तो आप पाएँगे कि वे दुल्हन के जैसे लाल कपड़े और गहने पहने हुए हैं, लेकिन हाथ में हथियार हैं। वो एक भैंस को मार रही हैं। यह एक बहुत ही वायलेंट इमेज, हिंसक दृश्य है। कॉन्सेप्ट ये है कि जब भोग के लिए, भूख के लिए हमेशा बलि चढ़ती है। जैसे अगर आप जंगल को जलाते हैं और खेत बनाना चाहते हैं तो, वह वायलेंस होता है। खेती करते हो तो सारे चूहों को मार डालते हो, साँपों को मारते हो। यह वायलेंस, हिंसा ही है। तो जितना भी बोले वेजिटेरियन या नॉन-वेजिटेरियन, वायलेंस तो होगा ही होगा। उसे समझाने के लिए देवी ने यह रूप लिया है। गृहस्थ जीवन, जहाँ खाना परोसा जा रहा है, जहाँ धन-धान्य सम्पत्ति है, वहाँ हिंसा होगी ही। कितनी हिंसा होगी वो आपके ऊपर है। आपके विवेक और आत्मज्ञान के ऊपर है। यह प्रकृति का नियम है।

**जो देवी हैं, वही देवी पार्वती हैं और वही दुर्गा माँ हैं। कैसे?**

वो बेसिकली इंसानों की तरह हैं। हमारे भी कितने रूप होंगे, बच्चों के साथ अलग रूप है, माता-पिता के साथ अलग रूप। बाँस जब हम बनते हैं तो हमारा रूप बदल जाता है। जब हम सेवक होते हैं तो हमारा रूप बदल जाता है। तो देवी-देवताओं के भी रूप बदलते रहते हैं। इस स्टोरी को इंसानों के ऊपर बेस किया गया है। वे कोई दूसरी दुनिया की बात नहीं कर रहे हैं। वे हमारी ज़िंदगी के बारे में बात कर रहे हैं। कभी हमें गुस्सा आ जाता है। तो हम रूद्र रूप ले लेते हैं। कभी हम शिव के समान शांत रूप भी ले लेते हैं।

**देवी भगवान से पहले आई थी या बाद में?**

यह बहुत ही पोलिटिकल, विवादास्पद सवाल है। यह आध्यात्मिक विषय है जहाँ पहले कौन आया – पुरुष या स्त्री कभी भी आंसर नहीं कर पाएँगे। सब इक्वल या बराबर हैं। जो पहले आया इसका मतलब नहीं कि वो बड़ा है या छोटा है। शाक्त परम्परा में कहेंगे कि देवी पहले आई थीं। वैष्णव परम्परा में कहते हैं कि विष्णु पहले आए। नैचुरल हिस्टोरियन्ज़ से पूछोगे तो वो कहेंगे कि मनुष्य के पहले भी प्रकृति थी और मनुष्य के बाद भी प्रकृति रहेगी। अगर हम प्रकृति को सिद्ध रूप में देखें तो देवी का स्वरूप है उसका। प्रकृति एक कैनवस् के जैसी है जिसके ऊपर पेंटिंग बनती है। उस पेंटिंग की किर्या को हमने पुरुष का रूप दिया है। पुराणों में शक्ति माता भी है और बेटी भी हैं। माता प्रकृति हैं तो बेटी संस्कृति है।

रूपक है, इसे लिटरली नहीं लेना चाहिए। जब लोग लिटरली लेते हैं, तो उसमें मज़ा नहीं आता। भाव भी नहीं आता। अगर हम इसको रूपक के रूप से देखें कि वो क्या समझाना चाहते हैं, तब मज़ा आता है। ब्रह्माण्ड इतना विशाल है और यहाँ सब का रोल है जिसमें नर है मादा हैं, शिव हैं और शक्ति है।



11

## गणेश

हिन्दु पुराणों में सबसे प्रसिद्ध चार हाथों वाले, हाथी के सर वाले हमारे गणेश हैं। इनकी लोकप्रियता की वजह क्या है?

गणेश एक रहस्यमय भगवान हैं, कोई यह नहीं बता सकते कि कब और कैसे वे इतने लोकप्रिय हो गए। गणपति और गणेश शब्द वेदों में मिलते हैं लेकिन हम जानते नहीं कि जिस गजानन की हम बात करते हैं, हाथी के सर वाले देवता की, जिसको हम पूजते हैं, क्या उन्हीं का वर्णन वेदों में है? जब हम कहते हैं गणपति, इसका मतलब है 'लीडर' गणों का राजा, गणों का लीडर। गण जैसे गणतंत्र, रिपब्लिक, गण का मतलब है गैंग, समूह, लोगों का गुट, एक जनजाति का राजा। वेदों के पहले सिंधु घाटी सभ्यता थी और वहाँ हाथी की मोहर मिलती थी, तो हाथी लोगों को पता था। जिन्हें हम गणेश मानते हैं उनकी मूर्तियाँ 1500 साल पहले ही शुरू हुई हैं और वेद तो 4000 साल पुराने हैं। तो ये पौराणिक काल में आते हैं, वो भी लेट पौराणिक काल में।

यहाँ पर हम देखते हैं कि गणेश बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं। इतने महत्वपूर्ण कि 1000 साल पहले आदि शंकर अपनी किताबें लिखते हैं, कि जैसा शैव वैष्णव, और शाक्त परम्परा होती हैं वैसे ही गणपत्य परम्परा है। मतलब लोगों का पूरा एक समूह केवल गणेश को ही पूजता है और गणेश के माध्यम से वे भगवान का नाम लेते हैं।

उनकी लोकप्रियता का एक कारण है कि महाराष्ट्र में जो मराठा सम्प्रदाय था, सत्रहवीं शताब्दी, और अठारहवीं सदी में शिवाजी महाराज के बाद जब पेशवाई आई उस समय गायकवाड़ होल्कर – जो मराठा सरदार थे, इनके इष्ट देवता गणेश थे और वे जहाँ भी गए। गणेश की पूजा लेके गए। अब तक केवल ब्राह्मणों के मन्त्रों में गणेश थे लेकिन मराठा संघ की वजह से, चारों तरफ गणेश की कहानी, उनके चित्र, और उनकी मूर्तियाँ बहुत प्रसिद्ध होने लगीं।

तो गणेश का सिर्फ नाम आता है वैदिक से लेकर पौराणिक किताबों तक। पौराणिक समय के आखिरी हिस्से में उनका महत्व बढ़ जाता है, खासकर पेशवाओं की वजह से। और आखिर में तो बॉलीवुड है ही!

कहते हैं कि गणेश शिव और शक्ति के पुत्र हैं पर ये भ्रांति दूर कीजिए कि वे पार्वती के पुत्र हैं या शिव के पुत्र हैं?

गणेश को अयोनिजा बोलते हैं। अयोनिजा का मतलब है जिनका गर्भ से जन्म नहीं हुआ है। कहानी यह है कि शक्ति शिव के पास जाती हैं और कहती हैं कि उन्हें एक बच्चा चाहिए। तो शिव कहते हैं कि मुझे बच्चे की इच्छा नहीं है और मैं तो अनन्त हूँ,

मैं कभी नहीं मरूंगा तो मुझे पुत्र नहीं चाहिए और शिव वहाँ से चले जाते हैं। शक्ति तब कहती है कि बिना शिव, बिना नायक मैं एक बच्चे को पैदा करूँगी। बिना नायक-विनायक। वे अपने शरीर पर हल्दी लगाती हैं और फिर साफ़ करती हैं। तो जो हल्दी की उतरन जमा होती है, उसे एकत्रित करके वे एक सुन्दर गुड़िया बनाती हैं। उसकी वे प्राण-प्रतिष्ठा करती हैं और विनायक का जन्म होता है। शक्ति विनायक को कहती है तुम मेरी गुफ़ा की रक्षा करो। शिव जब वापस आते हैं तो वे कहते हैं कि मुझे शक्ति से मिलना है, वे अपनी पत्नी से मिलना चाहते हैं और वे विनायक को पहचानते नहीं हैं। वे सोचते हैं कि यह बच्चा कौन है। विनायक कहते हैं, 'खबरदार! कोई अन्दर नहीं जा सकता।' दोनों के बीच मतभेद हो जाता है, लड़ाई हो जाती है और शिव अपना त्रिशूल निकालकर उनका सर काट देते हैं क्योंकि वे बहुत शक्तिशाली हैं। शक्ति जब वहाँ आती है तो रोने लगती है, यह कहते हुए कि आपने मेरे पुत्र को मार दिया। शिव उनसे पूछते हैं कि उनका यह पुत्र कहाँ से आया तो शक्ति उन्हें कहती है कि मुझे आपकी ज़रूरत नहीं बच्चा पैदा करने के लिए, मैं स्वयं कर सकती हूँ। प्रकृति अपनी शक्ति दिखाती है कि मुझे देवताओं की आवश्यकता नहीं है ज़िंदगी बनाने के लिए। वे क्रोधित होकर एक बहुत उग्र रूप ले लेती हैं। उन्हें मनाने के लिए शिव कहते हैं कि वे विनायक के प्राण वापिस कर देंगे परन्तु उसके लिए उन्हें एक नया सर चाहिए होगा। वे अपने गणों से कहते हैं कि जो पहला प्राणी उत्तर की ओर मुँह करे हुए देखे उसका सर ले आएं। उन्हें मिलता है एक हाथी। फिर शिव उसकी प्राण प्रतिष्ठा करते हैं और फिर जीवित कर देते हैं। गणेश जी का शरीर उनकी माँ से आया और जो सर है वो पिता से आया है इसलिए वे शिव के भी बेटे हैं और शक्ति के भी। यह कहानी बहुत दिलचस्प है क्योंकि इस कहानी में शैव परम्परा और शाक्त परम्परा का मिलन होता है। यहाँ गणेश की वजह से दो चीजें हो रही हैं: जो उग्र काली हैं वो गौरी का रूप ले लेती हैं, घरेलु बन जाती हैं और शिव जो सन्यासी हैं, वे पिता बन जाते हैं, गृहस्थ बन जाते हैं। परिवर्तन हिन्दू धर्म में बहुत महत्वपूर्ण धारणा है। गणेश इस तरह से गृहस्थ जीवन के देवता बन जाते हैं।

वेदों में, गणपति केवल लोगों के लीडर हैं। पुराणों में शिव उन्हें अपने भक्तों के लीडर कहते हैं जिन्हें सबसे पहले पूजा जायेगा। जो शिव ने नाम दिया है और जो वेदों के गणपति हैं, यह दोनों शब्द हैं तो एक जैसे लेकिन अर्थ शायद अलग है। पौराणिक गणपति, शिवशक्ति के बेटे हैं और वेदों में सिर्फ लीडर हैं लोगों के। लोग इन दोनों को एक मानते हैं, पर हम यकीन से कुछ नहीं कह सकते।

**गणेश के रूप के बारे में बात करते हैं। उनका सर हाथी का है और चूहा वाहन है, तो इसका प्रतीकवाद क्या है और बाकी देवताओं से वे इतने अलग कैसे हैं?**

गणेश का काम है अलग-अलग विचारों को जोड़ना। वे एक तरफ लक्ष्मी से जुड़े हुए हैं, दौलत के साथ और दूसरी तरफ ज्ञान और स्मरणशक्ति के साथ भी जुड़े हुए हैं, सरस्वती के साथ। गणेश की पत्नियाँ ऋद्धि और सिद्धि धन और ज्ञान से जुड़ी हुई हैं। उनके चिन्ह जो हैं वे इन सब चीजों का प्रतीक है। हाथी जो है वे एक तरफ धन का प्रतीक है, वह एक महंगा जानवर है, वह शक्ति से जुड़ा हुआ है, लेकिन हम यह भी कहते हैं कि हाथी की यादाश्त बहुत तेज़ होती है, तो वह सरस्वती के साथ भी जुड़ा हुआ है। उनकी जो तोंद है, वो एक साहुकार से जुड़ी है जो दिनभर बैठकर अपना धन

संभालता रहता है और ब्राह्मण से भी जुड़ी है क्योंकि वे भी बैठे रहते हैं (ज्ञान)। उनके हाथ में अंकुश होता है जो एक बड़े और शक्तिशाली जानवर, जैसे हाथी, को धक्का देने और खींचने के लिए इस्तेमाल होता है। दूसरे हाथ में परशू, कुल्हाड़ी होती है जो प्रतीक है समस्या को छोटा करके उसे सुलझाने की। एक और हाथ में उनके पास धागा होता है जो संश्लेषण का प्रतीक है मतलब विचारों को जोड़ने का। तो गणेश तोड़ते हैं और जोड़ते भी हैं जो एक बुद्धिजीवी सिद्धांत है। यह बहुत दिलचस्प है कि हमारे देश में जहाँ इतनी खेती होती है वहाँ उनका वाहन है चूहा जो कि किसान का सबसे बड़ा दुश्मन है। चूहा समस्याओं का प्रतीक है जिसको दबाकर गणेश वश में रखते हैं। उनके पेट पर नाग का वास होता है जो कि चूहे का शत्रु है। परन्तु दोनों शिकारी और शिकार गणेश के पास सुख से रहते हैं। सौंप चूहे को नहीं खाएगा और चूहे भी किसान के गेहूँ के पीछे नहीं जाएगा।

ये सब विचार गणेश से जुड़े हैं। किसी फिल्म में अगर बहुत सारे विचार एक दृश्य में हैं और बहुत कुछ हो रहा है प्रतीकात्मक तरह से – दृश्य के आगे और पीछे – तो वह दृश्य बहुत प्रभावशाली बन जाता है। वैसे ही कलाविचारों को प्रभावित करती है। सारे देवी-देवताओं में सबसे ज्यादा प्रतीकों से संबंधित हैं गणेश। इसकी वजह से उनके कई रूप हैं और भक्त उन्हें कैसे भी दिखा सकते हैं, शिव या विष्णु की तरह भी – आजकल वे सेल्फी लेते भी दिखते हैं! गणेश का यह आकारहीन गुण बहुत महत्वपूर्ण है; यही उन्हें इतना लोकप्रिय बनाता है। आजकल, उनकी तोंद को भी सिक्स-पैक ऐब्ज से बदल दिया गया है, जो सही नहीं है क्योंकि तोंद धन को आकर्षित करती है।

**गणेश जिनको विघ्नहर्ता और विघ्नकर्ता दोनों कहते हैं जो के एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत गुण हैं। यह कैसा हुआ?**

गणेश की पौराणिक काल में प्रसिद्धि बढ़ी। उससे पहले शायद लोग हाथियों से डरते थे। क्योंकि खेती में एक मस्त हाथी बहुत ही खतरनाक जानवर होता है और इस वजह से आम आदमी को जंगली हाथी से डर लगता है। लेकिन जो घरेलू हाथी होता है, वो बहुत प्यारा लगता है और वह काम का होता है। वह राजा का प्रतीक भी है क्योंकि राजा हाथी पालते थे। इसलिए हाथी के साथ लोगों का बहुत दोहरा रिश्ता होता है। क्यों? उससे डर भी लगता है और प्यार भी आता है। यह भाव गणेश की मूर्ति के साथ भी जुड़ा है। गणेश पहले ऐसे ग्राम देवता थे जिनसे लोगों को भय लगता था। उन्हें हाथियों को दूर रखने के लिए पूजा जाता था। धीरे-धीरे जब वे शिव शक्ति, लक्ष्मी, सरस्वती के साथ जुड़ गये तो वे सौभाग्य और लाभ के देवता बन गए। वे विघ्न हरता बन गए जिन्हें सब अपने घर लाना चाहते हैं। हम इसीलिए आजकल गणेश की पूजा करते हैं ताकि हर जगह समृद्धि हो, सफलता मिले और धन प्राप्त हो।

**वैभवपूर्ण लंका के राजा कुबेर को गणेश ने विनम्रता का पाठ पढ़ाया। इस कहानी का अर्थ क्या है?**

कहानी के अनुसार, लंका के राजा कुबेर अपनी धन-सम्पत्ति का प्रदर्शन करने के लिए गणेश को उच्चतम भोजन परोसा। कुछ ही क्षणों में गणेश सारा भोजन समाप्त कर गये। और भोजन आयोजित किया गया पर गणेश वो भी समाप्त कर गये तथा और

भोजन का निवेदन किया। राजा कुबेर अपने रसोई घर से भोजन मँगवाते गये। गणेश इतने भूखे थे कि भोजन के सामने आते ही समाप्त कर देते थे। कुछ ही समय के पश्चात् राज भवन की रसोई खाली हो गई और आस-पास के नगरों से और भोजन का प्रबंध किया गया पर शीघ्र ही वह सारा भोजन भी खत्म हो गया। अंतः राजा कुबेर ने गणेश के सामने हाथ जोड़े और कहा कि उनके पास और अन्न नहीं है। यह सुनकर गणेश बहुत दुखी हुए, उन्हें बहुत भूख लगी थी। थके-हरे राजा कुबेर शिव के पास गये। उन्होंने शिव से क्षमा माँगी और इस घोर समस्या का समाधान पूछा। मुस्कुरा के शिव ने कुबेर से कहा कि यदि उन्होंने सच्ची श्रद्धा से भोजन परोसा होता तो गणेश कब के संतुष्ट हो गए होते। परन्तु राजा कुबेर ने केवल अपने धन के दिखावे के लिए भोजन का आयोजन करवाया था और जिस प्रकार राजा कुबेर की धन की भूख नहीं मिटती उसी प्रकार गणेश की खाने की भूख भी नहीं मिटती। पर यदि वो हृदय से गणेश जी को कुछ भी अर्पण करेंगे, तो गणेश की भूख तुरन्त मिट जाएगी। राजा कुबेर की रसोई घर में केवल कुछ चावल के दाने बचे हुए थे। इन्हें पकाकर जब गणेश को परोसा तो एक ही क्षण में गणेश की भूख मिट गई। प्रसन्न होकर गणेश ने राजा कुबेर के सामने अपना आभार प्रकट किया और इस प्रकार लंका के राजा कुबेर ने एक अमूल्य सबक सीखा।

यह कहानी समझने के लिए पहले यह देखना चाहिए कि कुबेर और गणेश दोनों मोटे हैं। यह दोनों यक्षमूर्ति हैं। जैसे लाफिंग बुद्धा होता है। यक्षमूर्ति पारंपरिक रूप से धन, समृद्धि एवं संतोष से सम्बन्धित है। समृद्धि और संतोष अलग-अलग भाव हैं। समृद्धि, धन और सामग्री आराम से और संतोष सुख और शान्ति से जुड़ा हुआ है। एक हो तो ज़रूरी नहीं कि दूसरा भी होगा। इस कहानी का यही मत है कि केवल भोग या भौतिक आराम से संतोष नहीं होता। जानवर और मनुष्य में यही फर्क है कि जानवर का जब एक बार पेट भर जाए वो संतुष्ट हो जाता है। लेकिन मनुष्य कल की भूख के बारे में सोच सकता है, उसके अगले दिन की, दस जन्मों की भूख के बारे में सोच सकता है – मनुष्य की भूख का कोई अंत नहीं है। कहानी में गणेश की तरह, मनुष्य को जितना मिलेगा वो सब लेता ही रहेगा, लालच करेगा। गणेश यही बताना चाहते हैं कि शिव के पास खाना या पैसा नहीं है, परन्तु संतुष्टि का रहस्य है। इसलिए शिव का नाम है कामंतका जो भूख और इच्छा मिटाता है।

**गणेश की पूजा कोई भी कार्य शुरू होने के पहले करते हैं। वो इतने प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण हैं मगर पूरे देश में भगवान शिव या भगवान विष्णु का स्थान उनसे ऊपर है। ऐसा क्यों?**

हिन्दु धर्म किसी एक स्त्रोत से नहीं आता। अलग-अलग रास्ते हैं, और वो एक दूसरे से मिल भी रहे हैं। एक में त्रिमूर्ति की संकल्पना है – ब्रह्मा, विष्णु और शिव। एक में गणपतये परम्परा चलती है। और एक गणपति को शैव और शाक्त जोड़ती है। यह सच है कि गणेश का नाम हर पूजा में पहले लेते हैं, पर पूरी तरह से सत्य नहीं है। शिव पुराण या शिव कथाओं में देखें तो कहते हैं कि शिव ने गणेश को वरदान दिया था कि हर पूजा से पहले तुम्हारा नाम लिया जाएगा। शैव परम्परा के लोग ये करते हैं पर वैष्णव परम्परा के लोग यह नहीं मानते। वे हमेशा विष्वक्सेना का नाम लेते हैं जो उनके गण के नेता हैं।

नियम हर जगह अलग-अलग होते हैं परन्तु, आजकल लोग सब चीजों को समरूप करना चाहते हैं, एक करना चाहते हैं, हमें विविधता असुविधाजनक लगती है। हमें हर सवाल का एक जवाब चाहिए, हर देवता का एक निश्चित स्थान चाहिए जो कि मुमकिन नहीं है। समय में बदलाव आता रहता है। गणेश की भूमिका के द्वारा और उसमें हुए बदलाव से यह दिखता है कि हमारे भारतीय समाज में कितना परिवर्तन आया है। जैसे कि, साऊथ ईस्ट एशिया में भी गणेश की मूर्ति है परन्तु वे मंगल मूर्ति नहीं होती। वहाँ कई बार यह देखने को मिलेगा कि गणेश की मूर्ति के साथ मानव खोपड़ियाँ रखी हुई हैं क्योंकि वे तंत्र के देवता हैं जो 1000 साल पहले भारत से वहाँ गए थे। यह उनका एक भयानक स्वरूप है। शिव का एक चित्र है जिसका नाम गजानतका है – हाथी मारनेवाला, गजासुर जो उसका चमड़ा लेकर नाचते हैं। गजासुर और गणपति में कोई सम्बन्ध है यह नहीं मालूम, परन्तु ऐसा मुमकिन है कि वहाँ कोई कहानी हो। एक और चित्र है जहाँ शिव गणेश को अपनी गोद में लिए बैठे हैं। शायद दोनों के बीच कभी दुश्मनी या लड़ाई रही होगी, किसी समय में और धीरे-धीरे आपस में सहनशीलता आ गई और नकारात्मक सम्बन्ध सकारात्मक बन गया।

पुराण के इतिहास को देखकर भारत के लोगों का मनोविज्ञान समझ में आता है। यह भी दिखता है कि हिन्दु धर्म बाकी धर्मों से अलग है क्योंकि वह औरगानिकली शिफ्ट हो रहा है, नैसर्गिक रूप से बदल रहा है। मुंबई में अब गणपति का एक नया ही रूप है ऐसा रूप जो 100 साल पहले नहीं था – कहाँ से आया?

यह सब स्वयंभू है परम्परा का अंग है। मतलब भक्तों की इच्छा से जाग्रत हुई परम्परा। और जैसे भक्तों की इच्छा बदली उनके अनुभव बदले वैसे ही परम्परा बदली, उनके रूप बदलने लगे, कहानियाँ बदलने लगीं, विचार भी बदलने लगे। इसलिए त्रिमूर्ति आज गणेश जितनी प्रसिद्ध नहीं है।



12

## अस्त्र-शस्त्र

कहते हैं हमें अपनी जिन्दगी शान्तिपूर्वक काटनी चाहिए। अहिंसा के मार्ग पर चलना चाहिए, पर जो देवी और देवता हैं हमेशा युद्ध के लिए तैयार रहते हैं, उनके हाथों में हमेशा अस्त्र रहते हैं, तो इस परस्पर विरोध का क्या मतलब है?

जब देवी, देवताओं की मूर्तियाँ बनाई गईं हजारों साल पहले तो शस्त्रों का मतलब अलग होता था। यदि आप आदि मानव को देखेंगे, वो जंगल में रहता था, पेड़-पौधों और जानवरों के बीच, अस्त्र के बिना वो जी नहीं सकता था क्योंकि अस्त्रों को वह शिकार और खाना एकत्रित करने के लिए इस्तेमाल करता था। ऐसे देखें तो अस्त्र असल में साधन थे जिंदा रहने के लिये। खैर उस समय कुछ था नहीं केवल उसके हाथ में अग्नि थी। इनके बिना हम जी नहीं सकते। हमें खेत बनाना है, तो हमें अस्त्र चाहिए। हल चलाना भी एक अस्त्र इस्तेमाल करना है। अगर आपको एक खेत बनाना है तो पेड़ों को काटना पड़ेगा, उसके लिए भी अस्त्र तो चाहिए। अगर आप खाना पका रहे हैं तो अगर आप देखें हमारे खाना बनाने का जो तरीका है, उससे भी अस्त्रों का उपयोग होता है। काटते-पीटते हैं या पीसते हैं। ये सब कार्य हिंसक होते हैं। उपकरण तो जिंदगी में ज़रूरी होते हैं, इनके बिना हम जी नहीं सकते।

हम धीरे-धीरे आदिम सभ्यता से कृषि-प्रधान सभ्यता की ओर बढ़े; हमने खेती की, घर बनाए, धान और पैसा इकट्ठा किया और अपने खाने की बोरी को बचाने के लिए अन्नागार बनाये, और किले बनाये और अपने को बचाने के लिए शस्त्र रखने शुरू किया। अस्त्र और शस्त्र हमारी सभ्यता के लिए ज़रूरी हैं। इसलिए देवी, देवताओं के पास भी कोई ना कोई अस्त्र होते हैं। शिव का त्रिशूल, हनुमान की गदा और विष्णु के कई अस्त्र।

**त्रिशूल कहाँ से आया? इसे किसने बनाया और यह शिव का अभिन्न अंग कैसे बन गया?**

यह एक मिस्ट्री है, रहस्य है, क्योंकि त्रिशूल को किसी ने बनाया नहीं। शिव अनन्त काल से हैं, वे स्वयंभू हैं और त्रिशूल के साथ पैदा हुए – वह हमेशा से हैं। तो यह एक रूपक है। क्योंकि शिव के साथ जो तीन चीज़ें जुड़ी हैं – उनकी तीन आँखें, उनके बेल के तीन पत्ते और भूत की माथे पर तीन रेखाएँ – तो उनके अस्त्र में भी तीन ब्लेड, वाला शूल है, त्रिशूल। कहते हैं कि शायद यह सारी चीज़ें त्रिलोक दर्शाती हैं – स्वर्गलोक, भूलोक, पाताल लोक। भगवद्गीता में यह तीन गुणों से संबंधित है – रजस गुण, तमस गुण और सत्त्व गुण।

पौराणिक कथाओं में केवल शिव ने सिर्फ एक बार अपना त्रिशूल इस्तेमाल किया है, अंधक-असुर को मारने के लिए जो रक्त-बीज जैसा असुर था। उसके रक्त के हर बूंद के गिरते ही एक और अंधक का जन्म होता था। शिव ने उसे अपने त्रिशूल से भेद रखा था जब तक उसका सारा खून नहीं निकल गया। अंधक ने शिव की आराधना की और एक ऐसा ऋषि बनाया जिसके शरीर में एक भी बूंद खून नहीं झा, उसका सारा गन्दा खून निकल गया। शिव के त्रिशूल के सम्पर्क में आने के बाद वह शिव भक्त बन गया।

लेकिन दिलचस्प बात यह है कि शिव और ज्यादातर देवी, देवताओं का संबंध धनुष के साथ है। इसे आप लिट्रली भी ले सकते हो कि धनुष और बाण थे या उसे मेटाफ़र, रूपक की तरह से। धनुर्विद्या का रिश्ता योग शास्त्र से है, जिसमें मानसिक एवं शारीरिक अनुशासन की आवश्यकता होती है। धनुष में प्रत्यंचा चढ़ती है – जैसा राम ने रामायण में कहा है – अगर स्ट्रिंग, ज्यादा टाइट होगी तो वह टूट जाएगी और अगर ढीली होगी तो उसका कोई फ़ायदा नहीं है। तो वैसे ही हमारा मन होना चाहिए, ज्यादा टाइट नहीं, ज्यादा लूज़ भी नहीं। तो अगर बैलेंस्ड माइंड, संतुलित दिमाग़, होगा तभी आप बाण चढ़ा सकते हो और उसे खेंचकर निशाना भी लगा सकते हो। तो वह सिम्बल ऑफ़ फोकस बनता है। यह ध्यान का, या धारणा का प्रतीक बन जाता है। यहाँ धनुष के माध्यम से योग के नियम समझाए जा रहे हैं, शायद इसलिए धनुष बहुत प्रसिद्ध हैं।

शिव का एक नाम है 'पिनाकी', पिनाक उनके धनुष का नाम है। क्योंकि शिव हैं तो सबकुछ बहुत बड़ा है – उनके धनुष का जो शाफ्ट है वह मेरु पर्वत और जो स्ट्रिंग है वो शेषनाग नागों के राजा हैं। वो शाफ्ट ब्रह्माण्ड की धुरी का प्रतीक है और साँप, का स्ट्रिंग समय से संबंधित है, क्योंकि वह हमेशा आगे बढ़ता रहता है – भूत से वर्तमान में और भविष्य में – और अपनी त्वचा समय के साथ बदलता रहता है। इसलिए शिव के हाथों में दोनों समय और ब्रह्माण्ड (स्पेस) हैं।

तीन असुर हैं, विद्युनमाली, ताराका कक्ष और वीरयवन। एक संग उन्हें त्रीपुरा-असुर बुलाते हैं। वे एक ही तीर से मारे जा सकते हैं अगर वे एक के पीछे एक खड़े हों। शिव त्रिपुरा-असुर को अपने जादुई धनुष, पिनाक से मार देते हैं और असुरों के तीन लोक समाप्त कर देते हैं। उनका तीर स्वयं विष्णु हैं, उनका रथ भूलोक है और उसके पहिये सूरज और चाँद, चार वेद घोड़े हैं और ब्रह्मा सारथी हैं। पर असुरों को मारने के बाद उन्हें इतना दुख होता है कि वे माथे पे उनकी राख तीन रेखाओं में लगाते हैं। यह एक ज़बरदस्त कहानी है, एक जादुई रथ और धनुष की, पर यहाँ त्रिशूल नहीं है।

विष्णु शिव के तीर बनते हैं इस कहानी में पर उनके पास बहुत से अस्त्र हैं। तो प्रश्न है कि उनके इतने सारे अस्त्र क्यों हैं?

जैसे हम कहते हैं कि ब्रह्मा क्रियेटर हैं, रचयेता, शिव डिस्ट्रॉयर हैं नष्ट करने वाले, और विष्णु प्रिसरवर हैं, पालनेवाला।

जो पालन करते हैं, जो सुरक्षा करते हैं, जो सोसाइटी को मैनेज करते हैं, वह हैं विष्णु। उनके पास इसलिए ज्यादा अस्त्र हैं। और इन सब अस्त्रों के नाम हैं – जैसे

सुदर्शन चक्र, यह बहुत प्रसिद्ध है। वह उनकी उंगली में तेज़ी से घूमता है, वार करता है और वापिस आ जाता है। उनके हाथ में गदा है, कौमोदकी, एक तलवार है जिसका नाम है नन्दक। और एक धनुष है जिसका नाम है सारंग। एक विष्णु का नाम है सारंगपानी, जो हाथ में सारंग धनुष पकड़ता है। जैसे विष्णु के अलग-अलग अवतार हैं, वैसे अलग-अलग अस्त्र होंगे। जैसे परशुराम के हाथ में कुल्हाड़ी होती है, जिसको परशु कहते हैं। राम के जाने-माने धनुष-बाण है, इस लिए उनका नाम एक-बाणी भी है। इसका मतलब है कि वो जिनके पास एक बाण है, फोकस है। कृष्ण के साथ हम देखते हैं कि उनके पास सुदर्शनचक्र है, लेकिन बाकि सारे अस्त्र भी हैं। कृष्ण को पूर्णावतार कहते हैं, क्योंकि वे विष्णु के पूरे अवतार हैं। कल्कि के अवतार में नन्दक तलवार होती है।

**हर देवी और देवता का अपने हथियार के साथ एक खास रिश्ता होता है। इंद्र के वज्र के बारे में बतायें।**

कहानी ये है कि एक वृता नाम का असुर था जिसने इन्द्र का सिंहासन छीन लिया। वृता को वरदान था कि वो किसी लकड़ी या धातु के बने अस्त्र से पराजित नहीं होगा। इन्द्र, विष्णु के पास जाते हैं जो उन्हें एक तपस्वी, दधीची ऋषि के पास ले जाते हैं। ऋषि बहुत समय से तपस्या कर रहे होते हैं और उनमें एक शक्ति होती है। विष्णु के कहने पर वे अपने शरीर का त्याग कर देते हैं, और वज्र उनकी हड्डियों से बनता है, जो किसी भी अस्त्र से अधिक शक्तिशाली है और जो अन्त में वृता का नाश करेगा।

शायद ये उस काल की कहानी है जब हड्डियों से, और पत्थरों से अस्त्र बनाते थे। शायद ये कहानी आयुर्वेद के बारे में है क्योंकि आयुर्वेद में ये है कि ऐसे ऋषि थे, जो तपस्या करते थे और उनके पास अपनी सिद्धी होती थी। उसकी वजह से उनके शरीर खास होते थे – उनकी मांसपेशियाँ और हड्डियाँ बहुत शक्तिशाली होती थीं। उनकी हड्डियाँ इतनी ताकतवर थीं कि वो लोहे से भी ज्यादा शक्तिशाली थीं।

गया, शहर बिहार में गया – असुर के नाम पे है। जिसने तपस्या करके अपना शरीर इतना शक्तिशाली बना लिया था कि भिन्न-भिन्न प्रकार के अस्त्र उसकी हड्डियों और मांसपेशियों से बने जो फिर देवी, देवता अपने साथ ले गए। ये कहानियाँ एक तरह से योग, आयुर्वेद, तप और अस्त्र को आपस में जोड़ती हैं।

यह कहानी वैराग्य भाव और आत्म-बलिदान को भी दर्शाती है। देवता दधीची की हड्डियाँ माँगते हैं और वे दे देते हैं। तो ऋषियों को इतना मोहहीन होना चाहिए कि वे अपनी हड्डियाँ भी दे सकें। इस तरह वज्र इंद्र को दान में दिया गया था।

**क्या इन वज्रों का कोई मैन्यूफैक्चरिंग यूनिट, कोई कारखाना था? इन्हें कौन बनाता था?**

विश्वकर्मा, शिल्पकारों के देवता सारे अस्त्र-शस्त्र बनाते थे। एक कहानी है कि उन्होंने सूरज का एक अंश निकाल कर सुदर्शनचक्र बनाया था। अलग-अलग पुराणों में अस्त्र-शस्त्रों के स्त्रोत अलग होते हैं। महाभारत में जब खाँडवप्रस्थ को जला कर राख कर देते हैं तो अग्नि देव इतने खुश हो जाते हैं कि वे सब पाँडवों को उनके सारे अस्त्र दे देते हैं। एक और कहानी में अर्जुन शिव से प्रार्थना करते हैं कि वे उन्हें

पशुपस्त्र दे दें।

**धनुष-बाण देवी और देवताओं के बीच इतने प्रसिद्ध क्यों हैं?**

उस ज़माने में शायद ये एक बड़ा इनवेन्शन, आविष्कार था। पत्थर या भाले तलवार से आप दस या बीस फुट ही पहुँच सकते थे, पर धनुष-बाण से आप की पहुँच बढ़ जाती है। लोगों को लगा कि शायद देवी और देवता इसके पीछे थे। इस अस्त्र का असर बहुत रहा होगा, जैसे हमारे ज़माने में मोबाइल फ़ोन। पर यह एक रूपक था, जैसे कामदेव का धनुष बहुत फ़ेमस था। कामदेव के धनुष गन्ने से बना था और उसकी तार तितलियों और मधुमक्खियों से बनी थी। बाण उसके फूलों से बने थे। वो भी युद्ध करते थे और हमने उनको भी वायलेंट, उग्र रूप दिया है। शिव, राम, विष्णु और देवी – सबके पास धनुष-बाण हैं।

**भगवान ब्रह्मा ने ब्रह्मास्त्र बनाया था, इसे हम पौराणिक भारत का न्यूक्लियर वेपन, परमाणु अस्त्र कहते हैं। क्या ये सच में इतना शक्तिशाली था?**

ऐकचूली हमें पता नहीं है। पुराण तो हज़ारों साल पहले लिखे गए और इन कहानियों में कहते हैं कि देवी देवता अस्त्रों में शक्ति फूँक सकते थे मंत्रों के माध्यम से। मंत्रों को बहुत शक्तिशाली और महत्वपूर्ण समझा जाता था। जैसे राम ने अग्नि, वायु, जल सब की शक्तियाँ अपने शस्त्रों में डाल दी थीं। रावण के संग युद्ध में उन्होंने अलग-अलग प्रकार के अस्त्रों का प्रयोग किया है। कहते हैं, कि देवों की शक्तियाँ भी अस्त्रों में डाली जा सकती थीं। जैसे ब्रह्मास्त्र, नारायणास्त्र, वैष्णवास्त्र, शैवास्त्र, पुष्पास्त्र और बहुत से। इनके बारे में विस्तार से लिखा गया है। खासकर महाभारत में।

महाभारत में एक एपिसोड है, जब युद्ध खत्म हो जाता है तो अश्वत्थामा बचा होता है। अश्वत्थामा द्रोणाचार्य का बेटा है और कौरवों की तरफ से वही एक योद्धा बचा है। वो ब्रह्मास्त्र का इस्तेमाल करके उत्तरा अभिमन्यु की पत्नी, के गर्भ में जो बच्चा है, उसे मारना चाहता है। उसे रोकने के लिए अर्जुन भी ब्रह्मास्त्र छोड़ते हैं। अब तक केवल एक ही ब्रह्मास्त्र का एक बार में इस्तेमाल होता आया था। दो ब्रह्मास्त्र छोड़ने से दुनिया का विनाश हो सकता था। पहाड़ पिघल सकते थे। ज्वालामुखी फट सकते थे – धरती खत्म हो जाती। व्यास कहते हैं कि तुम अपने अस्त्र को वापस ले लो। वापस लेने की शक्ति योद्धाओं में होती थी। अर्जुन ब्रह्मास्त्र वापस बुला लेते हैं लेकिन अश्वत्थामा नहीं कर सकते। तो कृष्ण उसको रोकते हैं और अश्वत्थामा को श्राप देते हैं कि वो कभी नहीं मरेंगे। और उनके सारे घाव कभी नहीं भरेंगे। अश्वत्थामा को अस्त्र ज़िम्मेदारी से नहीं इस्तेमाल करने के लिये श्राप दिया गया। यहाँ पर संदेश यह है, यह नहीं कि परमाणु हथियार थे बल्कि ये कि हम ज़िम्मेदार थे या नहीं।



13

## पवित्र जानवर

मंदिरों में हम देवी देवताओं के मूर्तियों के संग जानवरों और चिड़ियों की मूर्तियाँ देखते हैं। क्या ये सारे जानवर उनके वाहन हैं?

इसके कई कारण हैं। पुराने ज़माने में अलग-अलग लोग, अलग-अलग चीज़ों की पूजा करते थे। पेड़ों की पूजा करते थे या पशुओं की पूजा करते थे। पक्षियों की पूजा करते थे, कोई पानी की पूजा करता था। धीरे-धीरे जैसे धर्म और सम्प्रदाय का विकास होने लगा, मंदिर और गाँव बनने लगे। सभी पशु, पक्षी, देव, पेड़, पौधे-सब मंदिरों में आने लगे। एक-एक देवता के साथ, एक पशु या एक पक्षी को जोड़ा गया है। कहानियों में हम इनको वाहन कहते हैं। क्योंकि इन पर यात्रा की जाती है।

क्या सब देवी देवताओं के वाहन होते हैं?

हाँ, हर देवी देवता का वाहन होता है क्योंकि वे ट्रैवल करना पसंद करते हैं पर चलना नहीं। कृष्ण का पक्षी है गरुड; वरुण के पास मगरमच्छ है; इन्द्र का ऐरावत हाथी है; दुर्गा का बाघ है; ईशान का सफ़ेद बैल है, आदि।

शिव की गर्दन पे हमेशा नाग दिखाते हैं। क्या नाग उनका वाहन है?

नहीं, नाग उनका वाहन नहीं है। वह एक चिन्ह है जो उनके साथ जुड़ा हुआ है जैसे कई देवी देवताओं के संग है। उनका वाहन नंदी बैल है। शिव के मंदिर के सामने आप हमेशा बैल देखेंगे। कछुआ भी देखेंगे लेकिन कछुआ उनका वाहन नहीं है। वे नन्दी के ऊपर बैठ के काशी से कैलाश पर्वत या कहीं और भी जाते हैं। उन्हें वृषभनाथ कहते हैं। वृषभ का मतलब है बैल। तो बैल के ऊपर नाथ बैठे हुए हैं।

अगर आप देखें तो वाहन केवल वाहन नहीं होता। वह देवी देवता की प्रकृति का सूचक भी होता है। जैसे, शिव बहुत ही इंडिपेंडेंट भगवान हैं। वो तपस्वी हैं, वैरागी हैं; वो अपनी दुनिया में रहते हैं। आप उनको पूरी तरह से गृहस्थ नहीं कर सकते। वैसे ही बैल को पूरी तरह पालतू नहीं कर सकते। उसके लिए उसको नपुंसक बनाना पड़ता है। उसके बाद उसको बैलगाड़ी या हल के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। पर गाय के संग नहीं जोड़ सकते। उसके लिए जंगली बैल चाहिए। तो जंगली बैल शिव से जुड़ा होता है।

शिव का वाहन कछुआ नहीं है, तो कछुआ किसका वाहन है?

नंदी के सामने हमेशा कछुआ रखा जाता है और वहाँ यह योग का चिन्ह है। जैसे कछुआ अपने चारों पैर अंदर कर लेता है, वैसे ही योगी अपने इंद्रियों के ऊपर काबू

रखता है। कछुआ वाहन है देवी यमुना नदी का। और गंगा का वाहन मकर होता है – आधा मछली और आधा हाथी।

### ब्रह्मा का वाहन क्या है?

हंस होता है। कलैंडरों में राजहंस दिखता है, हंस अलग होता है। हंस हमारे मिथकों में बहुत महत्वपूर्ण चिन्ह होता है। हंस ऊपर से हमेशा शांत दिखता है। लेकिन अगर आप पानी की नीचे उसको देखेंगे तो उसके पैर लगातार चलते रहते हैं। तो असल में वो बहुत मेहनत कर रहा है, लेकिन वो लगता शांत है। वह पानी की एक बूंद अपने पंखों पर गिरने नहीं देता। वैसे ही जो तपस्वी होता है उनका मन विचलित होता है लेकिन हमें दिखते शांत हैं। उनको अपनी ओर कुछ नहीं खींचता। सफलता, दुर्भाग्य, सुख, दुख सब में वो शांत रहते हैं, हमेशा काम करते रहते हैं। इसलिए हंस को हमेशा ऋषियों के साथ जोड़ा जाता है। शायद इसलिए ब्रह्मा के साथ भी जुड़े हुए हैं। हालांकि कहानियों में वे हंस जैसे नहीं होते, बहुत ही परेशान रहते हैं। तो शायद बाकि भगवानों ने कहा कि आप हंस रखिए ताकि आप कुछ सीख सकें।

विष्णु का वाहन गरुड़ है, लेकिन वो जब आराम कर रहे होते हैं तो हमेशा शेष नाग के ऊपर लेटे हुए दिखाई देंगे। गरुड़ को चील समझा जाता है पर वो ज्यादातर बाज़ होता है। 4000 साल पहले, वैदिक काल में जब काफ़ी जटिल यज्ञ होते थे, उस समय कहानियाँ ज्यादा नहीं थीं। पर रीति-रिवाज़ ज्यादा होते थे। एक अनुष्ठान होता था जिसका नाम है अग्नि-चयन – उसमें मंडप होता था, एक पक्षी के आकार का। यह अग्नि के स्वर्ग जाकर अमृत लाने के लिए होता था। यह अनुष्ठान हमें वैदिक काल से मिलता है और धीरे-धीरे पुराणों में भी यह कहानी आ जाती है।

एक कहानी है जिसमें कश्यप मुनि की दो पत्नियाँ थी, एक कदरू और एक विनता। कदरू से नागों का जन्म हुआ और विनता से गरुड़ का जन्म हुआ। ये दो बहनें हमेशा लड़ती रहती थीं। एक बार उन्होंने एक शर्त लगाई उच्चाश्रव नाम के एक घोड़े पर जो सफ़ेद रंग का था। कदरू ने कहा वह पूरा सफ़ेद नहीं है और उसकी पूँछ काली है। विनता ने कहा वह पूरा सफ़ेद है। उन्होंने शर्त रखी कि जो भी हारेगा, वो दूसरे की दासी बन जाएगी। कदरू अपने काले नाग बच्चों से कहती है कि तुम उसके पूँछ पे लटक जाओ दूर से लगेगा कि एक सफ़ेद रंग के घोड़े की काली पूँछ है। वो छल से जीत जाती है। इसकी वजह से विनता कदरू की दासी बन जाती है। उसे बहुत बुरा लगता है और वो इस बंधन से मुक्ति चाहती है। तो कदरू कहती है कि अगर तुम मेरे बच्चों के लिए अमृत लेके आओगी तो मैं तुम्हें मुक्त कर दूँगी। विनता अपने बेटे गरुड़ से कहती है कि वो अमृत लेकर आए। गरुड़ स्वर्ग जाते हैं। इंद्र के साथ युद्ध करते हैं और अमृत लेके आते हैं नागों के लिए। वो जानते थे कि अगर नागों को अमृत मिल गया तो बहुत ताकतवर हो जाएँगे। तो वो नागों को कहते हैं कि वे नहा के आएँ, 'मैं अमृत लेकर आया हूँ उसके बाद मैं आपके लिए परोसता हूँ।' नाग नहाने जाते हैं तब वो इंद्र को अमृत वापिस लौटा देते हैं। जब नाग अमृत के बारे में पूछते हैं तो वो कहते हैं कि इंद्र उसे वापिस ले गए। उन्होंने उनसे पूछा कि तुमने रोका क्यों नहीं? उन्होंने जवाब दिया कि तुमने बताया नहीं मुझे रोकने के लिए। मैंने कहा था कि मैं अमृत लेके आऊँगा तो मैं ले आया। तो अब आपको हमें छोड़ना पड़ेगा। तब उनकी

माता को मुक्ति मिलती है।

विष्णु ये देख रहे होते हैं और कहते हैं कि तुम अमृत को धरती पर लाए अपनी चोंच पर रख, इतने परेशानी झेल कर, लेकिन तुमने एक बार भी उसे नहीं चखा? गरुड़ ने कहा कि मुझे उसकी इच्छा नहीं थी, मुझे तो केवल अपनी माँ को मुक्ति दिलानी थी, मैंने वो कर दिया। विष्णु ने कहा, 'तुम्हारे में बहुत शक्ति है, तुम मोह माया के जाल में नहीं फंसते। तुम महान तपस्वी हो, क्या तुम मेरे साथ रहोगे?' गरुड़ कहते हैं कि एक शर्त है, मैं वाहन बनूँगा – मैं आपके नीचे रहूँगा लेकिन आपको मुझे ऊपर भी रखना पड़ेगा। विष्णु सोचते हैं कि मैं यह कैसे करूँ? फिर अपने रथ पर एक ध्वज लगाते हैं जिस पर गरुड़ का चिन्ह होता है।

**सरस्वती का वाहन...**

वो भी हंस है। ब्रह्मा और सरस्वती दोनों हंस पे होते हैं। अगर आप मिनिएचर, लघु पेंटिंग ध्यान से देखेंगे तो कभी-कभी वे बगुले पर भी बैठती हैं। बगुला एकाग्रता की निशानी है। अलग-अलग प्राणियों से अलग-अलग धारणाएं निकलती हैं।

**वैष्णो देवी का वाहन शेर है पर दुर्गा माँ का कौन सा है – शेर या बाघ?**

बंगाल में हमें दुर्गा का वाहन शेर दिखाई देता है। पंजाब की तरफ उन्हें शेरावाली कहते हैं। पर उन दोनों देवियों को एक ही माना जाता है। भारत में शेर और टाइगर के बीच में बहुत कन्फ्यूजन है। अफ्रिका के शेर बहुत बड़े होते हैं। गीर जंगल में शेर इतने शानदार नहीं होते, बड़ी बिल्ली जैसे होते हैं। ऐशियैटिक लायन इतना ताकतवर नहीं होता था लेकिन पूरी दुनिया में शेर रॉयल्टी का प्रतीक है। चायना में लायन नहीं है लेकिन उनके यहाँ भी राजा का प्रतीक है। सिंगापुर का मतलब है सिंह का शहर। लंका के झंडे पर लायन का प्रतीक है। दुर्गा राजाओं की देवी हैं। राजा की गद्दी को हम सिंह का आसन – सिंहासन इसलिए कहते हैं।

दूसरी ओर बाघ पूरे भारत में आदरणीय है। संस्कृत में उसे व्याग्रह कहते हैं। वो अपने बच्चों की बहुत देखभाल करता है। इन बड़ी बिल्लियों को अपने बच्चों का ध्यान रखते हुए देखना बहुत सुंदर दृश्य होता है। तभी देवी को हमेशा बिल्ली के परिवार के साथ जोड़ा जाता है। शेर या बाघ राज्य पर निर्भर करता है।

**आपने बिल्ली के बारे में बताया, क्या कुत्ते भी किसी के साथ जुड़े हुए हैं?**

शिव के दो रूप होते हैं। एक शांत रूप होता है, एक उग्र गुस्सेल रूप होता है। शांत रूप नंदी बैल के साथ जुड़ा हुआ है। और उग्र रूप, भैरव, कुत्तों के साथ जुड़ा हुआ है। भैरव हमेशा कुत्तों के साथ दिखाई देते हैं। मंदिरों में महाकालेश्वर की मूर्ति के साथ भौंकता हुआ कुत्ता होता है।

**लक्ष्मी की छवि के साथ उल्लू की फोटो देखी है। क्या वो उनके वाहन हैं?**

उल्लू के संग लक्ष्मी बंगाल, उड़ीसा और दूसरे पूरबी राज्यों में दिखाई देती है। पर यह साफ़ नहीं है। कुछ लोगों का मानना है कि उल्लू अलक्ष्मी का चिन्ह है। अलक्ष्मी, लक्ष्मी की बहन है जो हिंसा और लड़ाई से जुड़ी हुई है। दूसरा है कि उल्लू चूहे पकड़ता है। चूहे की वजह से धन-धान्य नष्ट होता है। इसलिए उल्लू को रखा गया है

क्योंकि लक्ष्मी धन की देवी हैं। पर वह उनका वाहन नहीं है। ज्यादातर लोग लक्ष्मी को गजवाहिनी कहते हैं, जो गज, हाथी के ऊपर बैठी हुई हैं या दो सफ़ेद हाथी के संग जो उनका दूध से अभिषेक कर रहे होते हैं और उनकी सूँड उठी होती है। तो उनका वाहन हाथी हो सकता है। कुछ लोग कहते हैं कि जब वे उल्लू पर आती हैं तो अशुभ होता है। और हाथी पे शुभ होता है।

हाथियों को कवि बादलों के रूपक की तरह इस्तेमाल करते हैं। और गजवाहन विशेष महत्व रखता है क्योंकि राजाओं का वाहन होता था। इंद्र भी स्वयं हाथी ऐरावत पर यात्रा करते हैं। उसके छः दाँत होते हैं और सात सूँडें होती हैं इत्यादि। सूर्य का रथ है जिसमें साथ घोड़े होते हैं। चंद्र का रथ हिरणों से खेचा जाता है – सन्ता कलॉज़ की तरह! काम बहुत मज़ेदार हैं। वे तोते पर बैठते हैं और उनकी पत्नी मैना पर। तोता-मैना हमारी कहानियों में फेमस हैं। ये दोनों काम-शास्त्र के देवी-देवता हैं।

**कहा जाता है कि देवी देवता के पशु पक्षी जो होते हैं वो असुर होते हैं। क्या यह सच है?**

कुछ कहानियों में ऐसा कहा गया है। जैसे कि, तमिलनाडू की तरफ मुरुगन की कहानी फेमस है। मुरुगन, कार्तिकेय का एक रूप हैं – जो शिव के बेटे हैं। कहते हैं कि उन्होंने ताड़का-असुर को मारने के बाद उनके छोटे भाई, सुरपदमन पर हमला किया था। मरते समय उसने मुरुगन से माफ़ी माँगी। मुरुगन ने उनको माफ़ी दे दी और कहा कि तुम मोर का रूप ले लो। तुम मेरे वाहन बनोगे। इस कहानी में मोर एक असुर है।

कुछ कहानियों में दिखाते हैं कि कार्तिकेय शेर पर बैठे हैं। क्योंकि वो मंगल राशि के साथ जुड़े हैं। और मंगल हमेशा युद्ध के साथ जुड़ा होता है। कार्तिकेय भी कमांडर थे, इसलिए उनके साथ कभी-कभी शेर भी होता है और शेर भी असुर माना जाता है जिसको कार्तिकेय ने हराया था।

गणेश का चूहा भी असुर माना जाता है, जिसे गणेश ने पकड़ रखा है ताकि वो धान को ना खाए और किसानों को तकलीफ़ ना हो। और कहानियों में, खासकर महाराष्ट्र में, गणेश को मोर के साथ जोड़ा जाता है इसलिए ‘गणपती बप्पा मोरया’ कहते हैं या मोरेश्वर भी कहते हैं जिसका मतलब मोर के भगवान हैं। मोर भारत में बहुत प्रसिद्ध है क्योंकि बहुत सुंदर होता है, सारे देवी देवता उसके साथ जुड़ना चाहते हैं। कलाकृतियों में सरस्वती के साथ भी नज़र आता है। गौरी पूजा में गौरी को मोर पंख दिया जाता है। कृष्ण भी अपने मुकुट में मोर का पंख लगाते हैं। उनको मोर माना गया है। रास लीला में गोपियाँ मोरनी होती हैं। मोर पुरुषत्व का प्रतीक है इसलिए इतना जाना जाता है।

**कृष्ण के साथ गाय की छवि दिखती है, वो उनका वाहन नहीं है?**

नहीं। वाहन हमेशा नर होगा। मादा कभी नहीं होगी। बलि का जानवर भी कभी मादा नहीं होता। शेर भी टाइग्रेस नहीं होता। भैंसा यमराज के साथ जुड़ा हुआ है कृष्ण के साथ नहीं। भैंसा मृत्यु की तरह बहुत ही ज़िद्दी और सुस्त जानवर होता है। सीधी लाइन में चलता है। यमराज भी भैंसे की तरह सीधी लाइन में आपकी तरफ आ रहे हैं, जिस समय से आपका जन्म होता है। एक दिन वे आप तक ज़रूर पहुँच जायेंगे!

**राम का वाहन कौन सा है?**

विष्णु के वाहन गरुड़ हैं, पर जब वे अवतार लेते हैं, तब उनका कोई वाहन नहीं होता। कृष्ण का भी वाहन नहीं है। लेकिन उनकी कहानियों में कभी-कभी वे गरुड़ के साथ दिखाई देते हैं। कहते हैं कृष्ण विष्णु ही हैं। जब इंद्र कृष्ण की मदद माँगते हैं तो गरुड़ उनका वाहन बनता है।

मज़ेदार बात यह है कि जिस गरुड़ पर कृष्ण बैठते हैं वो तोते की तरह हरा होता है, जो कामदेव का वाहन है। कृष्ण रोमैंटिक भगवान हैं, इसलिए ये संबंध है।

**हनुमान राम के वाहन नहीं हैं?**

हनुमान उनके भक्त हैं, उनके मित्र हैं, उनके भाई हैं, लेकिन उनके वाहन नहीं हैं। वाहन और देवता का संबंध अलग होता है। लेकिन रामायण में जब राम रावण के साथ युद्ध करते हैं तो कभी इंद्र के रथ पर, कभी हनुमान के कंधे पर होते हैं। और लक्ष्मण अंगद के कंधे पर होते हैं। कई चित्रों में राम और लक्ष्मण दोनों उनके कंधों पे बैठे हुए हैं और वे उड़ रहे हैं। लेकिन हम हनुमान को वाहन नहीं मानेंगे। वो स्वयं भगवान का रूप शिव का स्वरूप माने जाते हैं।

**क्या किसी देवी देवता का अजीब वाहन है?**

है कुबेर का, जो धन के देवता हैं और यक्षों के राजा हैं। उनका नरवाहन है – नर मतलब इंसान वाहन की तरह है। वो इंसानों पर टरैवल करते हैं। बाकी सब देवता पशुओं पर चलते हैं। यह मज़ेदार बात है।

दूसरी हैं चामुंडा जिनका बहुत ही भयानक रूप है। उनके पूरे शरीर पे हमेशा बिच्छु होते हैं, और उन्हें प्रेतवाहिनी कहते हैं। वे भूतों पर यात्रा करती हैं रात में! वो बहुत डरावना रूप है।



14

## गंगा

**लोग गंगा में नहाते हैं अपने पाप धोने के लिए। गंगा को इतना महत्व क्यों दिया जाता है?**

हिंदुओं में यह मानना है कि गंगा पहले स्वर्ग में बहती थी। स्वर्ग में हमें पता है कि अमृत होता है, तो गंगा अपने साथ अमृत लेके आई है। अमृत अब भू-लोक में है, गंगा के रूप में। तो यह एक धारणा है कि अगर उसमें नहाओगे तो आपके पाप धुल जाएँगे, या आपको मोक्ष की प्राप्ति होगी। और, एक धारणा है कि जब तक आप मृतकों की अस्थियों को गंगा नदी में नहीं बहाओगे, तब तक वे वरतनी नदी के द्वारे पितृ लोक में, पुनर्जन्म के लिए नहीं जा पायेंगे। वरतनी, भूलोक, जहाँ जीवित रहते हैं, को पितृ-लोक, जहाँ मृत रहते हैं जोड़ती है। इसलिए मृत भूलोक में भूतों की तरह अटके रहेंगे और दुख पायेंगे, और उन्हें ना पुनर्जन्म नसीब होता है न मोक्ष।

**क्या गंगा का वर्णन वेदों में है?**

वेदों में दो नदियों का वर्णन है – सरस्वती और जहावी। सरस्वती का ज्यादा नाम आता है, तो शायद वह ज्यादा महत्वपूर्ण थी। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि वेदों में जिसका नाम लिखा है वह है सरस्वती सभ्यता। भारत के उत्तर-पश्चिम में, जहाँ से धीरे-धीरे लोग गंगा की तरफ उत्तर में आए। और यहाँ पौराणिक हिन्दु धर्म की शुरुआत हुई। यह वेदों से पुराणों तक का सफ़र दिखाता है।

**गंगा दिखती कैसी है?**

गंगा को पौराणिक काल में बहुत महत्व मिला। आप उनकी मूर्ति हर मंदिर के द्वारा पर और शहर के फाटकों पर देखोगे। उन्हें एक बेहद सुंदर स्त्री की तरह दिखाया गया है, कामुक और प्रजननक्षम, पानी का घड़ा उठाये, एक हाथ में। उन्हें मकर राशि के चिन्ह में भी दिखाया गया है। मकर, एक समुद्री जीव, मछली की पूंछ वाला, और हाथी के सर वाला, उनका वाहन है। तर्कवादी कहते हैं कि यह जीव शायद गंगा में पाई जाने वाली डॉलफ़िन है जो अब लुप्त हो जाने के खतरे में है। लोगों के बीच में मकर और मगर को लेकर भ्रान्ति है, तो कुछ लोककृतियों में गंगा को मगर पर बैठे दिखाया जाता है।

**शिव और गंगा का दिलचस्प रिश्ता है। शिव को गंगाधर भी कहते हैं, और कहते हैं कि गंगा उनकी जटाओं से बहती है। क्या गंगा शिव की नदी है?**

यह एक विवादास्पद बात है। शैव मानते हैं कि गंगा उनकी नदी है और वैष्णव ये

मानते हैं कि वो उनकी हैं क्योंकि उन्हें विष्णुपदी, जो विष्णु के चरणों से निकली हो, भी कहते हैं। एक कहानी है जिसमें विष्णु, अपने वामन अवतार में, बली, असुरों के राजा के पास जाते हैं, और एक वरदान मांगते हैं कि वे एक बार में, तीन कदमों में जितनी धरती नाप पायेंगे, वो ज़मीन उनकी हो जायेगी। वरदान मिलते ही वामन महाकाय हो जाता है। वह एक कदम में भू-लोक और अगले में स्वर्ग-लोक नाप लेता है। तब उसका पैर आकाश में आकाशगंगा पर पड़ जाता है और गंगा धरती पर उसके पैर के संग आ जाती है। इसी कहानी को एक और तरह से कहते हैं। जब विष्णु अपने पैर को आसमान में उठाते हैं तो ब्रह्मा भाव विभोर हो जाते हैं वे अपने कमण्डल से विष्णु के चरणों में पानी डालते हैं जो गंगा बनकर बहती है। शिव गंगाधर हैं क्योंकि गंगा उनके सर से और जटाओं से बहती है, और गंगा विष्णुपदी हैं क्योंकि वे विष्णु के चरणों से निकलती हैं। अलग-अलग परम्पराओं में ये अलग-अलग कहानियाँ हैं। मध्यकाल में जो राजनीति खेली गई, उसके अंश यहाँ दिखते हैं।

एक और बहुत दिलचस्प कहानी है गंगा के बारे में। शिव गाने के लिए माने जाते हैं हालांकि वे वैरागी हैं, और मुँह कम ही खोलते हैं। एक बार शिव गाते हैं और वे इतना मधुर गाते हैं कि विष्णु पिघल कर पानी में बदल जाते हैं। ब्रह्मा इस पानी को अपने कमण्डल में डाल लेते हैं, जो गंगा है।

**मैंने यह भी सुना है कहानियों में कि गंगा के पति शिव हैं। क्या यह सच है?**

कुछ कहानियों में कहते हैं कि शिव की दो पत्नियाँ हैं। एक हैं गौरी, मतलब पार्वती, जो कि पर्वत की बेटी है और दूसरी गंगा, जो भी पर्वत की बेटी हैं। तो गंगा और गौरी दो पत्नियाँ हैं और ऐसा कहते हैं कि गंगा और गौरी में हमेशा लड़ाई रहती है क्योंकि एक शिव के सर पर बैठती है और एक गोद में। एक कहानी है जिसमें पार्वती को बहुत गुस्सा आता है। वे कहती हैं कि – तुम मुझसे प्यार नहीं करते, तुमने गंगा को सर पर चढ़ा रखा है। मुझे अलग रखे हो। तो शिव ने उन्हें इतना कस कर आलिंगन करते हैं कि वे दो शरीर से एक शरीर हो जाते हैं और अर्धनारीश्वर, आधा पुरुष, आधा नारी बन जाते हैं। ऐसी कई रोमैंटिक कहानियाँ हैं शिव, गंगा और पार्वती की।

**आपने कहा, गंगा को जाह्नवी भी कहते हैं। यह नाम कहाँ से आया?**

जब गंगा भूलोक आ रहीं थी जो बहुत मस्ती में थीं, बहुत शोर कर रही थीं। ऋषि जहानू को बहुत गुस्सा आया, इतना गुस्सा कि उन्होंने पूरी नदी को पी लिया। कुछ लोग कहते हैं कि जहानू शिव का ही रूप थे। फिर गंगा ने माफ़ी मांगी इतना शोर करने के लिए। तो उन्होंने अपने कान से गंगा को निकाला। कान से जहानू की पुत्री जाह्नवी, गंगा का यह दूसरा नाम है।

गंगा की एक सहायक नदी है भगीरथी। आपने कभी सुना होगा – ‘भगीरथ प्रयास’ या ‘भगीरथ प्रयत्न’ मतलब बहुत कठिन काम करना। भगीरथ एक सूर्यवंशी राजा थे, और उनके जो पूर्वज थे, उनको एक श्राप लगा था कपिल मुनि का क्योंकि उन्होंने उनकी तपस्या भंग की थी। कपिल मुनि ने उन्हें जला के राख कर दिया था। उनके भाग्य से दुखी हो भगीरथ सोचने लगे कि क्या कोई तरीका है जिससे वे दोबारा जी सकें, उनका पुनर्जन्म हो और मोक्ष मिले, इत्यादि। कपिला मुनि ने उन्हें कहा कि वे

दोबारा जन्म ले सकते हैं अगर उनकी राख गंगा में डाल दी जाए। इसके लिए, गंगा को धरती पर आना होगा। भगीरथ ने तपस्या की और गंगा से निवेदन किया कि वे नीचे आएँ। आखिरकार गंगा मान गई पर उन्होंने कहा कि उनके गिरने के वेग से धरती का नाश हो जायेगा। भगीरथ ने फिर शिव से प्रार्थना की कि वे उन्हें अपने सर से पकड़ें। शिव ने अपनी जटाओं में गंगा का वेग सम्हाला। भगीरथ ने फिर अपने पूर्वजों की राख नदी में डाली और उन्होंने दोबारा जन्म लिया। पूर्वजन्म का सिद्धांत दोबारा मौका देने के लिए है क्योंकि हम एक जन्म में अपनी अभिलाषाएं पूरी नहीं कर सके। पुनर्जन्म दूसरा मौका देता है।

### गंगा की कोई बहन या भाई, कोई फैमली?

बहन है। बहन का नाम है यमुना, तो 'गंगा-यमुना' जब हम कहते हैं तो यह बहुत दिलचस्प है क्योंकि मंदिरों में जब भी आप मूर्ति देखेंगे तो 'गंगा-यमुना' हमेशा साइड पे रखी जाती हैं। गंगा हमेशा डॉलफिन के ऊपर होती है और यमुना हमेशा कछुए के ऊपर या कुर्म के ऊपर होती है। दिलचस्प है क्योंकि एक तरफ डॉलफिन है और दूसरी तरफ कछुआ है। डॉलफिन जम्प करती है, इट इज वैरी फास्ट, तेज़, उछलती-कूदती है, और कछुआ बहुत धीरे-धीरे चलता है। यमुना का रंग भी अलग होता है। गंगा बहुत सफ़ेद है, जो रैपिड्स होते हैं वह वाइट कलर के होते हैं। यमुना को कालिन्दी कहते हैं।

यही फ़र्क उनकी पर्सनेलीटी में भी होता है। गंगा बहुत ही चुलबुली हैं, अशांत हैं, चपल हैं, थोड़ी चालाक भी है। यमुना बहुत ही बेचारी हैं मतलब हमेशा थकी हुई रहती हैं, हमेशा पीछे खड़ी रहती है। अगर गंगा को शिव से जोड़ा जाता है तो यमुना को विष्णु या कृष्ण के साथ एसोसिएट किया गया है। कृष्ण की आठ पत्नियों में से एक है कालिन्दी।

यमुना की सब जगह पूजा होती है। अगर आप श्रीनाथ जी के मंदिर जाएं तो यमुना का प्रतीक होता है वहाँ पे – एक घड़ा रखा जाएगा और कहेंगे यमुना हैं। गंगा अगर शिव की तरफ चली गई तो यमुना को वैष्णव की तरफ लाया गया है। उनका कभी मेल नहीं होता। संगम होता है प्रयाग में, जहाँ पे वो मिलती हैं। एक तीसरी नदी से जो अदृश्य हैं – सरस्वती। तो संगम है, जहाँ कुम्भ मेला होता है।

### दक्षिण गंगा क्या है?

भारत को जम्बूद्वीप कहा गया है, जो हीरे की तरह बना है और जम्बू फल की तरह दिखता है। विंध्याचल पर्वत इसे दो हिस्से में बांटते हैं। उत्तरी हिस्से को हम कहते हैं उत्तरपथ। और दक्षिण को दक्षिणपथ। यह माना जाता है कि वैदिक परम्परा उत्तर से दक्षिण गई है और उसके साथ-साथ बहुत धारणाएँ और अनुष्ठान भी। ऋषि जब दक्षिण गए तो उन्होंने कहा कि दक्षिण में हमें यहाँ भी गंगा चाहिए तो दक्षिण गंगा की संकल्पना की गई।

कावेरी नदी को दक्षिण गंगा कहते हैं। कहते हैं कि अगस्त मुनि, जब दक्षिण जा रहे थे तो एक कमंडल में उन्होंने गंगा का पानी लिया। वहाँ वे कमंडल को पत्थर पर रख कर तप कर रहे थे। तब गणेश एक कौए का रूप लेके आए और उस कमंडल को गिरा दिया। तो वहाँ से कावेरी नदी की शुरुआत हुई।

एक और कहानी है जिसमें गोदावरी दक्षिण गंगा है। यह कहानी गोदावरी महात्म्या में है। जैसे मैंने कहा कि गौरी या पार्वती को बहुत बुरा लगता था कि हमेशा शिव गंगा को अपने सर पे क्यों रखते हैं? वे उनसे पीछा छुड़ाना चाहती हैं। एक ऋषि थे जिन का नाम था गौतम ऋषि। जिनका आश्रम दक्षिण में था। गणेश उनके आश्रम में जाते हैं गाय के रूप में, और उनके चावल के खेत में चरने लगते हैं। तो उनको भगाने के लिए वे एक पत्थर फेंकते हैं उनकी तरफ। गणेश दिखाते हैं कि वे मर गये। गाय मर जाती है, तो गौ-हत्या हो गई। ऋषि कहते हैं कि मुझे इस पाप का पश्चाताप करना पड़ेगा। गणेश वापस वहाँ आके कहते हैं कि अच्छा शिव से माँगो, कि गंगा यहाँ आ जाएँ कैलाश छोड़ कर ताकि मेरी माँ को और परेशानी न हो। गौतम ऋषि शिव से माँगते हैं कि गंगा को दक्षिण में लेके आइए। शिव गंगा को कहते हैं कि तुम दक्षिण चली जाओ और वे गोदावरी के रूप में दक्षिण में बहती हैं।

**कुछ कहानियों में गंगा के पति शिव हैं, कुछ कहानियों में विष्णु और कुछ कहानियों में उन्हें कुंवारी बताया गया है। तो क्या आप इस कन्फ्यूजन को दूर कर सकते हैं?**

यह बहुत ही मुश्किल प्रश्न है क्योंकि गंगा को एक अप्सरा माना जाता है। 'अप्सरा' शब्द बहुत ही इंटरस्टिंग है क्योंकि अप का मतलब है पानी। तो वे पानी की बेटी हैं। गंगा होती कोई नाथ नहीं होता, पति नहीं होता। क्योंकि एक नदी को आप कन्ट्रोल नहीं कर सकते। वो हमेशा अपने तरीके से बहेगी – यह एक महत्वपूर्ण दर्शनशास्त्र का सिद्धांत है।

लेकिन कहानियों में कभी-कभी उनको शिव के साथ जोड़ा जाता है और महाभारत में उनके पति हैं शान्तनू जो भरत कुल के थे। शान्तनू ने एक दिन गंगा तट में गंगा देवी को देखा। वे इतनी सुन्दर थी, उन्होंने कहा कि मुझे आपके साथ विवाह करना है। गंगा ने कहा ठीक है मगर मेरी एक शर्त है कि आप मेरी स्वतंत्रता को रोकोगे नहीं। मैं जो करूँगी आपको मानना पड़ेगा। शान्तनू इतने प्रेम में थे कि उन्होंने कहा कि जो भी तुम करोगी, मैं मानूँगा। विवाह के बाद जब भी उनका बच्चा पैदा होता था तो वे उस बच्चे को डुबा देती हैं। ऐसे वे अगले छः बच्चों के संग करती हैं। जब वे आठवां बच्चा डुबाना चाहती हैं तो शान्तनू रोकते हैं। वे उन्हें कहती हैं कि उनकी शादी समाप्त हो जायेगी अगर वे अपना वादा पूरा नहीं करेंगे और उनसे पूछ-ताछ करेंगे। पर शान्तनू नहीं मानते। तब वे उन्हें बताती हैं कि उनके पुत्र जो थे वे अपने पिछले जन्म में स्वर्ग में रहते थे। उन्होंने ऋषि वशिष्ठ की गायें चुरा लीं और उन्होंने उन्हें श्राप दिया जिससे उनकी जगह स्वर्ग में नहीं रही। यह उनका पश्चाताप था कि वे धरती पर जन्म लेंगे और मृत्यु लोक भेजे जायेंगे।

गंगा समझाती हैं कि वे उनकी मुक्ति के लिए उन्हें डुबा देती थीं। पर शान्तनू उन्हें उस बच्चे को डुबाने नहीं देते। गंगा उन्हें बताती हैं कि वे उस बच्चे को जन्म और मृत्यु की दर्दनाक चक्र में फेंक देंगे। पर फिर भी जब शान्तनू नहीं मानते, तब वे बच्चे को ज़िन्दा रखने के लिए मान जाती हैं और कहती हैं कि वे उसे उसके पिता के पास बाद में ले आयेंगी। फिर वे बच्चे के साथ अदृश्य हो जाती हैं।

इस दुर्भाग्यपूर्ण कहानी में जो बच्चा बचता है, वह है भीष्म, जिसका जीवन अंत में काफ़ी दुखद होता है। उसकी शादी नहीं होती, बच्चे नहीं होते, वह राजा भी नहीं बनता

और उसकी बहुत दर्दनाक मौत होती है। अपने आखिरी क्षणों में, जब भीष्म तीरों के बिस्तर पर लेटे होते हैं, तो गंगा का दिल दुखी हो जाता है जबकि उन्हें मालूम है कि यही उनकी किस्मत में था। वे जन्म और मृत्यु के तथ्यों को जानती हैं फिर भी माँ का दिल भर आता है, और वे अर्जुन को श्राप देती हैं कि उनका बेटा उन्हें वैसे ही मारेगा जैसे उसने भीष्म, उसको पालने-वाले पिता को मारा है। अर्जुन वो अकेले जने हैं जिसे गंगा ने श्राप दिया – एक आवेशपूर्ण देवी ने।



15

## गीता

**कहते हैं गीता हिन्दू धर्म का सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ है। क्या यह कहना सही होगा?**

जब हम गीता की बात करते हैं, तो हमारे मन में आता है भगवत गीता, जो कृष्ण ने अर्जुन को सुनाई थी। लेकिन पुराणों में और महाभारत में ही कई गीताएँ हैं। जैसे महाभारत के युद्ध के पहले एक व्यास गीता है। जब एक व्यास, एक कसाई ने एक ऋषि को गीता सुनाई। फिर शान्ति पर्व में एक पिंगला गीता है जिसमें एक वैश्या, ज्ञान दे रही है, और एक विचक्षण गीत है जहाँ एक राजा ज्ञान दे रहा है। तो अलग-अलग प्रकार की गीता हैं। गीता का सीधा मतलब है एक बात-चीत जहाँ ज्ञान की बातें हो रही हैं। यह एक छंद में लिखी गई है जिसका नाम अनुस्तुभ छंद है जो पढ़ते समय संगीत की तरह लगता है। गीता गीत से आती है।

**तो गीता इतनी महत्वपूर्ण कैसे हो गई समय के साथ?**

गीता को महत्त्व ब्रिटिश ने दिलाया है क्योंकि ईस्ट इंडिया कंपनी ने गीता का पहली बार अंग्रेजी में अनुवाद किया था, 200 साल पहले। इसके पहले गीता का अनुवाद कभी नहीं हुआ था। इसे संस्कृत में 2000 साल पहले लिखा गया था। लगभग 1000 साल पहले जो संस्कृत के आचार्य थे जैसे आदि शंकराचार्य, रामानुजन, माधवाचार्य, वल्लभाचार्य – इन्होंने गीता के ऊपर व्याख्यात्मक-निबंध जिन्हें भाष्य कहते हैं, लिखे। ये भी संस्कृत में थीं जो केवल ब्राह्मणों की भाषा थी।

चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी के जो भक्ति आंदोलन के संत थे, उन्होंने गीता के ज्ञान को सरल कर के लोकभाषा में, लोकसंगीत के माध्यम से लोगों तक पहुँचाया। जैसे ध्यानेश्वर मराठी में लिखते थे, बलराम दास उड़िया में लिखते थे, अन्नामाचार्य तेलगु में लिखते थे, इत्यादि। लेकिन, चार्ल्स विल्किनस नामक एक लेखक ने पूरा अनुवाद किया। उन्हें यह बहुत पसंद आई और कारण बहुत ही दिलचस्प है। वेदों में कई देवी-देवताएँ हैं तो उनको लगा कि हिन्दू-धर्म बहुदेववादी और प्राचीन है। गीता में केवल एक भगवान का नाम लिया जाता है, तो उन्हें यह अद्वैवादी लगा – तो उन्होंने कहा शायद गीता बाइबल जैसी है, शायद हिंदुओं के लिए यही ग्रंथ ठीक है। तो उन्होंने इसका अनुवाद किया।

मगर उसके बाद भारत जब आजादी की लड़ाई लड़ रहा था, तो हमारे नेताओं ने गीता पढ़ी, पहली बार। उन्हें लगा कि इतना सुन्दर ग्रंथ हमारे देश को जोड़ सकता है। गाँधी को लगा कि इसमें अहिंसा का ज्ञान है। लोकमान्य तिलक ने कहा कि हमें धर्म युद्ध का ज्ञान इससे मिलता है। अम्बेडकर और डी. डी. कौसाम्बी, जो एक स्कॉलर

थे – उन्होंने देखा की गीता में जाति-प्रथा के बारे में सविस्तार लिखा है। तो उन्होंने उसे किरटसाइज किया। गीता का कई ऐसे लोगों ने विश्लेषण किया, समीक्षाएं लिखीं। और इन सब वजहों से हमें लगता है कि गीता इतनी महत्वपूर्ण है। पिछले 300-400 सालों में, गीता को बहुत महत्व दिया गया है। जैसे किश्चैनिटी में बाईबल है, इस्लाम में कुरान है, वैसे ही हिन्दुओं के ग्रंथ के लिए लोग कहते हैं कि गीता है।

**गीता की संरचना के बारे में बताइए।**

गीता में 700 छंद हैं और अट्ठारह अध्याय हैं। अट्ठारह का अंक यहाँ दिलचस्प है, क्योंकि महाभारत में भी अट्ठारह अध्याय हैं, गीता में भी हैं। महाभारत का युद्ध अट्ठारह दिनों में लड़ा गया जिसमें अट्ठारह फौजें शामिल थी – सात पांडवों की और ग्यारह कौरवों की। अट्ठारह बार-बार क्यों आता है यह हम जानते नहीं पर विचार कर सकते हैं इस पर। एक वजह हो सकती है, कि गीता में कृष्ण हमारे शरीर को नवद्वारपुर कहते हैं, नौ द्वारों की जगह – दो आँखें, नाक, दो कान, मुँह, गुप्तांग और मलद्वार या गुदा। कोई भी रिश्ता अगर होता है दो लोगों के बीच, तो नवद्वार से अट्ठारह द्वार बन जाते हैं। अगर आप गीता पढ़ रहे हो तो आपको इस रिश्ते के बारे में सोचना चाहिए।

**गीता का वेदों के साथ कुछ सम्बन्ध है?**

कहते हैं कि वेद जो हैं वह घास जैसे हैं और उपनिषद् गाय हैं, जो घास को चरती हैं। कृष्ण ग्वाले हैं, वे दूध निकालते हैं। यह दूध है गीता जो वे अर्जुन को देते हैं। तो ऐसा कह सकते हैं, कि भगवत गीता वेदों का सार है।

**गीता का सार क्या है?**

मैं आपको एक यात्रा में ले जाता हूँ इस सवाल के जवाब के लिए। धृतराष्ट्र प्रश्न पूछ रहे हैं कि कुरुक्षेत्र में क्या हो रहा है: 'धर्म क्षेत्र में, इस धर्म की धरती में क्या हो रहा है? वे पूछते हैं मेरे बच्चों और पांडू के बेटों के बीच क्या हो रहा है? यह बहुत दिलचस्प है क्योंकि वे अपने बेटों को अपना कहते हैं और अपने भाई के जो बेटे हैं, उनको वे अपना नहीं कहते। वो कहते हैं – 'पांडू के बेटे'। तो अपने और पराए का सीमांकन वहीं से शुरू हो गया। संजय उत्तर देता है – संजय जो उनका सार्थी है, नौकर है और उसको दिव्यदृष्टि दी गई है, जिससे वह युद्ध का सारा दृश्य देख सकता है – वो बताता है कि दुर्योधन क्या कह रहा है। दुर्योधन की भाषा सुनने से लगता है कि वह बेचैन है। उसके पास ग्यारह फौजें हैं, उसके पास द्रोणाचार्य हैं जो उसके बगल में खड़े हैं, भीष्म हैं, कर्ण है – फिर भी वह बेचैन है। पांडवों को और उनकी तैयारी को देख के। मतलब स्ट्रेंथ के होते हुए भी आप इन्सिक्योर हो, परेशान हो। उसके बाद अर्जुन की बात आती है। जब अर्जुन कौरवों को देखता है तो उसके मन में एक भाव आता है कि सब उसके परिवार के सदस्य हैं।

वह कौरवों और पाण्डवों के बीच में खड़े होके देखता है कि 'इस तरफ भी मेरा परिवार है और उस तरफ भी मेरा परिवार है'। ये भी अपने हैं और वे भी, पराए तो कोई नहीं, और हम लड़ रहे हैं? धृतराष्ट्र को लगता है 'अपने-पराए' और अर्जुन को लगता है, 'अपने-अपने' इसलिए उसे गीता का ज्ञान मिलता है क्योंकि वह प्रश्न करता है कि यह दायरा, यह सीमांकन कहाँ से आया? वह कहता है कि मैं परिवार को

ही मारू तो फिर धर्म कहाँ रहा? ऐसे लड़ाई हम कैसे लड़ सकते हैं? उसे विचार आता है कि कुछ तो ग़लत है। यह समझने के लिए वे कृष्ण के पास जाते हैं।

कृष्ण पहले उसे बहुत साधारण तरीके से बताते हैं – कौरवों ने तुम्हारी ज़मीन ले ली, तुम्हारी पहले पत्नी पर उन्होंने अत्याचार किया, तुमसे ठीक से व्यवहार नहीं किया, शास्त्र की कोई बात नहीं मान रहे हैं, इत्यादि। अर्जुन नहीं मानता। वह कहता है, छोड़ दो, लोग वैसे ही मरने वाले हैं – मैं नहीं मार सकता इन लोगों को, यह सही नहीं है। इसके बाद कृष्ण का बताने का तरीका बदल जाता है। वे अर्जुन को मनाना शुरू करते हैं पर उनके सब तर्क, गुहार और यहाँ तक कि अर्जुन को नपुंसक कहना भी उसे नहीं हिलाता। फिर दूसरे अध्याय से, कृष्ण की वाणी बदल जाती है। वे कहते हैं, कोई यहाँ मरने वाला नहीं, हर जना अमर है। अर्जुन समझ नहीं पाते। कृष्ण कहते हैं जीवन और मृत्यु माया है। फिर वे विस्तार से बताते हैं। आत्मा को कभी किसी हथियार द्वारा काटा नहीं जा सकता, ना उसे जलाया जा सकता है, ना पानी से गीला किया जा सकता है ना हवा में उड़ाया जा सकता है। हम जो देखते हैं उसे सच मान लेते हैं। पर सत्य बहुत विशाल है। वह क्षितिज, जिसे हम देख सकते हैं, उसके भी आगे है – ऐसी दुनिया जिसके बारे में हमें कुछ मालूम नहीं। हम जानते हैं कि यह जीवन, हमारा यह जीवन ही एक है। जैसे कि हम दावा करते हैं कि हम दुनिया को बदल देंगे अपने जीवन में। कृष्ण कहते हैं कि वह कभी नहीं हो पायेगा। ज़िन्दगी एक बहती हुई नदी की तरह है जिसमें आप भी बह रहे हो। इस बात से कृष्ण कहानी का स्वरूप बदल देते हैं।

फिर वे कर्म पर आ जाते हैं। दो शब्द जो यहाँ ज़रूरी है – यज्ञ और योग। यज्ञ का मतलब है, लेन-देन का रिश्ता। जीवन में, आपको लेना और देना पड़ता है, और अगर आप जान-बूझ कर नहीं कर रहे हैं, तब भी लेन-देन चल रहा है। योग संबंध है और वियोग संबंध का टूटना है। तरह-तरह के संबंध हैं अलग-अलग चीजों के बीच – एक व्यक्ति का दूसरे से, एक व्यक्ति का उसके दिल, दिमाग, शरीर से, इत्यादि। तो अंदर की आत्मा का बाहर के साथ संबंध है। जीवात्मा अंदर है और परमात्मा बाहर। जीव स्वयं है और पर दूसरे हैं। यह कहानी अपने और परायों के बारे में है। अगर तुम भागते हो, तो तुम परमात्मा से भाग रहे हो। अर्जुन अब बेचैन हो जाते हैं और कहते हैं कि मन पर किसी का वश नहीं। अगर मैं कोशिश भी करूँ तो, वो कहते हैं, कुछ समय बाद वह फिर से छूट जायेगा।

उनको बेचैन देख के कृष्ण अपनी वाणी फिर बदल लेते हैं – अचानक पिता के जैसे जो अपने डरे हुए बच्चे से बात कर रहे हैं। भावुक हो जाते हैं और भगवान के बारे में बताने लगते हैं कि जब तुम्हारा कोई सहारा नहीं होगा तो भगवान तुम्हारा सहारा हैं। तो अर्जुन जो भयभीत हैं और किनारा देख रहे हैं, उनके लिए वो नाव बनके आते हैं। भगवान कहते हैं ‘डरो मत, जो भी हो मैं हूँ तुम्हारे साथ।’ अर्जुन पूछते हैं ‘मैं तुम्हारे साथ हूँ का मतलब? उस समय कृष्ण अपना विराट स्वरूप दिखाते हैं। यहाँ, गीता में पहली बार, बीच में, भगवान के बारे में है। यहाँ विवरण सविस्तार और बेहद खुबसूरत है – कृष्ण कहते हैं, ‘मैं पहाड़ हूँ, भूत हूँ, तत्व हूँ, चर हूँ, अचर हूँ, देव, असुर, राजा, रंक – मैं सब कुछ हूँ।’

गीता का जो बीच का हिस्सा है वह खास तौर पे घबराए हुए आदमी को साहस

देने के लिए है। ज्ञान तो कोई भी दे सकता है – यह करो, वह करो, मगर जो डरा होता है, जब तक उसे साहस नहीं दोगे, वह कोई कर्म नहीं कर सकता। बातें करते-करते कृष्ण को यह समझ आ जाता है कि अर्जुन बहुत घबरा गया है, और फिर वे उसे आत्मविश्वास दिलाते हैं कि मैं खड़ा हूँ तेरे संग तू कुछ भी कर सकता है। यह आजकल की तरह नहीं है जहाँ पहले से ही सिखना शुरू कर देते हैं। अर्जुन शांत हो जाता है, तभी वे ज्ञान देते हैं। और उनका वार्तालाप बहुत गूढ़ होता है।

किसी भी और प्राणी से अलग है मनुष्य क्योंकि जानवर अन्न के लिए दौड़ता है लेकिन मनुष्य अर्थ के लिए दौड़ता है। कृष्ण कहते हैं हम एक गलती कर देते हैं। हमें बाहर से किसी की मान्यता की ज़रूरत नहीं है। हमारे अंदर ही अर्थ है क्योंकि हमारे अंदर आत्मा है। मगर हम इसको भूल जाते हैं और हम दूसरों के नज़रिये से खुद को देखने लग जाते हैं। फिर ‘अहं’ का जन्म होता है क्योंकि आप दूसरे से तारीफ़ चाहते हो, आदर चाहते हो। हम इस इंद्रजाल में फँस जाते हैं।

कृष्ण अर्जुन से कहते हैं, ‘जब तक तुम बाहरी दुनिया से मान्यता चाहोगे, कि बाहरी दुनिया कहे—“अर्जुन वाह! वाह!” और यह कि तुम उसके लिए लड़ रहे हो, तो सब व्यर्थ है। मगर, अगर तुम मन की शान्ति के लिए यह सब कर रहे हो, फिर कर ली जो भी काम करना है। तो तुम यह युद्ध क्यों नहीं करना चाहते कि लोग कहेंगे कि तुमने परिवार को मारा, इसलिए? मगर जो होना है वह होगा, तुम्हें मरना है तो तुम मरोगे और अगर उनको मरना है तो वे मरेंगे। जीत-हार की भी गारंटी नहीं है। तुम परेशान क्यों हो? तुम पूरी तरह से सही हो ही नहीं सकते। कोई भी नहीं हो सकता, मैं भी नहीं। किसी की वाह-वाह के पीछे मत भागी। कर्म करो।’

**क्या कृष्ण ने अर्जुन को सीधा कहा कि कौरवों को मार दो?**

नहीं। कृष्ण ने यह कभी नहीं कहा। एक श्लोक है, ‘यथेच्छसि तथा कुरु’, जैसा तुम चाहो, वैसा तुम करो। हिन्दू धर्म में कभी अनुदेश नहीं दिया जाएगा कि यह करो। कर्म तुम्हारा है। इसका मतलब यह है कि किर्या भी तुम्हारी है, और उसकी प्रतिकिर्या भी तुम्हारी है – तुम्हें ही भुगताना पड़ेगा, तुम्हारी ही ज़िन्दगी है। दूसरे की सलाह माने नहीं रखनी चाहिए। महाभारत में हम देखते हैं कि कृष्ण एक राजनीतिज्ञ की तरह हैं जो दूसरों को चालाकी से मनाते हैं। पर लोग नहीं देखते कि अन्त क्या हुआ – कुरु वंश का पूरी तरह से ध्वंस होता है, पांडवों के सभी पुत्र मारे जाते हैं, और यदु वंश का भी नाश होता जाता है। इससे कृष्ण को क्या मिलता है? यह तो होना ही था।

गीता इस बारे में है कि अर्जुन को समझाया जा सके कि युद्ध क्यों लड़ रहे हो? जैसे दो कुत्ते हड्डी के लिए लड़ते हैं, वैसे ही कौरव और पांडव भी लड़ रहे हैं, ज़मीन के लिए। अगर पांडव नहीं लड़ेंगे, तो खाएंगे क्या यह युद्ध जान बचाने के लिए है। इसलिए उनके लिए यह धर्म युद्ध है, कौरवों के लिए यह अधर्म युद्ध है, क्योंकि वे सिर्फ़ घमण्ड और ताकत के लिए लड़ रहे हैं। यह उनकी घबराहट है जिसकी वजह से वे ये सब कर रहे हैं। पर कृष्ण यह सब नहीं बताते हैं। वे अर्जुन को इस बारे में सोचने देते हैं। हिन्दु धर्म में कभी सीधे अनुदेश नहीं होते। वेदों में यह बार-बार कहा जाता है कि सारी ज़िम्मेदारी आपकी है – आप किसी को नहीं कह सकते। आप इस दुनिया में अकेले आए हो, आप अकेले ज़िओगे और अकेले मरोगे, और अमर भी अकेले ही होगे।

**गीता की कोई ऐसी कहानी बताइए जो कम ही लोगों को पता होगा।**

अश्वमेध पर्व है महाभारत का, युधिष्ठिर अश्वमेध यज्ञ करते हैं, और राज्य में अपना अधिकार स्थापित कर लेते हैं। कृष्ण सबको ज्ञान देते हैं और उनके जाने के समय अर्जुन आके कहते हैं कि आपने जो मुझे युद्ध के पहले बताया था वह मुझे याद नहीं। यह एक तरह से मजेदार है क्योंकि यह दिखाता है कि सब मनुष्य हैं। कृष्ण भी अर्जुन से ज्यादा आशा नहीं रखते क्योंकि उनके लिए वह बछड़े जैसा है। इसलिए कृष्ण को कभी-कभी गाय भी कहते हैं, और दयानेश्वर गीता में उन्हें विट्ठाई कहते हैं। मराठी में प्रभु विट्ठल कहते हैं, तो विट्ठाई का मतलब है माँ कृष्ण। वे माँ के जैसे बार-बार समझाते हैं और समझाते रहेंगे, अर्जुन को भी। जैसे इस देह के जाने के बाद दूसरी देह जन्म लेगी, वैसे ही कृष्ण गीता का उपदेश देते रहेंगे। शायद किसी समय में समझ आएगी या मोक्ष मिलेगा, जल्दी नहीं है। समय सनातन

**गीता संस्कृत में लिखी गई मगर बिना संस्कृत के ज्ञान के बिना क्या हम गीता का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं?**

ज्ञान की कोई भाषा नहीं होती, ज्ञान निर्गुण होता है, भाषा सगुण होती है। भाषा एक पात्र की तरह है जिसमें पानी डालते हैं। एक अच्छा पात्र आपको पानी पे अच्छी पकड़ देता है। पर आपको तो अन्त में पानी चाहिए, पात्र नहीं। ज्ञान पर ध्यान दो, भाषा पर नहीं।

**गीता में सबसे दिलचस्प सिद्धांत क्या है?**

मुझे लगता है योग का सिद्धान्त। योग का मतलब है संबंध। कैसे मनुष्य एक-दूसरे से जुड़ते हैं। महाभारत में कोई नायक नहीं है ना कोई खलनायक। वे सब मनुष्य हैं, अपनी घबराहट की वजह से ऐसे करते हुए। कुछ अच्छे कर्म हैं, कुछ बेहतर। पर जब आप योग के सिद्धांत और उनके संबंध के बारे में सोचते हो, तो आप उनकी आलोचना नहीं करते, उनकी कमियों के बावजूद उन्हें पहचानते हो। यह ज्ञान आपका है।



16

## तीर्थ यात्रा

**भारत में लोग तीर्थ यात्राओं पे क्यों जाते हैं? इसका महत्व क्या है?**

भारत में ही नहीं, सब जगह लोग तीर्थ यात्राओं पे जाते हैं। हर धर्म में तीर्थ यात्रा का सिद्धांत होता है और इसकी शायद एक साइकोलॉजिकल रीज़न, मानसिक वजह है। हमारी कृषि प्रधान सभ्यता है तो लोग एक ही गाँव में रहते हैं, पूरी ज़िन्दगी उस गाँव में बिताते हैं, तो शायद तीर्थ यात्रा के माध्यम से, जो ऋषि, मुनि हैं, वो बढ़ावा देना चाहते थे, लोगों को कि वे दुनिया देखें और अपनी सोच बढ़ाएं। क्योंकि जब हम यात्रा करते हैं तो नए-नए अनुभव होते हैं और समझ बढ़ती है। हर धर्म में यात्रा होती है। जैसे मुसलमानों में हज होता है।

जैसे ब्रह्मचर्य एक यात्रा होती है जिसमें बच्चे गुरुकुल जाते हैं गुरु से सीखने के लिए। यह बोर्डिंग स्कूल की तरह होता है जहाँ वे तब तक रहते हैं जब तक उनका दिमाग ना खुल जाये। वानप्रस्थ आश्रम में बूढ़े लोग अपना घर छोड़कर, वन में जाके रहते हैं या फिर सन्यास लेकर तीर्थ यात्रा पे जाते हैं। क्योंकि वापस घर नहीं आएंगे, वो वहाँ जाएंगे गृहस्थ जीवन को बिल्कुल छोड़, त्याग के जा रहे हो। तो यात्राएं अलग-अलग प्रकार की होती हैं, शादी के समय एक यात्रा होती है लड़की के लिए क्योंकि वह डोली में जाती है। कहते हैं उसकी दूसरी यात्रा होगी, शमशान भूमि तक। तो यह व्यवस्थित संसार है, जिससे बचने के लिए तीर्थ यात्रा बनी। संस्कृत में एक शब्द है कूप मंडूक = कुँए का मेंढक। हम सब कुँए के मेंढक होते हैं, हम सबको लगता है हमारी दुनिया ही दुनिया है, लेकिन जब आप यात्रा करते हैं तो आपको लगता है कि नहीं! दुनिया बहुत अलग है।

सामवेद को दो भागों में बांटा गया है, दो प्रकार के गाने होते हैं – एक ग्राम के गाने और एक है अरण्य के गाने, मतलब जंगल के गाने। ग्राम के गाने हमेशा कहते हैं कि ग्राम से जंगल को जाओ और वापस आ जाओ। यहाँ जंगल में जाने का मतलब है, ऐसी जगह जाना जहाँ पे कुछ भी कंट्रोल में नहीं है। कुछ भी व्यवस्थित नहीं है। कोई नीति नहीं है, नियम कानून नहीं है। मतलब ऐसी दुनिया में जाओ जहाँ आपको एक नया अनुभव हो और आपको पता चले कि प्रकृति क्या है, और आप वापस आ जाओ। बौद्ध चरित्र में बुद्ध जीवन के सवालों के लिए यात्रा पर जाते हैं। सिद्धार्थ गौतम एक राजकुमार जाता है और बुद्ध लौटता है। वैसे ही रामायण में भी यात्रा होती है। राम जंगल जाते हैं। बनवास के लिए लेकिन यह भी एक प्रकार की यात्रा है। महाभारत में भी यात्रा है, तो यात्रा की कहानी सब जगह पर होती है।

**हमारे शास्त्रों में तीर्थयात्रा का जिक्र है?**

हाँ, बहुत है। जब महाभारत में पांडवों को बनवास दिया गया था, तेरह सालों का तो वे सोचते हैं, कि वे क्या करेंगे, जंगल में। वे चिंतित हैं कि बोर हो जायेंगे। तो कृष्ण कहते हैं कि तीर्थ यात्रा पे जाओ। और यहाँ पहली बार तीर्थ यात्रा का वर्णन है जब महाभारत लिखी गई 2000 साल पहले। हमारे शास्त्र कहते हैं पहाड़ों पे जाओ, या नदियों, कुन्डों के पास जाओ – बस यात्रा करते रहो। तो पांडव शायद सबसे पहले तीर्थयात्री थे।

### तीर्थ का मतलब क्या होता है?

आजकल जब तीर्थ शब्द का इस्तेमाल करते हैं तो मतलब है, पानी, जिससे भगवान का अभिषेक करते हैं। तो अभिषेक से बचा पानी, जो भक्तों को देते हैं, उसे तीर्थ कहते हैं। मगर तीर्थ का एक और गहरा मतलब है। नदी के दो तट होते हैं। एक तट से दूसरे तट तक जाने के लिए आपको नाव लेनी पड़ती है। लेकिन कभी-कभार, नदी बहुत उथली होती है, तब आप चल के जा सकते हो। इसको तीर्थ कहते हैं। इंगलिश में आप इसे 'फोर्ड' करना कहते हैं। तीर्थ का फिर मतलब है – इस पार से उस पार तक जाना बिना किसी मदद के। तो यह एक फिजिकल कॉन्सेप्ट, परिश्रम का सिद्धांत है। शायद जो ऋषि-मुनि होते थे, वो तीर्थ ढूँढते थे ताकि वे उस पार जा सकें। मगर दिमागी तौर पर इसका मतलब है – निर्गुण की स्थिति में जाना। जहाँ पे नाम नहीं है, आत्मा की दुनिया है, जहाँ रूप नहीं है, परमात्मा की दुनिया है। जैन मत में उनके भगवान, जिन्हें वे मानते हैं, उनको तीर्थंकर कहते हैं। तीर्थंकर का मतलब है, वो जो तीर्थ ढूँढ लेता है और इस सांसारिक जीवन से, पुर्नजन्म वाले जीवन से मुक्ति प्राप्त करता है, वह रास्ता भी दिखाता है। आजकल हम जब तीर्थ कहते हैं तो तीर्थ एक जगह है उसका मतलब कोई मंदिर, कोई पहाड़ जहाँ पे लोग पूजा करने जाते हैं अपनी आस्था के लिए। उसे व्यक्त करने के लिए, तो हम उसे तीर्थ कहते हैं। मगर जो सही मतलब है, वो यह है।

### विष्णु के चार धामों के बारे में बताइए।

1000 साल से चार धाम का जो कॉन्सेप्ट है, वह बहुत ही लोकप्रिय हो गया है। आदि शंकराचार्य जो वेदान्त के बहुत बड़े गुरु थे, उनका हिन्दू धर्म को स्थापित करने में बहुत बड़ा योगदान था। उन्होंने ही चार धाम मठ बनवाए थे भारत के चार कोनों में। एक है। बद्रीकापुरी जो हिमालय में है, और वहाँ पे कहते हैं कि विष्णु नर-नारायण के रूप में तपस्या करते हैं। 'बद्री' का मतलब है बेर का पेड़, तो बेर के नीचे उन्होंने नर-नारायण के रूप में तपस्या की थी। दूसरा धाम है पुरुषोत्तम क्षेत्र जिसे हम आज कल जगन्नाथ पुरी कहते हैं। यह उड़ीसा में है जहाँ जगन्नाथपुरी का बहुत बड़ा मन्दिर है, वहाँ विष्णु भोग लेते हैं। वहाँ पे दुनिया का सबसे बड़ा प्रेशर कूकर है। वहाँ रोज़ हज़ारों मटकों के से आनंद बाजार में बेचा जाता है। साउथ में फिर, तमिलनाडु में रामेश्वरम् है, जहाँ विष्णु नहाते हैं। चौथा है पश्चिम में, द्वारका गुजरात में, जहाँ विष्णु राजा है। तो ये है चारों धाम विष्णु के।

### शिव के बारह ज्योर्तिलिंगों के बारे में बताइए।

हर गाँव में शिवलिंग होता है, गाँव के बाहर, शमशान के बगल में, कोई मन्दिर जरूरी नहीं होता। शिव तो बैरागी हैं। लेकिन भारत में ऐसे बारह स्थान आदि शंकराचार्य ने

पहचाने हैं जहाँ शिव के 'स्वयंभू रूप' दिखाई दिये। पुराणों में कहते हैं कि शिव एक अग्नि स्तम्भ के रूप में प्रकट हुए थे पहली बार, अपने भक्तों के सामने। उत्तराखण्ड में है केदारनाथ, बदरीनाथ, काशी विश्वनाथ, उत्तर प्रदेश में, उज्जैन के पास महाकालेश्वर, महाराष्ट्र में त्र्यम्बकेश्वर और भीम शंकर। आन्ध्र प्रदेश में श्रीसैलम है जहाँ मलिकार्जुन के रूप में शिव को माना जाता है और तमिलनाडु में रामेश्वरम। ये तो हैं मगर और भी बड़े-बड़े मन्दिर हैं। मुम्बई में बाबुलनाथ है, दिल्ली में भैरव मंदिर है। तो ऐसे शिव के कई मंदिर हैं, लेकिन ये बारह ज्योतिर्लिंग, आदि शंकराचार्य ने निर्धारित किये शिव के महत्वपूर्ण पाईन्ट्स, जैसे चार धाम वैष्णव मत के लोगों के लिए हैं।

**देवी माँ के भक्तों के लिए फिर शक्ति-पीठ हैं?**

हाँ। एक कहानी यह है कि दक्षप्रजापति की एक बेटी थी जिसका नाम था सती और उसका विवाह शिव के साथ हुआ था। दक्षप्रजापति और शिव में बहुत अनबन थी क्योंकि दक्षप्रजापति बहुत कड़े नियम और अनुष्ठान वाले थे और शिव ये सब नहीं मानते क्योंकि वे वैरागी थे। दक्षप्रजापति उनको पसन्द नहीं करते थे। एक समय उन्होंने यज्ञ किया पर शिव को नहीं बुलाया। सती को बहुत बुरा लगा कि उनके पिता यज्ञ कर रहे हैं, सभी देवी-देवताओं को बुला रहे हैं, मगर मेरे पति को नहीं बुला रहे। सती इतनी दुखी हो गई कि उन्होंने अग्नि को बुलाया और अपने आप को भस्म कर लिया। शिव को जब यह पता चला तो उनको बहुत गुस्सा आया और वे यज्ञ शाला को विध्वंस कर देते हैं, और दक्षप्रजापति का सर काट देते हैं। पर फिर वे जब शांत हो जाते हैं तो दक्ष को वह एक नया सर देते हैं। उसके बाद वे सती के मृत शरीर को कंधे पर उठा के चारों ओर ब्रह्माण्ड में घूमते रहते हैं, रोते हुए। यह पहली बार है जब शिव दर्द महसूस करते हैं।

धरती पर जीवन रुक जाता है। विष्णु कहते हैं कि ऐसा नहीं चलेगा। जो भी आता है वह जाता भी है। तो उन्होंने कहा कि शिव सती का शरीर लेकर घूम रहे हैं। वे दुखी हैं – तो मैं यह शरीर ही खत्म कर देता हूँ। फिर उन्होंने सुदर्शन चक्र छोड़ा और सती के शरीर को कई खंडों में काट दिया। वे खंड भारत के अलग-अलग जगहों में गिरे, और जहाँ गिरे उसे शक्तिपीठ कहा जाता है। जैसे कोलकता में उनका पैर गिरा, ज्वालामुखी हिमाचल प्रदेश में जीभ, तारा तारिणी मंदिर पूर्व, दक्षिण और पश्चिम में हैं – कहीं हाथ है, कहीं पैर है – नैनादेवी में उनकी आँखें हैं। शायद यह मानना है कि भारत सती का खंडित शरीर है और उनका कुछ न कुछ हर जगह है।

यह एक दिलचस्प थीओरी है कि ब्रिटिश लोगों ने इंडिया का मैप बना दिया और एक राष्ट्र बनाया। मगर यह बिल्कुल सही नहीं। तीर्थ यात्रियों ने भारत को जन्म दिया इसमें चल-चल कर। हमारा देश तीर्थों से जुड़ा हुआ है। जहाँ तीर्थ होते थे जैसे मन्दिर, कुण्ड, पहाड़, संगम होगा (जैसा काशी) के पास, वहाँ पर नगर बस गए धीरे-धीरे। इन शहरों में बाज़ार खुल गये जहाँ व्यापारी आये, जिनका मनोरंजन करने के लिए नट आये, स्ट्रीट परफॉर्मर्स, वेश्याएं आई, इत्यादि। ये जगहें साम्प्रदायिक केन्द्र बन गईं जहाँ समय-समय पर लोग इकट्ठे होते थे अलग-अलग जगहों से। इन नगरों के स्थाई रहने वाले होते थे पंडित और वेश्याएं। तो हमारा देश इन यात्राओं से

बना है।

### गणेश के लिए कोई तीर्थयात्रा है?

गणेश की यात्रा महाराष्ट्र में बहुत फेमस है, जिसको अष्टविनायक कहते हैं। आठ गणपति हैं यहाँ। सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में पेशवा साम्राज्य था, पेशवाई जिसको कहते हैं और उनके जो इष्ट देवता थे वे गणेश थे। पूना उनकी राजधानी थी जिसके आस-पास ये आठ गणपति हैं जो बहुत ही प्रसिद्ध हैं और कहते हैं कि यहाँ जाने से आपकी मन्नत पूरी हो जाती है।

जैसे चार धाम, ज्योतिर्लिंग, या शक्तिपीठ हैं और बहुत जाने-माने हैं वैसे ही – हर प्रांत में बहुत फेमस होती हैं कुछ यात्राएं जैसे अष्टविनायक महाराष्ट्र में। एक और यात्रा बहुत फेमस है, जो वैष्णव जैसे दयानेश्वर और तुकाराम ने शुरू की। वे महाराष्ट्र धर्म के थे और उन्होंने वरकरी सम्प्रदाय की शुरुआत की थी। हज़ारों की संख्या में हर साल लोग पंद्रपुर जाते हैं, जहाँ पे कृष्ण को विट्ठल के रूप में पूजा जाता है। वहाँ लोग जाते हैं हर साल चौमासा के समय, बारिशों में।

ऐसी कोई तीर्थयात्रा है जो लोकप्रिय नहीं है, जिसके बारे में लोग ज्यादा जानते नहीं?

नॉर्थ, उत्तर के लोगों को साउथ, दक्षिण के बारे में पता नहीं होता और साउथ को नार्थ के। साउथ में तमिलनाडू में मुरुगन की यात्रा होती है। मुरुगन कार्तिकेय हैं, शिव के बेटे। पलना पहाड़ियों में उनके सात-आठ मंदिर हैं। अगर आप मलेशिया जाएंगे तो वहाँ तमिल चटीयारों ने बाटू केव (गुफ़ाओं) में मुरुगन के लिए तीर्थस्थान बनाया है। मलेशिया इस्लामिक देश है पर सैक्यूलर है। वहाँ हर साल तमिल जाते हैं थाईपूसम के त्यौहार के समय भगवान के दर्शन के लिए। कभी-कभी यात्री भी तीर्थ का निर्माण करते हैं।

जब लोग वैष्णों देवी की यात्रा पर जाते हैं तो आते समय भैरव मंदिर पर भी रूकना जरूरी है, ऐसा क्यों?

वैष्णों देवी का मन्दिर जम्मू में है और आमतौर पे देवियों को रक्त की बलि चढ़ाई जाती है। वैष्णों देवी शाकाहारी देवी हैं। यह रामायण से जुड़ी हुई कहानी है। वेदवती नामक एक स्त्री थी जो राम से शादी करना चाहती थी, राम ने कहा कि मैं एकम्पलिव्रता हूँ तो इस युग में आप से विवाह नहीं कर सकता, किसी दूसरे युग में विवाह करूंगा। तो वे वहाँ पे तप करने लगीं कि युग बदलेगा और राम नया रूप लेके आएंगे तो विवाह करेंगे। जब वह तप कर रही थीं, उनको टैस्ट करने के लिए भैरव नामक एक तांत्रिक साधू आया और कहा कि मुझे भोजन दो मैं भूखा हूँ। जब उन्होंने खाना परोसा, तो भैरव ने कहा कि, मुझे तांत्रिक भोजन दीजिए। वेदवती ने कहा कि मैं शरीरिक भोजन नहीं दे सकती क्योंकि मैं राम की हूँ। भैरव जब जबरदस्ती करने लगे तो देवी उनसे भागने लगीं। वे कई गुफ़ाओं में से भागती हैं। पर एक समय आता है कि देवी को गुस्सा आता है और वे मुड़ती हैं और भैरव का सर काट देती हैं। सर कटते समय वह क्षमा माँग लेता है, उसको पता चल जाता है कि उसने ग़लत किया है। तो देवी उसे क्षमा कर देती हैं और कहती हैं कि जब भी कोई मेरे पास आएगा, मेरे दर्शन

के लिए, वो तुम्हारे भी दर्शन करेगा।

लगभग सभी तीर्थ यात्राओं में कहते हैं कि आपकी यात्रा तब तक सफल नहीं होगी जब तक आप दूसरे मन्दिर नहीं जाओगे। तो हर मंदिर, दूसरे मंदिर से जुड़ा होता है। जैसे तिरुपति (वैष्णव परम्परा) जाएंगे तो कहेंगे कि कालाहस्ति (शैव परम्परा) में जाना ज़रूरी है। वैसे ही वैष्णव देवी का मंदिर शाक्त मत का है और भैरव शैव मत का। यहाँ अलग-अलग मत अपने-आप को दूसरे मत से जोड़ रहे हैं।

**साई बाबा की तीर्थ यात्रा कब से लोकप्रिय है?**

शिरडी के साई बाबा 100 साल पहले थे, उनकी फोटोग्राफ़ भी मिलती हैं। भारत में हम सिर्फ़ देवी-देवताओं की ही पूजा नहीं करते, गुरुओं और संतों की भी पूजा करते हैं। साई बाबा को सब धर्म के लोग मानते हैं इसलिए शिरडी के साई बाबा बहुत लोकप्रिय हो गये हैं। लोग कहेंगे कि अमर, अकबर, एंथोनि फिल्म की वजह से वे बहुत फेमस हो गए। हम कह नहीं सकते जिसके साथ भक्त का लगाव हो जाता है, वह भगवान बन जाता है। भगवान भक्त को बनाते हैं और भक्त कभी-कभी भगवान को।

**साउथ की सबरीमाला यात्रा की क्या महत्ता है?**

सबरी एक जनजाति है और मलए एक पहाड़ है। तो पहाड़ के उपर जाने की यात्रा है। यहाँ केवल पुरुष जाते हैं ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर और काले कपड़े पहनकर – ये कड़े नियम हैं। पहाड़ के उपर अट्ठारह सीढ़ियाँ हैं जो बहुत सीधी हैं। जिनके उपर चढ़ कर जाना पड़ता है। यहाँ पर अय्यपा का मंदिर है। अय्यपा का दूसरा नाम है हरीहरसूत। केरल (चेरा प्रदेश) में एक राजा था राजशेखर पंडीयन जिसके बच्चे नहीं थे। तो उन्होंने विष्णु और शिव की पूजा की। शिव ने उन्हें अपना पुत्र दे दिया हरीहरसूत। राजा ने उस बच्चे को दो नाम दिये – अयप्पन और मनोकदन और जब वह बच्चा घर में आता है तो उसके बाद रानी को भी बच्चा हो जाता है। रानी अपने बच्चे को ज्यादा पसन्द करती हैं। वे योजना बनाती हैं अयप्पन को मार देने की। वह कहती हैं मुझे बुखार है और मुझे दूध शेरनी का चाहिए। बेटा कहता है ठीक है, मैं लेके आता हूँ। और जब वह जंगल जाता है तो वहाँ से शेर पर बैठ दूध लेकर आता है। जंगल में वह महीषी राक्षसी को भी मार देता है। प्रजा कहती है कि उसे राजा बनाओ, मगर उसे पता है कि उसकी माँ ऐसा नहीं चाहती। तो वह कहता है कि मैं राजा नहीं योगी बनूँगा। मुझे राज्य, पैसा, स्त्री, में से कुछ भी नहीं चाहिए और इस पहाड़ के ऊपर मैं योगी के रूप में बैठूँगा। सबरीमाला वह पहाड़ है और वहाँ पे हर साल लोग तीर्थ के लिए जाते हैं।

**कांवड़ यात्रा के बारे में बतायेंगे?**

कांवड़ यात्रा श्रावण के महीने में होती है जब गाँव के लड़के गंगा तट पे जाते हैं, गंगा का पानी लाते हैं घड़े में और कावड़ में, और अपने घरों में शिवलिंग के उपर वे गंगा का पानी चढ़ाते हैं। घड़ों को एक बांस के दोनों ओर बांधा जाता है और कंधे पर रखा जाता है। आपने श्रावण कुमार की कहानी सुनी होगी जहाँ वह अपने माँ-बाप को बास्केट, टोकरियों में रखता है और एक बांस से बांधकर कंधे पर रखता है। उसे कावड़ कहते हैं। यह माना जाता है कि मटके जमीन पर नहीं छूने चाहिए। जब तक वे

मन्दिर नहीं पहुंचेगे तब तक कावड़ को ऊपर लटका दिया जाता है। बहुत-सी तैयारियाँ होती हैं उनके लिए जहाँ पर वह कावड़ लगा सकते हैं। कावड़ को बहुत सुन्दर तरीके से सजाया भी जाता है। झंडे लगाते हैं, धागे लगाते हैं और चमक भी लगाते हैं। साउथ इंडिया में भी कावड़ यात्रा बहुत फेमस है, मुरुगन के लिए। वहाँ पर वे मोर का पंख लगाते हैं कावड़ पर।

कावड़ गृहस्थी का चिन्ह है। और यह मानते हैं कि शिव को यह कहा जा रहा है कि आपको दुनिया का बोझ उठाना ही पड़ेगा।



17

## भगवान और भोजन

**हमारी संस्कृति में अन्न को इतना महत्व क्यों दिया जाता है?**

योग-शास्त्र में हमारे शरीर को अन्नकोश कहते हैं जिसका मतलब है कि मांस अन्न से बनता है। हमारा मांस दूसरे जानवरों के लिए खाना बन जाता है। सब जीवित प्राणियों को अपने अन्नकोश के लिए अन्न चाहिए होता है। पौधे तत्वों को खाते हैं, खासकर पाँच बड़, पंचमहाभूतों को, और सूर्य की रोशनी और पानी को। पौधों को जानवर खाते हैं, जिन्हें फिर दूसरे पशु खाते हैं। इन्सान दोनों पशुओं और पौधों को खाते हैं। इस अन्न और खाने की प्रक्रिया से जीवन चलता है, जीवन, जीवन को खाता है।

उपनिषदों में खाने को काफ़ी महत्व दिया गया है। बिना भोजन दुनिया नहीं रह सकती। हम आत्मा के बारे में बात कर सकते हैं, बड़ी-बड़ी बौद्धिक और आध्यात्मिक बातें कर सकते हैं, पर सबसे व्यावहारिक सतह पर, 'अन्न ही सत्य है'। इस बात को इतना महत्व हमें जीवन के बारे में समझाने के लिए दिया गया है। अन्न को ब्राह्मण कहते हैं, उसी तरह जिस तरह भाषा को ब्राह्मण कहते हैं। भगवान भोजन में रहते हैं, और जो खाता है, वह भगवान है, जिसे खाते हैं वह भी भगवान है। 'भगवान जीवन है और जीवन भोजन है' मंत्र की तरह इसलिए बोला जाता है ताकि हम भोजन, अन्न के महत्व को न भूलें।

**भगवान को जब भोग चढ़ाते हैं तो हम हमेशा फल या दूध ही देते हैं। क्या फल और दूध गॉड्स का फ़ेवरेट फूड, पसंदीदा खाना है? या कोई और बात है इसके पीछे?**

इस बात को हम ऐसे ही ले सकते हैं या रूपक की तरह। धरती को वसुन्धरा कहते हैं। वसुन्धरा का मतलब है जो वसु को अपहोल्ड करती है, उठा के रखती है। तो 'वसु' का मतलब है प्लान्ट्स, वनस्पति। तो अगर धरती गाय है तो वनस्पति दूध है। वेदों में दूध को बहुत महत्व देते हैं। यज्ञों में देवताओं का आहान होता है, तो हम दूध से निकला हुआ घी अग्निदेव को डालते हैं। माना जाता है कि यह देवताओं की भूख का चिह्न है। पंचामृत में पाँच तरह के दूध होते हैं – कच्चा, उबला हुआ, मक्खन, घी और दही। गौरस, गौमूत्र भी डालते हैं, मधु और गुड़ डालते हैं, और यह सब मिक्स करके देवताओं को चढ़ाते हैं। पुराणों में कहते हैं कि भगवान विष्णु क्षीरसागर के ऊपर लेटे हुए हैं तो आप नेचर, प्रकृति को दूध के सागर की तरह देखते हैं। जो भी आपको प्रकृति से मिलता है वो दूध की तरह होता है। इसलिए भगवानों को हमेशा दूध चढ़ाते हैं।

अभी फल को देखेंगे तो कुछ कच्चे व कुछ पक्के फल होते हैं। और हर फल का अलग-अलग टेस्ट, स्वाद होता है तो फिर टेस्ट के हिसाब से अलग-अलग देवी-

देवताओं को चढ़ाते हैं। जैसे देवियों को खट्टा या तीखा फल देंगे। लक्ष्मी को आमला, नींबू और मिर्ची दिया जाएगा, लेकिन जो मीठा फल होता है, वह विष्णु को दिया जाएगा। शिव वैरागी हैं, तपस्या करते हैं तो उनको ड्राई-फ्रूट, मेवा दी जाती है। और शायद मेवा इसलिए देते हैं क्योंकि वे पहाड़ों में रहते हैं और ऋषि यदि यात्रा करते थे तो वे मेवा ले जाते थे।

### शिव और विष्णु के फेवरेट, पसंदीदा भोजन क्या हैं?

अभी इसे समझने के लिए, यह देखना जरूरी है कि शिव सांसारिक नहीं हैं वे गृहस्थ आश्रम में नहीं जाना चाहते और विष्णु, राम-कृष्ण के रूप में, गृहस्थ रूप में रहते हैं। तो शिव के मंदिर में हमेशा कच्चा दूध चढ़ाते हैं, और विष्णु के मंदिर में प्रोसेस्ड मिल्क देते हैं जैसे बटर और घी। इसका मतलब है कि शिव के लिए जैसी ये दुनिया है वैसी ठीक है, मगर जो विष्णु हैं, जो गृहस्थ जीवन में रहते हैं, उन्हें प्रोसेस करके, मैनुफैक्चर करके, बना के, उसके उत्पाद चाहिए तो वहाँ श्रम को बहुत महत्व दिया गया है। क्योंकि दूध से मक्खन निकालने के लिए, आपको बहुत मन्थन करना पड़ेगा, काम करना पड़ेगा। जब तक काम नहीं करोगे, तो मक्खन नहीं निकलेगा। विष्णु को पका खाना दिया जाता है। अन्नकूट के समय जो दिवाली के आस-पास आता है, कृष्ण को छप्पन भोग चढ़ाया जाता है। क्योंकि गृहस्थ जीवन में इसका महत्व है। उनका भोजन उनके लाइफ-स्टाइल से मैच करता है।

### यह भोग से सिर्फ देवों को लगाव है; देवियों को नहीं है?

देवियों को जो भोग चढ़ाते हैं पारम्परिक रूप से, वह बलि होता है – बकरी, भैंस, पक्षी। आज कल ऐनिमल राइट्स की वजह से यह अब इतना लोकप्रिय नहीं है पर आम तौर पे देवियों के मन्दिर में रक्त चढ़ाया जाता है। क्योंकि देवी का नाम है रक्तविलासिनी – जिसे रक्त पसंद है। यह एक रूपक है पर आप इसे ऐसे ही ले सकते हैं। भू-देवी हैं उन्हें गाय का रूप मानते हैं। जिनका दूध हमें ज़िन्दा रखता है। दूध दे रही हैं, लेकिन उनको हम क्या दे रहे हैं? काली के रूप में वो खून पीती हैं और गौरी के रूप में दूध देती हैं। तो दिस इज़ अ साइकिल ऑफ लाइफ, जैसे जीवन की प्रक्रिया है। यह दिखाने के लिए कि जब भी आप कुछ खाना खा रहे हों, आपने किसी की हत्या की है, किसी की बलि चढ़ाई है।

जैसे हम सब्जी खाएंगे तो वैजिटेबल्स कहाँ से आते हैं? फार्मस् से आते हैं। फार्म बनाने के लिए जंगल, पहाड़ और नदियों को डिस्ट्रिब्यूट किया होगा। तो वहाँ कितने जीव-जन्तुओं की हत्या हुई होगी। तो देवी हमेशा याद दिलाती हैं कि संस्कृति का निर्माण करने के लिए, आपने प्रकृति का नाश किया है। तो खून माँगती हैं, नरबलि भी माँगती हैं। भागवत पुराण में कहानी है कि भूदेवी विष्णु से कहती हैं कि लोग उन्हें बहुत तकलीफ दे रहे हैं और वे उनका खून पीना चाहती हैं। जब रामायण में युद्ध होता है, महाभारत में युद्ध होता है – तो इसका मतलब यह है कि धरती प्यासी है। इतना अधर्म हुआ है कि अब उन्हें रक्त चाहिए। राम और कृष्ण के रूप में विष्णु युद्ध करते हैं तो सच में रामायण-महाभारत का युद्ध एक प्रकार की नर बलि है। एक कहानी है, एक दिन महाभारत में अर्जुन और भीम लड़ रहे थे कि महाभारत के युद्ध में सबसे ग्रेटेस्ट वारियर, महान योद्धा कौन है, तो उनको कहा जाता है कि एक पहाड़ के ऊपर एक सर

है, जिसने सब कुछ देखा था कुरुक्षेत्र में, युद्ध में, उससे पूछो कौन है। कुछ कहते हैं उसका नाम बरबरिक होता है, कुछ कहते हैं कि उसका नाम अवीन है – अलग-अलग नाम दिए गए हैं उसको। सर कहता है कि, ‘योद्धा तो मुझे कोई नहीं दिखाई दिया, कौरव-पांडव कुछ नहीं दिखाई दिया, अर्जुन-भीम कुछ नहीं दिखाई दिया – मुझे केवल एक चीज़ दिखाई दी, यह कि विष्णु का सुदर्शन चक्र घूम रहा था, राजा मर रहे थे, उनका खून गिर रहा था और भू-देवी काली के रूप में रक्त पी रही थीं।’

देवी लक्ष्मी की एक बहन हैं अलक्ष्मी जी कलह की देवी हैं। हमारे घर में जैसे वे पैसा आता है लड़ाई भी होती है, तो कहते हैं कि दोनों बहने आ गईं। अलक्ष्मी को घर के बाहर रखने के लिए मुम्बई में कॉमन कस्टम है कि नींबू और सात मिर्चियाँ बाँधने का, ताकि वो घर के बाहर रहें और घर के अन्दर मीठा भोग चढ़ाया जाता है, लक्ष्मी के अंदर रहने के लिए।

**रामायण के या फिर महाभारत में भोग को लेकर कोई कहानी है?**

अगर आप अयोध्या में जाएँ तो एक जगह है जिसे सीता की रसोई कहते हैं। सीता अच्छी कुक थीं। बहुत अच्छा खाना बनाती थीं। द्रौपदी भी अपनी मेहमानवाज़ी के लिए जानी जाती थीं। जो भी आते थे उनके किचन में, वे उनको खाना खिलाती थीं। जब द्रौपदी का बनवास हुआ था, उनके पास कुछ होता नहीं था। वे रानी थीं, उनके पास तो पूरा किचन था पहले। उन्हें बहुत बुरा लगता है कि लोग आएँगे उनके घर, लेकिन कुछ खाने को नहीं मिलेगा। एक दिन उनको चिढ़ाने के लिए दुर्योधन वहाँ पे दुर्वासा ऋषि और सप्तऋषि को भेजते हैं खाना-खाने के लिए। जब वो आते हैं तो द्रौपदी कहती हैं कि मैं कुछ बनाती हूँ आप नहा आइए। फिर जब वे जाते हैं तो उनको रोना आ जाता है कि उनके घर में कुछ नहीं है पकाने के लिए।

उस समय कृष्ण आ जाते हैं। वे कहते हैं कि कुछ तो होगा घर में। वह कहती है कि नहीं बर्तन तो खाली हैं, जो भी था मैंने अपने पतियों को दे दिया है और जो थोड़ा बचा था, मैंने खा लिया। तो कृष्ण जो एक दाना चावल बचा होता है उसे खा लेते हैं और उनका पेट भर जाता है और इसलिए ऋषियों का भी पेट भर जाता है। ऋषि सोचते हैं कि हमारा पेट तो भर गया तो अगर हम द्रौपदी के घर जाकर नहीं खायेंगे तो उनका निरादर होगा। तो वे वहीं घाट से ही चले जाते हैं। ऐसे कृष्ण ने द्रौपदी की लाज रखी।

कृष्ण द्रौपदी की समस्या दूर करने के लिए कहते हैं कि आप सूर्य भगवान से प्रार्थना कीजिए। सूर्य देव ने उनको एक थाली दी। ‘द्रौपदी की थाली’ वहीं से आया है। यह माता जी के भंडारे की तरह है। मतलब किचन में हमेशा खाना होगा। कहते हैं कि जब तक द्रौपदी खाना नहीं खा लेती थीं, तब तक उस थाली में खाना रहता था। वे बहुतों को खाना खिलाकर ही खाती थीं। एक बार उनके खाने के बाद अगले दिन तक कोई खाना नहीं होता था।

**आपने अभी सीता की बात की, द्रौपदी की बात की, यहाँ पर तो कोई पुरुष नहीं है, सब फीमेल है – ऐसा कैसे?**

महाभारत में मेल कुक्स के रैफ़रेंस मिलते हैं। नल की कहानी है। नल एक ताकतवर, हैंडसम और अमीर राजा हैं जिनकी शादी सुंदर दमयंती से हुई है। उनका जीवन बहुत

अच्छा चल रहा है। उसके बाद कुछ ऐसा होता है कि वे बहुत गरीब हो जाते हैं। इतने गरीब हो जाते हैं कि नल को नौकर बनना पड़ता है एक राजा के यहाँ और वो खाना बनाते हैं। यह कहानी केरला में बहुत फेमस है। मलयाली महाभारत में कहते हैं कि वर्ल्ड के ग्रेटस्ट कुक 'नल' थे। अब भी कोई अच्छा मेल कुक होगा तो कहते हैं कि यह तो नल के जैसा खाना बनाता है।

**मैंने यह नोटिस किया है कि बहुत लोग भगवान को पान का पत्ता चढ़ाते हैं, इसके पीछे क्या कहानी है?**

पान और सुपारी भारतीय सभ्यता से जुड़े हैं। खाने के बाद पान और सुपारी खाना, ये गृहस्थ जीवन का चिन्ह हैं। और इनका मतलब है कि आप खुशहाल और तृप्त हैं। यह सब हमेशा उन भगवान को जो गृहस्थ है, जो शादी-शुदा देव हैं उनको दिया जाता है। शिव को कभी नहीं। तस्वीरों में दिखाया जाता है कि लक्ष्मी पान का बीड़ा विष्णु को दे रही हैं। पान का बीड़ा, अय्याशी का प्रतीक है। हँसने-खेलने का और सफलता और खुशी का प्रतीक है। और यह सब हमें अपनी ज़िंदगी में चाहिए।

**क्या आप 'श्रीफल' शब्द का अर्थ समझा सकते हैं?**

श्री का मतलब है लक्ष्मी और फल मतलब फ़रूट, तो लक्ष्मी का फ़रूट, उस फल को श्रीफल कहते हैं जो सारे साल मिलता है, और जो आसानी से मिल जाता है। मतलब ज्यादा काम नहीं करना पड़ता। जैसे नारियल का फल या केला। इसलिए इन्हें पूजा पाठ में हमेशा रखा जाता है। ये ना केवल पौष्टिक होते हैं पर ना खत्म होने वाली दौलत और समृद्धि के सूचक हैं।

चावल को भी कभी-कभी श्रीफल कहते हैं। जब घर में कलश लगाते हैं, पूजा के लिए तो आप देखेंगे, नीचे चावल बिछाते हैं और ऊपर नारियल रखते हैं। ये सब लक्ष्मी के चिन्ह हैं, सब जगह में मिलते हैं और जहाँ होंगे, वहाँ हमेशा खुशहाली होगी।



18

## युग

आजकल जब भी हम सुनते हैं, तो बुरा ही सुनने को मिलता है, आपको लगता है कि हम कलियुग में जी रहे हैं?

हर युग में लोगों को लगता है कि हम बुरे समय में जी रहे हैं। तो आपकी दादी माँ भी यही कहती होंगी कि हमारे समय में सब कितना अच्छा था और अब कैसे सब खराब हो गया है। उनकी दादी माँ भी यही कहती होंगी। तो यह एक बोलने का तरीका है। दो तरह के विचार हैं – एक कहते हैं कि दुनिया में अच्छा हो रहा है और हम आगे बढ़ रहे हैं। और दूसरा यह कि सब खराब हो रहा है, बर्बाद हो रहा है।

जो यह शब्द होता है 'कलियुग' वो हमें रूपक की तरह देखना चाहिए यह सोचने की बजाय कि घोर कलियुग आने वाला है। एक फिलोसौफिकल कॉन्सेप्ट है दिखाने के लिए कि दुनिया बदलती रहती है, केवल भगवान नहीं। परमात्मा नित्य है, बाकि सब अनित्य। सब नश्वर है, सब बदल रहा है, तो समय का हमारा जो कॉन्सेप्ट है, वह यह है कि समय साइकलिकल है, चक्रीय है। समय आता है और जाता है। इसलिए हिन्दी में 'कल' शब्द भूत व भविष्य दोनों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। जैन धर्म में भी यह कॉन्सेप्ट है – जहाँ समय सर्प की तरह चलता है। अच्छे समय को कहते हैं, 'उत्तरसर्पनी', बुरे समय को 'अवसर्पनी'। इसके और भी हिस्से होते हैं। समय एक लहर की तरह होता है – उपरी हिस्से को शूषम शूषम (अच्छा) कहते हैं। फिर उतराव को शूषम दूषम, नीचे के हिस्से को दूषम दूषम (बुरा) और चढ़ाव को दूषम शूषम और फिर शूषम शूषम। यह हिन्दू धर्म में भी है क्योंकि समय हमेशा बदलता रहता है, कुछ भी परमानेंट, स्थायी नहीं है, कलियुग भी नहीं।

हमारे कितने युग हैं। और ये क्या हैं, बताइए?

युग समय को बाँटने का तरीका है। समय तो अनंत है, उसकी कोई शुरुआत नहीं है और कोई अंत नहीं है। वैज्ञानिक ये नहीं मानेंगे; कहेंगे कि समय शुरू हुआ बिग बैंग से। लेकिन शास्त्रों में कहा गया है कि समय अनंत है और समय हमेशा से रहा है। लेकिन मनुष्य इसे बाँधने के लिए, समय को बाँटते हैं।

आम तौर पे जो दिन होता है, सूर्योदय से सूर्यास्त तक, उसके चार प्रहर होते हैं और रात के चार प्रहर होते हैं। तो चार का सिद्धांत आवश्यक है क्योंकि यह रेखगणित का ठोस अंक है। जैसे घर के चार कोने होते हैं, चार दिशाएं होती हैं – उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, ऐसे ही आप देखोगे कि शास्त्रों में चार वर्ण होते हैं – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, क्षुद्र, चार आश्रम होते हैं जीवन के – ब्रह्मचर्य (स्टूडेंट लाईफ), गृहस्थाश्रम

(मेरिड लाईफ), वानप्रस्थाश्रम (रिटायर्ड लाईफ) और फिर संन्यास आश्रम (हर्मिट लाईफ), जब आप सब कुछ त्याग दें। वैसे ही समय को जो पूरे ब्रह्माण्ड का कॉस्मिक टाइम है, उसे चार भागों में बाँटा गया है – पहला सतयुग या कृतयुग, दूसरा त्रेता युग, तीसरा है द्वापर युग और चौथा है कलियुग जिसके बाद प्रलय, और जिसके बाद समय वापिस शुरू हो जाता है सतयुग से। चारों युगों को जोड़ते हैं तो उनको मनवतार कहते हैं और कल्प भी कह सकते हैं। हालांकि प्रकृति युग के हिसाब से नहीं चलती इसमें ऋतुएँ होती हैं, जो आती-जाती हैं। संस्कृति में युग होते हैं।

जैसे हमारी ज़िंदगी सालों में बंटी है, वैसे ही संस्कृति में, समाज में, संस्थाओं में, हमारी कम्पनी के बढ़ने में, चार अवस्थाएँ होती हैं। शुरूआत में बचपन, सरलता होती है, फिर ठहराव, बढ़ना और फिर ख़त्म होना। मुझे लगता है यह संस्कृति के बारे में ज्यादा है ना कि संसार के बारे में।

**हमें कैसे पता चलेगा कि युग बदल गया है?**

एक तरीका ये है कि धर्म को चार टांगों वाली गाय की तरह समझें। जब एक पैर गल (नैतिक पतन) जाता है तो वह लंगड़ी हो जाती है। त्रेता युग शुरू हो जाता है। फिर द्वापर युग में एक और पैर टूट जाता है – वह दो पैरों पर खड़ी होती है। कलियुग में वह एक पैर पर खड़ी होती है। और जब चौथा पैर चला जाता है तो प्रलय आ जाती है।

कहते हैं कि जब विष्णु सोते रहते हैं तो प्रलय होती है। जब वह उठते हैं, धीरे-धीरे जब उनकी आँख खुलती है, तो कृत युग शुरू होता है। वे अवतार लेते हैं – त्रेता युग में राम और द्वापर युग में कृष्ण। कलियुग में वे थक जाते हैं और सो जाते हैं। जब सो जाते हैं तो वापस प्रलय हो जाती है। सृष्टि का मतलब है, जब विष्णु जाग उठें और प्रलय का मतलब है कि वे सो रहे हैं।

**आपने कहा कि विष्णु सोते हैं, तब ब्रह्माण्ड की रक्षा कौन करता है?**

यह भी प्रश्न शायद पुराणों में भी लोगों ने पूछा होगा कभी, तो उसके लिए जवाब है कि कलियुग का जो सिद्धांत है, वह हमारे संस्कृति के साथ जुड़ा है, प्रकृति के साथ नहीं, जो अनन्त है। प्रकृति में कोई शुरूआत या अन्त नहीं होता। तो जब संस्कृति नहीं थी, तब भी प्रकृति थी और संस्कृति के बाद भी प्रकृति रहेगी। प्रकृति को हमने देवी का रूप दिया है और शक्ति का रूप दिया है। जब विष्णु उठते हैं तब संस्कृति का जन्म होता है। पुराणों में कहते हैं कि जब विष्णु सोते हैं तो योगनिद्रा दुनिया को सम्हालती है, रक्षा करती है। देवी हमेशा रहती है। उनके लिए 'योगनिद्रा' शब्द इस्तमाल किया गया है। कोई कहता है योगमाया भी एक देवी हैं। योगनिद्रा और योगमाया, ये दोनों देवियाँ हैं। मगर वे एक ही देवी के दो रूप हैं। तो जब विष्णु सो रहे होते हैं तो योगनिद्रा ध्यान रखती हैं, और जब वह जाग उठते हैं तो योगमाया उनकी जगह ले लेती हैं।

**कृष्ण और राम ने कौन से युग में जन्म लिया?**

राम त्रेतायुग से जुड़े हुए हैं और कृष्ण द्वापर युग से जुड़े हुए हैं। रामायण और महाभारत – वे दो युगों की कहानियाँ हैं – त्रेता और द्वापर। वो युग जिसे हम त्रेता युग कहते हैं वहाँ पर राम हैं, उनका जन्म-मरण वहाँ होता है, और कृष्ण को द्वापर युग

से जोड़ा हुआ है। कहते हैं कि कृतयुग में सब ठीक था। जब परशुराम आते हैं, तो इसका मतलब है कि कृतयुग समाप्त हो गया है। जब राम आते हैं तो इसका मतलब है कि त्रेतायुग समाप्त हो गया। जब कृष्ण आते हैं तो उसका मतलब है कि द्वापर युग समाप्त हो गया। और शायद कल्कि के आने से कलयुग समाप्त हो जाएगा। इसे आप लिटरली ले सकते हो या रूपक की तरह ले सकते हैं। कृतयुग में नियम, नीति-रीति नहीं थे। लोग दान देते थे, कोई चोरी नहीं करता था। जब परशुराम आते हैं तो पहली बार चोरी होती है। एक राजा एक गाय देते हैं जमदीग्नि को, और उसकी चोरी हो जाती है। यहाँ से नियमों की शुरुआत होती है, रूल्स की आवश्यकता होती है। रूल्स आ गए तो मर्यादा पुरुषोत्तम, जो रूल्स को फोलो करते हैं, वो आ जाते हैं। उस समय की कहानी है जहाँ पर लोग नियमों को बहुत ज्यादा मानते थे। इसलिए कहते हैं, 'रघुकुल रीत सदा चली आई; प्राण जाए पर वचन न जाई। ये फेमस लाइन्स से हैं तुलसी रामायण की। यह रघुकुल नीति के बारे में बताती हैं – जब राम (रघु) का समाज नियम मानता था। वह निष्कपटता का युग था।

लेकिन जब द्वापर युग आता है, तो गड़बड़ें शुरू हो जाती हैं। नियमों पर चलने के बाद भी अधर्म हो सकता है। सच में तो नियम अधर्म का हथियार बन जाते हैं। जैसे भीष्म और द्रोण नियमों का पालन करते हैं, लेकिन फिर भी उनकी वजह से पांडवों को बहुत तकलीफ़ सहनी पड़ती है। कोई प्रेम नहीं करता, कोई दान नहीं करता। कलयुग में न नीति को मान दिया जाता है और न ही रीति को। धर्म-अधर्म क्या है यह किसी को मालूम नहीं। इस पर वाद-विवाद चलते रहेंगे। तो इस अनोखी दुनिया को जहाँ कुछ सही-ग़लत नहीं है, उसे हम कलयुग कहते हैं। किसे मालूम हम इसमें हैं या यह अभी आने वाला है।

**शिव का जन्म कौन से युग में हुआ है और उनकी क्या कहानी है?**

फ़िलॉसैफ़ी के दो भाग होते हैं – समय के भीतर जो बदलाव हुआ है और दूसरा जो समय के बाहर होता है। समय का नियन्त्रण जिसके उपर है और समय का नियन्त्रण जिस पे नहीं है। नियन्त्रण का मतलब यह है कि आप का जन्म और मृत्यु होगी। एक शब्द है योनिजा, जिसका जन्म योनि से हुआ है। राम का जन्म कौशल्या से हुआ, उनकी योनि से – मनुष्य योनि में जन्म हुआ। कृष्ण का जन्म देवकी की योनि से हुआ। राम सरायू के अंदर चले जाते हैं और इस तरह मरते हैं, कृष्ण को जरा नामक एक धनुर्धारी का बाण लग जाता है, तो उनको मृत्यु का अनुभव होता है। तो यह एक दुनिया है जहाँ जन्म, मृत्यु, का अनुभव होता है। इसके बाहर एक दूसरी दुनिया है, अयोनीजा या स्वयंभू – जहाँ प्राणी अपने आपको जन्म देते हैं। वहाँ बुढ़ापा या मृत्यु नहीं होती। यह नित्य दुनिया है, भगवान की दुनिया। जिसे जैन सिद्धलोक-यानि जहाँ सिद्ध आत्माएं रहती हैं, कहते हैं। तो शिव यहाँ पे विराजमान हैं, विष्णु भी यहाँ हैं। यहाँ वे हमेशा जवान हैं, और कोई पतझड़ या सर्दियाँ नहीं हैं। हमेशा बसंत हैं, खुशी है। यहाँ मृत्यु नहीं होती, भूख नहीं लगती।

दो तरह की दुनिया है – नित्य और बदलने वाली जहाँ समय चक्रीय है और युगों में बदलता रहता है। वाल्मीकि रामायण में समय की चक्रीय होने के बारे में एक दिलचस्प बात है। जब राम सीता को अपने साथ जाने की बजाय रूकने के लिए कहते

हैं तो वे मना कर देती हैं। वहाँ पे सीता का सटीक तर्क होता है कि, 'हर रामायण में आपके साथ गई हूँ तो अब क्यों रोक रहे हो?' मतलब रामायण पहले होने का ज्ञान है उनको। और यही सिद्धांत लोक-कथाओं में हनुमान की मुद्रिका की कहानी के द्वारा बताया गया है।

समय के देवता राम से कहते हैं कि धरती पर उनका काम पूरा हो गया है, और उन्हें मृत्यु को स्वीकार कर वैकुण्ठ लौट जाना चाहिए। राम, यम देवता को बुलाना चाहते हैं पर उन्हें मालूम है कि उनके परम भक्त हनुमान उन्हें राम के पास आने भी नहीं देंगे। हनुमान का ध्यान बंटाने के लिए राम अपनी अंगूठी एक पत्थर की दरार में डाल देते हैं और फिर उनसे लाने के लिए कहते हैं। हनुमान फौरन सूक्ष्म रूप में आ जाते हैं और दरार में छलांग लगा देते हैं। वे बहुत दूर तक भूगर्भ में निकल जाते हैं और नाग लोक पहुँच जाते हैं। वहाँ पर उन्हें नाग राजा वसूकी मिलते हैं। वे उनसे अंगूठी ढूँढ़ने में मदद मांगते हैं। वसूकी उन्हें एक पहाड़ की ओर जाने के लिए कहते हैं। जैसे ही हनुमान उस पहाड़ के पास पहुँचते हैं उन्हें समझ में आता है कि वह अंगूठियों का पहाड़ है। वे सोचते हैं कि अब श्रीराम की अंगूठी कैसे ढूँढ़ेंगे। वसूकी उन्हें बताते हैं कि वे सब राम की अंगूठियाँ हैं, कि ये एक अनन्त कहानी है जिसमें धरती पर राम की मृत्यु से पहले एक वानर उनकी अंगूठी ढूँढ़ने आता रहा है। तभी त्रेता युग समाप्त होता है। यह चक्र अनन्त काल से चला आ रहा है। हनुमान को तब समझ में आता है कि जन्म, मृत्यु और फिर जन्म की प्रक्रिया अनन्त है, इसे रोका नहीं जा सकता।

इस कहानी में हनुमान के जरिये बताते हैं हनुमान की और फिर हमारी अपनी कमियाँ। हनुमान इतने शक्तिशाली हैं लेकिन मृत्यु से डरते हैं। वे नहीं चाहते कि राम उनसे कहीं दूर चले जाएँ। हनुमान को सीख देने के लिए यह पूरी कहानी गढ़ी गई है कि हनुमान को यह समझ में आये कि हर चीज़ जो पैदा हुई है, मरेगी भी और जिसका मरण हुआ है, उसका पुनर्जन्म भी होगा। अनन्त काल तक यही चक्र चलता रहेगा। दर्शनानुसार, ये बताना चाहते हैं कि ये जो हम ज़िंदगी जी रहे हैं, यह हम पहले भी जी चुके हैं, और उसके पहले भी जी चुके हैं और बाद में भी यही ज़िंदगी हम जीते रहेंगे। दुनिया बदलती है और नहीं भी बदलती। हमारे सोचने का तरीका बदल जाता है। दुनिया को नहीं बदल सकते, लेकिन दुनिया के सोचने-समझने के तरीके को बदल सकते हो। इन्डियन फिलोसफ़ी का सबसे ज़रूरी पाठ है अपने मन के ऊपर काबू रखना। जैसे हनुमान राम को नहीं बचा पाए, राम को यमलोक या वैकुण्ठ जाना ही पड़ा, वैसे ही आप दुनिया को नियंत्रित नहीं कर सकते। समय की जो धारा है, आप उसे रोक नहीं सकते। किन्तु अगर आप इस बात को मान लेंगे कि जो आता है वह जाता है, तो दुख कम होगा, कष्ट कम होगा और एक भरपूर जीवन जी सकोगे।

**कलयुग की शुरुआत कब हुई? इसकी कोई सही तिथि बता सकते हैं आप?**

यह जो पौराणिक ग्रन्थ होते हैं; इनको सीधा-सीधा कभी नहीं लेना चाहिए। जैसे कि बाइबिल में कहते हैं कि 5000 हजार साल पहले दुनिया शुरू हुई। हमको इनके ज़रूरी तत्व को समझना चाहिए। तत्व यह है, कि कोई भी चीज़ स्थाई नहीं होती। हर चीज़ का एक सही या ग़लत समय होता है। हर चीज़ बदल रही है, जैसे हमारा बचपन हमेशा नहीं रहता, वैसे कृतयुग हमेशा नहीं रहेगा, इत्यादि। तो अगर हम राम जन्म

की बिलकुल सही तारीख निकालना चाहेंगे तो कहानी का असली मर्म खो देंगे। मैं, जो हुआ है उसके मर्म ध्यान देता हूँ शब्दों की कारीगरी पर नहीं।



19

## सृष्टि

**पुराणों के हिसाब से सृष्टि की रचना कैसे हुई?**

वेद जो 4000 साल पहले आये और पुराण जो 2000 साल पहले आये, उनके बीच हैं ब्राह्मण और अण्यक। इन सभी में बहुत सी कहानियाँ हैं कि सृष्टि की रचना कैसे हुई। वेदों में एक सृजन स्त्रोत है, जिसे कहते हैं – नासदिया सुक्ता। यह बहुत जटिल कविता है और वैदिक सोच की पराकाष्ठा को दर्शाती है। इसमें कवि कह रहे हैं कि पहले क्या आया था – जल या स्थल, रौशनीया अंधेरा, ग्रीष्म ऋतु या सर्द ऋतु, पहले साँस किसने ली, इत्यादि। फिर वे कहते हैं कि शायद देवताओं ने सब कुछ बनाया होगा, लेकिन फिर देवताओं को किसने बनाया? क्योंकि देवता बाद में आए। शायद देवताओं को पता होगा, या शायद उन्हें भी नहीं पता होगा। सब सोचने की बातें हैं। सही बात एक भी नहीं।

लेकिन वो कहते हैं किसी भी चीज़ की रचना के लिए, दुनिया में, इच्छा की जरूरत होती है। तो पहले इच्छा आई होगी और इच्छा के बाद ही, दुनिया की रचना हुई होगी। तो अगर इच्छा बीज है तो यह ब्राह्मण्ड उसका फल है। अथर्ववेद में कहते हैं कि काम पहले आया। कामदेव नहीं, पर स्वयं काम, इच्छा। यजुर्वेद में पुरुषमेघ यज्ञ की बात होती है और यह कि दुनिया प्रजापति है, समाज प्रजापति है। और इस प्रजापति की बलि होने के पश्चात ही सृष्टि का निर्माण हुआ। तो प्रजापति के सर से ब्रह्माण्ड आए, हाथों से क्षत्रिय आए, पेट से वानिक, और पैरों से शूद्र आए। एक प्राणी को तोड़ करके सृष्टि को बनाया गया। समाज का निर्माण हुआ है। वेदों में संहिताएँ होती हैं जिनमें मंत्र होते हैं, ब्राह्मण में यज्ञों के बारे में लिखा होता है, फिर अरण्यक जो फिलोसोफिकल थॉट के ऊपर है और उसके बाद उपनिषद् आते हैं जहाँ वेद पर चर्चा है। जब हम वेदों की बातें करते हैं तो ये सब ग्रंथ उनमें आते हैं। नासदिया सुक्ता एक संहिता में आती है।

अरण्य (जंगल) में प्रजापति (प्रजा का पति, इन्सानों के पिता) उन्होंने एक स्त्री को देखा, शतरूपा (जिसके कई रूप हैं), शतरूप को देख के वे उस पर मोहित हो जाते हैं। उनके पीछे भागते हैं। वह अलग-अलग प्रकार के मादा का रूप लेती हैं और प्रजापति वही नर के रूप लेते हैं। जब वह गाय का रूप लेती है तब वह बैल बन जाते हैं, जब वह घोड़ी बनती है तो वह घोड़ा बन जाते हैं, इत्यादि। तो सब जानवरों का जन्म ऐसे हुआ। हाथी से लेकर चीटी तक। तो यह एक और कहानी है।

फिर धीरे-धीरे मनु का नाम आने लगा हमारी किताबों में और यह कि उन्होंने दुनिया की शुरुआत की। उन्होंने शतरूपा के साथ विवाह किया और। मानव जाति को

जन्म दिया। तो ऐसी कई कहानियाँ हैं वेदों में ब्राह्मणों में, उपनिषदों में, अरण्यक में, लेकिन कोई एक कहानी नहीं।

**ब्रह्मा को सृष्टिकर्ता कहते हैं, तो ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना कैसे की?**

ब्रह्मा ने ब्रह्माण्ड का निर्माण किया। ब्रह्माण्ड जिसको ब्रह्मा का अंडा कहते हैं। ब्रह्मा के मन से मानस पुत्रों का जन्म हुआ। पहले चार सनत-कुमार पैदा हुए। उन्होंने कहा था कि हमें सृष्टि में कोई दिलचस्पी नहीं है तो वो सन्यासी बन जाएँगे। उनके बाद उन्होंने सप्तऋषियों को जन्म दिया, सप्तऋषियों ने कहा कि जब तक स्त्री नहीं होगी तब तक हम किसी को जन्म नहीं दे सकते। तो ब्रह्मा ने स्त्री की रचना की और सात ऋषियों को सात पत्नियाँ दीं। इस तरह से सब जीव जन्तुओं का जन्म हुआ। सबसे जाने-माने मुनि हैं कश्यप मुनि, कश्यप का मतलब है कछुआ। उनकी कई पत्नियाँ होती हैं और उनकी अलग-अलग पत्नियों से अलग अलग प्रकार के जीव-जन्तुओं का जन्म होता है। जैसे अदिती से आदित्यों, देवों का जन्म होता है, दिती से दैत्यों का जन्म होता है, दनु से दानवों का जन्म, कदरू से नागों का, विनाता से पक्षियों का, तिमि से मछलियों का जन्म होता है। तो ब्रह्मा से जुड़ी सबसे जानी-मानी कहानी हैं।

**शैव परम्परा में क्या कहानी है?**

शुरूआत में हिरन्यगर्भ (सुनहरी योनि) था। यह शब्द वेदों में भी मिलता है। 'हिरन्य' का मतलब है सुनहरी। हिरन्यगर्भ कमल के रूप में था और जब वह खिला तो उसमें से ब्रह्मा निकले और फिर ब्रह्मा ने अर्धनारीश्वर का रूप देखा। उसको देख के ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की। अर्धनारीश्वर में पुरुष को देखकर उन्होंने मनु को जन्म दिया और औरत को देख कर शतरूपा को जन्म दिया। एक और कहानी है, कि शिव ने अपने आप को शिव और शक्ति में बाँट लिया। शिव से नर आते हैं और शक्ति से मादा आती हैं।

**वैष्णव परम्परा में क्या कहते हैं?**

वैष्णव परम्परा में लंबी कहानियाँ हैं। कुछ कहानियाँ ब्राह्मण में मिलते हैं और आगे चलके बढ़ती हैं। जो सबसे जानी-मानी है वह यह कि दुनिया में सब कुछ निद्रा में था। फिर विष्णु जागते हैं, साँस लेते हैं, और मन में इच्छाएँ जागृत होती हैं। तो इच्छा से उनकी नाभी में कमल उगता है और उस कमल में ब्रह्मा बैठे होते हैं। जब कमल खिलता है, ब्रह्मा आँखें खोलते हैं तो डर जाते हैं। उनको कोई और दिखाई नहीं देता। अकेलेपन से वे इतना डर जाते हैं कि कहते हैं कि मुझे एक और को जन्म देना पड़ेगा। यह जो भय है, यह बृहद्अरण्यक उपनिषद् में भी बताया गया है – कि भय से रचना हुई। जो पहला जीव है, वह अकेलेपन से डर जाता है और कहता है कि मुझे साथी चाहिए, इसलिए वह स्त्री की रचना करता है और उसके ऊपर मोहित हो जाता है और ब्रह्माण्ड की शुरुआत होती है।

लेकिन उपकथाएँ भी होती हैं। कहते हैं कि एक असुर ने धरती को पानी के अंदर दबा दिया था प्रलय के बाद। तो ब्रह्मा के नाक से एक वराह निकलता है, विष्णु अपने वराह अवतार में, जो समुद्र के अंदर जाता है और पृथ्वी को ऊपर लेके आता है। और जब लेके आता है तो पृथ्वी में वनस्पति उगनी शुरू होती है, और ऐसे पृथ्वी का निर्माण

हुआ। एक और कहानी है, जिसमें कहते हैं कि, अमृत मंथन से दुनिया की शुरुआत हुई। विष्णु मंदार पर्वत को लाते हैं क्षीर सागर का मंथन करने के लिए। देव और असुर मिल के मंथन करते हैं। विष्णु अपना कुर्मा अवतार लेते हैं, और पर्वत को अपनी पीठ पर उठाते हैं। इस मंथन से सृष्टि की रचना होती है। ये तीन कहानियाँ हैं जिनमें विष्णु सोते हुए नारायण हैं, वराह या कुर्मा हैं।

अब सवाल है कि, सृष्टि प्रकृति के बारे में है या संस्कृति के बारे में? कहते हैं, कि विष्णु ने एक छोटी-सी मछली का रूप लिया था और उसे बड़ी मछलियों से जब मनु ने बचाया तो संस्कृति का निर्माण हुआ।

एक और कहानी है जिसमें वे विष्णु हयग्रीव (घोड़े के सर वाले विष्णु) बन जाते हैं, और वेदों को बचाते हैं प्रलय के पानी से। तब सृष्टि का निर्माण होता है। एक कहानी है जहाँ प्रलय के पहले एक मछली मनु को कहती है कि आप एक नौका में सभी जीवित प्राणियों को ले जाएं पौधों के बीज, और वेद को भी। यह कहानी नोआस आर्क कहानी की तरह है। मछली उस नाव को प्रलय के पानी से बचाती है और जब प्रलय खत्म हो जाती है तो मनु नई दुनिया की रचना करते हैं। वेदों में इन कहानियों के आधार हैं।

### शाक्त परम्परा क्या कहती है?

शाक्त और तंत्र परम्परा में बहुत-सी कहानियाँ हैं जो लोक-कथाओं से आती हैं। यह माना जाता है कि शिव तपस्या कर रहे थे जब प्रलय आई। यहाँ प्रलय का मतलब जीवन-हीनता है, जब सब कुछ जमा हुआ था बर्फ में। कहीं प्रजर्जनन नहीं हो रहा था। तब देवी आती हैं पार्वती के रूप में, पर्वतों से निकल कर, और शिव को मोहित करती हैं, और उनसे विवाह कर लेती हैं। उसके बाद शिव का तप, जो उनके अंदर है, वो बाहर निकलता है और बर्फ पिघलने लगती है। नदियाँ बन जाती हैं, धरती उपजाऊ हो जाती है, और पेड़-पौधे निकलते हैं, जीव-जन्तु निकलते हैं। तो तंत्र परम्परा में पुरुष, मतलब आत्मा हैं, जिसे देवी जागृत करती हैं, तो देवी की वजह से सृष्टि की रचना होती है। शक्ति शिव के पास है लेकिन उसको जागृत करने के लिए देवी की आवश्यकता है।

लोक कथाओं में एक कहानी है जिसमें कहते हैं कि पहले कोई देवता नहीं थे, पहला प्राणी एक औरत थी, और उनका नाम था आदिमाया शक्ति। उन्होंने एक पक्षी के रूप में तीन अंडे दिये, जिसमें से ब्रह्मा, विष्णु और शिव निकले। आदिमाया शक्ति ब्रह्मा के पास जाके कहती हैं कि मुझे तुम से शादी करनी है। पर ब्रह्मा कहते हैं 'मैं शादी कैसे कर सकता हूँ, आप तो मेरी माँ हैं'। इस बात से उनको बहुत गुस्सा आता है तो वह कहती हैं कि ब्रह्मा तुम्हारी कभी पूजा नहीं होगी। उसके बाद वह विष्णु के पास जाती हैं और विष्णु से कहती हैं कि तुम मुझसे शादी कर लो मगर विष्णु भी ना करते हैं। फिर शिव के पास जाती हैं तो शिव उनसे कहते हैं, 'आपके पास तीन आँखें हैं, आप तीसरी आँख मुझे दे दो तो मैं शादी करने के लिए तैयार हूँ।' जब शिव को देवी की तीसरी आँख मिलती है, तो उससे आग निकलती है, और देवी को भस्म कर देती है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, तीनों को रोना आता है कि उनकी माँ नहीं रहीं। तब वे उनकी राख से और तप से देवियों को जन्म देने लगते हैं – सरस्वती, जो ब्रह्मा की पत्नी बनती हैं,

लक्ष्मी, जो विष्णु से विवाह करती हैं और फिर पार्वती का जन्म होता है जो शिव के पास जाती हैं। बाकी की राख से ग्राम देवियों का जन्म होता है। ये जो कहानियाँ हैं वे लोक कथाएँ हैं, जो वेदों में से नहीं हैं। इन कहानियों में स्त्री के योगदान को ज़रूरी माना गया है।

तंत्र में स्त्री तत्व पहले आता है और वेदों में पुरुष तत्व पहले आता है। या कहेंगे कि दोनों साथ में आए हैं पर एक पहले जागृत हुआ। वैष्णव परम्परा में है कि दुनिया है लेकिन उसका अनुभव तब तक नहीं है, जब तक विष्णु जागते नहीं। शैव परम्परा में है कि दुनिया की शुरुआत तब तक नहीं होती जब तक अर्धनारीश्वर अलग नहीं होते। शाक्ता परम्परा में दुनिया तब तक नहीं बनती जब तक शक्ति शिव को जागृत नहीं करती। यह सच में एक मुश्किल प्रक्रिया है और शायद वेदों के पहले स्तोत्र में सही कहा है – किसी को क्या पता की सृष्टि कैसे शुरू हुई!

**फिर सही कहानी क्या है हम यह नहीं जानते?**

वैज्ञानिक भी नहीं कह सकते कि सही कहानी क्या है। कुछ कहते हैं कि बिग बैंग था, कुछ कहते हैं कोई बैंग था उससे भी पहले। मूल बात यह है कि सृष्टि की रचना के बारे में जितने भी प्रश्न हैं वे यह मानते हैं कि सृष्टि से पहले या बाद में कुछ नहीं था। हिन्दु धर्म में मानते हैं कि संसार अनादि है, इसकी कोई न शुरुआत है ना अन्त है। यह अनन्त है। इसके शुरू होने से पहले कहानी होगी और खत्म होने के बाद भी, तो कोई एक पल नहीं है रचना शुरू होने का।

यहाँ पर यह सवाल पूछना चाहिए कि किसकी रचना की बात हम कर रहे हैं - प्रकृति, संस्कृति, महाभूत की, वनस्पति या जीव-जन्तुओं की रचना की। या ये मन के बारे में है - दुनिया के बारे में जागृत होने वाली स्थिति? जैसे यह सवाल है कि किसने एक इन्सान का दुनिया के साथ अपना संबंध बनाया? हम अपनी ही दुनिया बना सकते हैं, किसी और की नहीं - हम सब ब्रह्मा हैं और अपना-अपना ब्रह्माण्ड बनाते हैं। यह हमारा अपना अंड है। हमने इसे बनाया और फिर इसमें ही फंस जाते हैं। हम ही मुर्गी हैं और हम ही इस अंडे के अन्दर फसे चूज़े। यह एक दार्शनिक प्रश्न है। रचना क्या है - यह एक विषय-निष्ठ संसार है कि व्यक्ति-निष्ठ? एक, दूसरे के बिना नहीं रह सकता। तो हिन्दु की धर्म भौतिक रचना में इतनी दिलचस्पी नहीं है जितना दार्शनिक दृष्टिकोण में।

**बाइबल में कहा जाता है कि दुनिया का निर्माण सात दिनों में हुआ और उसके बाद ऐडम और ईव, आदम और हव्वा आए, तो क्या हमारी हिन्दू मिथक में भी ऐसा है?**

यह जो बाइबल की कहानी है यह लीनियर स्टोरी, रेखाकार कहानी है, मतलब एक भगवान है, एक किताब है, एक सिद्धांत है कि दुनिया सात दिन में बनी और जीने का एक ही तरीका बताया गया है जिन्हें दस कमांडमेन्ट्स कहते हैं। दुनिया शुरू एक दिन में हुई थी और एक ही दिन में खत्म हो जाएगी; जिसे वह एपोकलिप्स कहते हैं।

हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म एक नहीं, बल्कि अनेक की बात करते हैं - जहाँ अनेक सृष्टियाँ, देवी-देवताएँ हैं। तो शुरुआत भी एक नहीं है। मनु आदम की तरह हैं। लेकिन मनु के पिता सूर्य हैं और सूर्य भगवान के पिता ब्रह्मा हैं जिनसे सनत कुमार,

प्रजापति इत्यादि आए। एक कहानी कभी नहीं होगी, यह है हिन्दू धर्म की खासियत। और आप तय करो कि आपको क्या चाहिए - देवी, सोने वाले नारायण, तपस्वी शिव, विचलित ब्रह्मा और अगर निराकार भगवान चाहिए तो वेदों, उपनिषदों को मानो। कहते हैं 84 लाख योनियों के बाद इन्सान का जन्म होता है। इस विचार पर मनन कीजिए - यह दर्शाता है कि हम अनन्त के सिद्धांत में विश्वास रखते हैं, एक के नहीं। शायद इसी वजह से हमें अनेकता में विश्वास है। जैसे फूल, फल, पुरुष, स्त्री भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं, वैसे ही देवी और देवता, और सृष्टि रचना की कहानियाँ।



20

## दिशाएँ

### वास्तु-शास्त्र क्या है?

वास्तु-शास्त्र एक भारतीय पद्धति है जहाँ पर माना जाता है कि अगर आप अपने घर का डिज़ाइन एक तरह से बनायेंगे – जिसे वास्तु-कला या आंतरिक सज्जा कहते हैं – तो आपके घर में सुख और समृद्धि का वास होगा। हम समय, यानि काल और जगह यानि वास्तु में रहते हैं। ज्योतिष-शास्त्र समय के बारे में है और वास्तु-शास्त्र हमारे आस-पास की जगह के बारे में। अपने आप को बदलने की बजाय हम इन चीज़ों को बदल सकते हैं।

### वास्तु-शास्त्र का वेदों से क्या सम्बन्ध है?

वेदों में और वास्तु-शास्त्र में दिग्गों को या दिशाओं को बहुत महत्व दिया गया है। और भी समानताएँ हैं दोनों में। वैदिक यज्ञ में आग पश्चिम में, दक्षिण और पूर्व में जलती है। दक्षिण पितृओं के लिए है, पूरब देवताओं के लिए है, और सभी पश्चिम सब जीवित प्राणियों के लिए। वास्तु-शास्त्र में पश्चिम में वरुण समुद्र के देवता के लिए है और वहाँ से सभी जीवन आता है, पूर्व में इन्द्र विराजमान हैं, देवताओं के राजा, और दक्षिण में यमराज बैठते हैं, मृत्यु के देवता।

### क्या वास्तु-शास्त्र का संबंध पुराणों से भी है?

हर दिशा के अपने रक्षक होते हैं, दिग्गपाल, जिनके बारे में पुराणों में बताया गया है। आठ दिशाएँ हैं – इनमें चार प्रमुख हैं (पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण) और चार करमसूचक (उत्तर-पूरब, उत्तर-दक्षिण, दक्षिण-पूरब, दक्षिण-पश्चिम) और दो, ऊपर और नीचे हैं। तो दस दिग्गपाल होते हैं। मंदिरों में आप दिग्गपालों की मूर्तियाँ देखोगे। उत्तर कुबेर का है, यक्षों के राजा का, दक्षिण यम का है; पूरब में इन्द्र, और पश्चिम में वरुण, उत्तर-पूरब में इशान है जिसे शिव या चाँद मानते हैं। दक्षिण-पूरब में निर्ती, मृत्यु की देवी हैं, और दक्षिण-पूरब में अग्नि हैं, और पूरब-पश्चिम में वायु है। सब आठ मूर्तियों की दोनों ओर एक हाथी और हथिनी होते हैं जो आसमान को उठाये रहते हैं। ऊपर ब्रह्मा बैठते हैं और तल पर विष्णु। कुछ संस्करणों में विष्णु शेषनाग पर धरातल में बैठते हैं और हम विष्णु के अंदर हैं। वास्तु पुरुष या जिस जगह में हम रहते हैं, वह विष्णु रूप है। विष्णु का सर उत्तर-पूर्व में है और उनके पैर दक्षिण-पश्चिम में। तो जगह को हम इन्सान या देव के समान मानते हैं।

### इन दिग्गपालों की हमारे जीवन में क्या भूमिका है?

अगर आप दिग्गपालों को गौर से देखेंगे तो पाएँगे कि वे जगह के संतुलन के सूचक हैं। जैसे पूर्व में कुबेर बैठे हैं जो बढ़ोतरी के सूचक हैं। और दक्षिण में यमराज बैठे हैं। तो ऊपर और नीचे एक संग संचालन है। पश्चिम में वरुण बैठे हुए हैं, जो नमक के पानी से संबंधित हैं और पूर्व में इन्द्र बैठे हुए हैं जो साफ़ पानी, बारिश के पानी से संबंधित है। जैसे टेंट को बैलेंस करने के लिए खम्बे लगाते हैं, रस्सियाँ बाँधते हैं वैसे ही स्पेस, जगह को बैलेंस किया जाता है। हमारे शरीर को भी संतुलन की आवश्यकता रहती है।

**कहते हैं कि उत्तर-पूर्व दिशा का बहुत महत्व है। हमारे मंदिर भी इसी दिशा में रखे जाते हैं। ऐसा क्यों है?**

उत्तर में ध्रुवतारा है और वह स्थाइत्व का सूचक है। शिव का वास कैलाश पर्वत है जो पूर्व में है। सूर्योदय पूर्व से होता है जो समृद्धि का प्रतीक है। तो उत्तर-पूर्व स्थाइत्व और समृद्धि का प्रतीक है – या स्थाई समृद्धि का! हमें सब कुछ चाहिए! तो यह दिशा अच्छे भाग्य से जुड़ी है।

एक प्रचलित कहानी है कि ध्रुवतारा कैसे बना। ध्रुव एक राजकुमार था जो अपने पिता का प्यार पाना चाहता था। मगर उसकी सौतेली माँ ये ध्यान रखती है कि उसका बेटा उत्तम अपने पिता के संग सारा समय बिताए ना कि ध्रुव। छोटा-सा ध्रुव जंगल में जाकर तपस्या करने लगता है। काफी समय के बाद विष्णु उसके सामने आते हैं, उसकी इच्छा सुनने के बाद वे उसे अपनी गोद में बिठाते हैं और आश्वासन देते हैं कि आकाश में उसकी स्थाई जगह होगी – ध्रुवतारा बनकर। यह कहानी इस बात का रूपक है कि किसी भक्त का अडिग प्रेम भगवान कैसे लौटाते हैं।

उत्तर दिशा आत्मा के साथ जुड़ी है। इसे स्थापित करने के लिए एक तस्वीर दी गई है, ध्रुवतारे की, वैसे ही जैसे शिव जो उत्तर में कैलास पर विराजमान हैं, जहाँ मेरु भी है। वे ध्रुव तारे के नीचे, एक अचल पर्वत पर बैठते हैं दक्षिण की ओर मुँह किये। दक्षिण भारत में एक प्रसिद्ध शिव की मूर्ति है जिसमें शिव दक्षिण की ओर मुँह किये बैठे हैं और वेदों का ज्ञान दे रहे हैं। वे बरगद के पेड़ के नीचे बैठे हैं जो स्थाइत्व का प्रतीक है। ये सारे चिन्ह ये बताते हैं कि वेद अनन्त और अखण्डित हैं।

इसके उलट, दक्षिण में यम हैं, और वतूनी नदी भू-लोक और पितृ-लोक को अलग करती है। मृत्यु के समय पार्थिव शरीर का सर दक्षिण की ओर और पैर उत्तर की ओर रखते हैं तो सर शिव की ओर होता है। माना जाता है कि दाह-संस्कार के समय जब खोपड़ी को तोड़ते हैं तो आत्मा पितृ-लोक की ओर दक्षिण दिशा में जाती है। यह सिद्धांत हिन्दू रीति-रिवाजों में, मंदिरों और शास्त्रों में बहुत महत्वपूर्ण है।

**मंदिर वास्तु-शास्त्र से कैसे जुड़े हैं?**

सारे मंदिर पूरब की ओर होते हैं ताकि सूर्य की पहली किरणें भगवान की मूर्ति पर पड़ें। भगवान का मुँह पूरब की ओर होता है और भक्त का पश्चिम, तो सूर्य की किरणें देवता पर पड़ती हैं और भक्त पर प्रतिबिम्बित होती हैं। मंदिरों को एक स्त्री के शरीर की तरह सोचा जाता है जो अपने घुटने मोड़ कर बैठी है। जिस जगह देवता की मूर्ति को रखा जाता है, उसे गर्भागृह कहते हैं। जैसे कि जगन्नाथपुरी का मंदिर मानव शरीर की तरह है, सर, हाथ, पैर इत्यादि के संग।

**क्या कोई ऐसा मंदिर भी है जिसमें मूर्ति पूरब की तरफ नहीं है?**

ऐसे कई मंदिर हैं, क्योंकि देवता कहानी के हिसाब से दिशा बदलते रहते हैं। जैसे कि कोल्हापुर का महालक्ष्मी मंदिर पश्चिम दिशा में है क्योंकि लक्ष्मी वरुण से पैदा हुई थीं।

एक और कहानी में, विभीषण, रावण के छोटे भाई, राम के राजतिलक में आते हैं। उन्हें विष्णु का परम भक्त माना जाता है। जाने से पहले वे राम से कहते हैं कि वे उन्हें अपनी मूर्ति दें जिससे वे उन्हें याद कर सकें। राम उन्हें अर्धनिन्दिरा में विष्णु की मूर्ति, नारायण मूर्ति देते हैं। वह इतनी भारी होती है कि विभीषण वापसी में उसे श्रीरंगम, तमिलनाडु, में छोड़ देते हैं क्योंकि वे उसे लंका नहीं ले जा पाते। वहाँ के मंदिर में मूर्ति दक्षिण दिशा में मुँह किये हैं।

**ऐसी कोई कहानी महाभारत में है?**

रामायण में उत्तर और दक्षिण दिशाएं हैं, पर महाभारत में सब दिशाएं काम आती हैं। हालांकि कृष्ण पूरब में मथुरा से पश्चिम में द्वारका तक जाते हैं। द्वारका एक द्वीप है तो समुद्र का लम्बा बखान है।

प्राचीन भारत में दो महामार्ग थे – उत्तर-पथ और दक्षिण-पथ। असल में, उत्तर का महामार्ग पश्चिम से पूरब की ओर जाता है और दक्षिण महामार्ग उत्तर से दक्षिण तक। हम सोच सकते हैं कि शायद दक्षिण-पथ रामायण से जुड़ा है और उत्तर-पथ महाभारत से।

लोग सोचते हैं कि महाकाव्यों में दक्षिण का अर्थ है, दक्षिण भारत और यह बात ग़लत है। हमें कभी भी मिथक की कहानियों को सीधा-सीधा नहीं लेना चाहिए, वे सूचक ज्यादा होती हैं मानव स्थिति को बताने के लिए। रूपक के तौर पे उत्तर आपके सर, दिमाग, मन का सूचक है और दक्षिण आपकी नीची आदतों का, आपकी मूल धारा का जहाँ आपकी गंदगी और बुरी शक्तियाँ होती हैं। आपको हमेशा उत्तर की दिशा में चलना चाहिए जैसे कमल हमेशा उत्तर की ओर खिलता है। उत्तर-दक्षिण को मानसिक उतार-चढ़ाव का सूचक भी माना जा सकता है।

यह दुख की बात है कि ब्रिटिशों का सिद्धांत के देवता उत्तर में रहते हैं और राक्षस दक्षिण में, अब भी चला आ रहा है। यह एक राजनीतिक समस्या बन गया है क्योंकि इन किताबों का मर्म खो गया है। मुझे ऐसा लगता है कि पुराणों और वास्तु-शास्त्र में आध्यात्मिक बातें होती हैं।



21

## विवाह

**हमारे ज्यादातर देवी-देवता विवाहित हैं और उनके परिवार हैं। ऐसा क्यों है?**

हिन्दु धर्म में दो जरूरी सिद्धांत हैं, प्रकृति – जो सगुण हैं, और भौतिक संसार की सूचक है और पुरुष या आत्मा – जो निर्गुण है और आध्यात्मिक संसार की सूचक है। पुरुष को सीधा-सीधा नहीं लेना चाहिए। पुरुष आदमी नहीं है। यह एक रूपक है। तो सगुण और निर्गुण के मिलन को विवाह कहते हैं। मंदिरों में जब भगवान की शादी होती है, हम कहते हैं कि आज शिव की शादी हो रही है या विष्णु की शादी हो रही है या राम की शादी हो रही है। इसका मतलब शरीर और आत्मा के मिलन की बातें हो रही हैं।

**हम जानते हैं, कि राम की एक पत्नी हैं सीता। पर जब वे कृष्ण का रूप लेते हैं तो उनकी आठ पत्नियाँ हो जाती हैं। तो विष्णु की कितनी पत्नियाँ हैं?**

अभी अगर आप प्रकृति में देखें, एनीमल किंगडम, जानवरों को देखें, तो वहां शादी नहीं होती। शादी संस्कृति का कॉन्सेप्ट, सिद्धांत है, प्रकृति का नहीं है। और प्रकृति में अगर हम देखें तो अलग-अलग प्रकार के पशु पक्षी हैं। कुछ जानवर जैसे राजहंस और चील पूरा जीवन एक ही साथी रखते हैं। लेकिन अगर आप हाथी को, शेरों को, चीते को देखेंगे तो वो ऐसा नहीं करते। अगर आप मधुमक्खियों को देखेंगे तो वहाँ केवल एक ही क्वीन बी (रानी मक्खी) होती है और वो सबको कंट्रोल करती है। तो प्रकृति में अलग-अलग प्रकार की व्यवस्था है अलग-अलग जातियों में। इसी बात को पुराणों में कहा है कि, हर समाज, हर काल, हर युग में अलग-अलग प्रकार की व्यवस्थाएं हैं। रामायण में राम एकम्पत्नीव्रता है। लेकिन उनके पिता की तीन पत्नियाँ थीं (कैकयी, कौशल्या और सुमित्रा)। भगवद् पुराण में कृष्ण को अष्टमदया कहते हैं, उनकी आठ पत्नियाँ होती हैं। अगर हम द्रौपदी को देखें तो उनके पांच पति हैं महाभारत में। तो ये बहुपतित्व मानती हैं। सही-ग़लत कुछ नहीं होता। सिर्फ अलग-अलग व्यवस्थाएं होती हैं अलग-अलग समाज की। कोई व्यवस्था पूरी तरह से सही नहीं होती। असल में राम की तरह एक पत्नि व व्रत दुर्लभ होता है। मोनोगैमी, पोलिगैमी, पौलीएंड्री – आपको ओपन माइंड (खुला दिमाग का) होना चाहिए। दो हंसों का जोड़ा कहते हैं इसलिए सिया-राम की जोड़ी को।

**हमने शिव के विवाह के बारे में बहुत सुना है, लेकिन विष्णु की शादी के बारे में कभी नहीं सुना। उसके बारे में हमें बताइए।**

अकसर ये कहानी दूसरी कहानियों के बीच में आ जाती हैं। विष्णु को हमेशा शादी-

शुदा मानते हैं, इसलिए उनकी कहानी जानी-मानी नहीं है। पर ऐसा नहीं है, दो कहानियाँ हैं। अगर साउथ इंडिया में जाएँ तो विष्णु के बगल में दो पत्नियाँ होती हैं। एक होती है श्रीदेवी या ऐश्वर्या और दूसरी होती है भूदेवी जो धरती हैं। दोनों लक्ष्मी के रूप होते हैं। नार्थ इंडिया में सिर्फ लक्ष्मी होती है।

जब हिरण्यक्ष नाम का एक असुर भूदेवी का अपहरण करके समुद्र के नीचे ले जाता है, तो विष्णु वराह रूप लेके उन्हें बचाकर लाते हैं। तब भूदेवी कहती है कि मैं आपको अपना पति मानती हूँ। तो विष्णु का नाम हो गया भूपति। और जब अमृतमंथन होता है। तब क्षीरसागर से श्रीदेवी निकली हैं, तो सब देवता और असुर लड़ाई करते हैं उनके लिए। पर वो कहती हैं कि नहीं मैं अपना पति खुद चुनूँगी। तब वे विष्णु को चुनती हैं। इसलिए उनका नाम हो गया श्रीनिवास या श्रीपति। दोनों पक्के साऊथ इंडियन नाम हैं। नार्थ में उन्हें लक्ष्मी वल्लभ कहते हैं, लक्ष्मी के प्रिय।

**जहाँ तक मुझे मालूम है, हमारे देवों में से कुछ ब्रह्मचारी हैं, ऐसा क्यों?**

दो धाराएँ हैं सोचने की। एक है, कि दुनिया को ठीक रखने के लिए शादी करनी चाहिए, और दूसरी है कि शादी नहीं करके, ब्रह्मचर्य रख के ओजस या तप आ जाता है। जैसे हनुमान हैं, परम ब्रह्मचारी, वज्र अंगी, बजरंग, जिसका शरीर फौलाद का है। भगवान के कई ऐसे रूप होते हैं जैसे शिव का जो भैरव रूप है। उसको ब्रह्मचारी माना जाएगा, मुरुगन का भी डंडापानी रूप इत्यादि। गणपति के दो रूप हैं, जहाँ ऋद्धी सिद्धी उनकी दो पत्नियाँ हैं। दूसरा रूप है जहाँ पे वो ब्रह्मचारी हैं। यह इस बात पर निर्भर है कि आप किस धारा को मानते हैं। जैसे शिव ब्रह्मचारी हैं या शादीशुदा हैं, उसपे बहुत वाद-विवाद होता है। क्योंकि एक तरफ वो वैरागी है और दूसरी तरफ उनके दो बच्चे हैं (कार्तिकेय और गणेश)। अगर आप कहानी देखोगे तो गणेश का या कार्तिकेय का जन्म साधारण रूप से नहीं हुआ होगा। भारत में ऐसा मानना है कि अगर आप शादी करके बच्चे पैदा कर लेते हैं, तो आपकी शक्ति कम हो जाती है। वैज्ञानिक तरीके से कुछ साबित नहीं किया जा सकता, लेकिन तंत्र शास्त्र में इसको बहुत महत्व दिया जाता है।

**हम देवियों को कुमारी बोलते हैं तो क्या इसका मतलब है कि वो ब्रह्मचारी हैं?**

देवी के बारे में जो मान्यता है उसमें विवाद है क्योंकि देवी कुमारी (कुंवारी से) है और माता भी है। तो शायद ये एक रूपक है। तो जो खेत होता है, हल चलाने के पहले वह कुमारी होता है। और जब फ़सल आती है बारिश के बाद, तब उसे माता कहते हैं। तो देवी को कुमारी माता कहते हैं। कुमारी रूप में वे लाल कपड़े पहनती हैं, और माता के रूप में हरे। देवी अपने वीर या उग्र रूप में कुंवारी मानी जाती हैं। उनका कोई नर पहलू नहीं है, वो पूरी तरह से मादा हैं। दक्षिण की एक बहुत दिलचस्प कहानी है। भारत के सबसे दक्षिणी बिन्दू को कन्याकुमारी कहते हैं। कन्या मतलब वो लड़की जिसकी शादी नहीं हुई है। वो एक ग्राम देवी हैं जो शिव से शादी करना चाहती थीं। और देवता नहीं चाहते कि उनकी शादी हो। क्योंकि अगर वो शादी कर लेंगी, अगर तो वो पत्नी बन जायेंगी, वो माता बन जायेंगी, तो उनकी शक्ति कम हो जाएगी। इसलिए, वो उनकी शादी रोकना चाहते हैं।

वे उन्हें बताते हैं कि केवल वे ही बाण-असुर को मार सकती हैं जिसकी शक्तियाँ बढ़ती जा रही हैं। देवी कहती हैं कि उन्हें पता है कि वे कुमारी की तरह ही उसे मार सकती हैं, और वे नहीं तो कोई और मार देगा। वे विवाह पर ज़ोर देती हैं। देवता नारद की मदद माँगते हैं जो कहते हैं कि वो शिव के सीधेपन का फ़ायदा उठायेंगे। वे शिव को पकड़ते हैं और कहते हैं कि शुभ मुहरत जो आधी रात का था, वह निकल गया है और सुबह होने लगी है। शिव उनकी बात मान लेते हैं और कैलाश की ओर चल देते हैं। देवी इन्तज़ार करती हैं जो ख़त्म नहीं होता और इसलिए रोती रहती हैं। उनका सारा मेकअप उनके आँसुओं के साथ निकल जाता है। इसलिए कहते हैं कि त्रिवेणी संगम जो कन्याकुमारी में है, उसके मानो कई रंग हैं। इस सब के बाद वे उग्र रूप में आ जाती हैं और बाण को मार देती हैं।

**हमारे सब भगवान पॉलिगैमस, बहुविवाही हैं, सिवाय राम के, लेकिन हमारा जो समाज है, वो नहीं है...**

सोसाइटी बदलती रहती है। सौ साल पहले तक भारत में ऐसा रूल, नियम नहीं था – पुरुषों को कई बीवियाँ रखने की अनुमति थी। हालांकि औरतों को एक से ज्यादा पति रखने की अनुमति नहीं थी। महाभारत में एक वार्तालाप है पांडू और कुंती के बीच जिससे पता चलता है कि आदमी और औरत अपने साथी चुन सकते थे। विवाह के अनुष्ठानों और रीति-रिवाज़ों जैसा कुछ नहीं था।

यह सब कैसे बदल गया उस पर एक कहानी है। एक युवक जिसका नाम है श्वेतकेतु अपने पिता उद्दालका से कहता है मैं अपनी माँ को देख रहा हूँ अन्य पुरुषों के साथ और मुझे यह पसंद नहीं आ रहा है। तो उसे बताया जाता है कि सभ्यता ही ऐसी है उनको फ़्रीडम है कि वे जहाँ जाना चाहती हैं वो जा सकती हैं। तो श्वेतकेतु को बहुत बुरा लगता है। वो कहता है 'फिर मुझे कैसे पता कि आप मेरे पिता हो?' उद्दालका कहता है, 'पिता प्रेम से बनता है, बीज से नहीं।' ये बहुत ही सोफिस्टिकेटिक, उच्च विचार है, जो अक्सर सुना नहीं जाता। तो श्वेतकेतु ने नियम बनाया, कि पत्नी को केवल एक पति को परमेश्वर मानना चाहिए, उसके पास पति चुनने की स्वतंत्रता नहीं है। पहले ज़माने में स्वयंवर होता था, औरतें स्वयं अपना पति चुनती थीं। धीरे धीरे वो फ़्रीडम भी चली गई। धीरे-धीरे पुरुष प्रधान समाज हो गया। मैं कुड हैव मैनी वाइवज़ बट विमन कुड नॉट हैव मैनी हैस्बैंड्स – आदमी की बहुत-सी पत्नियाँ हो सकती थीं पर औरत के बहुत से पति नहीं। कुछ लोग कहेंगे कि इसमें सोसाइटी का उद्धार हुआ और कुछ लोग कहेंगे इससे पतन हुआ। मुझे लगता है कि लोगों को फ़्रीडम देनी चाहिए, यह मेरा पर्सनल ओपिनियन, अपना विचार है।

**हमारी जो लोककथाएँ हैं और पुराणों में भी कई रोमैंटिक स्टोरीज़ हैं देवी-देवता के विवाह को लेकर। तो उसके पीछे क्या रहस्य है?**

शास्त्रों में विवाह के अलग-अलग तरीके हैं। अलग-अलग प्रकार के विवाह हैं। जैसे एक होता है, असुर विवाह जहाँ लड़की को खरीदते हैं। एक देव विवाह होता है, वहाँ अगर एक आदमी ने बहुत अच्छी सेवा की है दूसरे आदमी की तो वह उसे अपनी बेटी दे देते हैं। या होता है, ऋषि विवाह जब ऋषि कहते हैं कि मेरे यज्ञ के लिए मुझे पत्नी चाहिए। तो राजा या पिता अपनी बेटी दे देते हैं। पिशाच विवाह वो होता है जो

जबरदस्ती से होता है। ब्रह्म विवाह में, लड़का पिता से अनुमति लेता है उनकी बेटी से विवाह करने के लिए। सबसे लोकप्रिय है गंधर्व विवाह। गंधर्व विवाह या लव मैरिज, प्रेम विवाह। उसमें नियम नहीं होते। प्रेम से, यहाँ श्रृंगार आता है। तो ऐसे अलग-अलग प्रकार के विवाह हैं। ये कहानियाँ बहुत-सी लोक कथाओं में मिलती हैं। इसका उदाहरण होगा कि हर ग्राम में देवियाँ होती थीं। आप देखेंगे कि भगवान की अक्सर दो पत्नियाँ होती हैं। लोक पत्नी, (जो ग्राम के साथ जुड़ी हुई है) और दूसरी अलौकिक पत्नी (जो देवताओं के साथ जुड़ी होती है)। या भोग पत्नी (जो दिनचर्या के लिए होती है) और एक मोक्ष पत्नी होती है (जो अध्यात्म से जुड़ी होती है)। तो यह सब सैद्धांतिक है, और श्रृंगार रस की तरह या रोमैंटिक कहानी के रूप में होगा।

जैसे मुरुगन की कहानी है कि मुरुगन एक आदिवासी राजकुमारी, वल्ली से बहुत प्यार करने लगते हैं। वे गणेश से मदद माँगते हैं कि आप हाथी का रूप लीजिए तो वो डर जायेगी और मेरी बाहों में आ जायेगी और हाथी को मैं दूर भगा दूँगा। इससे रोमांस स्टार्ट होगा। यहाँ भगवान इन्सान बन जाते हैं। रोमांस को इतना महत्व क्यों दिया गया है? क्योंकि भारत में एक समय था जब या तो ऋषि बहुत यज्ञ कर रहे थे, वो बहुत सिरियस होते थे। सिर्फ ब्राह्मणों को समझ आता था क्या कर रहे हैं वो लोग, साधारण जनों का समझ नहीं आता था। और दूसरी ओर योगी थे, वैरागी थे, जो कहते थे कि ये सब माया है, इसे छोड़ो। वे औरतों या परिवार में कोई दिलचस्पी नहीं लेते थे। केवल बैठ के ध्यान करते थे। अपना सर मुंडा लेते थे और कहते थे कि संसार में कुछ नहीं रखा। तो आम आदमी सोचने लगा कि जीवन में सुखी रहने में और भगवान में कोई संबंध नहीं है क्या? तो कहानियों के माध्यम से ये बताना चाहते हैं कि भगवान को विलासपूर्ण जीवन, रसभरा जीवन भी पसंद है। विष्णु, शिव, कृष्ण हैं, वो सांसारिक जीवन में भी भाग लेते हैं। पुरुष और प्रकृति के मिलन के बारे में ज्ञान देती हैं ये कथाएँ। एक मजेदार तरीके से, एक उत्सव के मूड में (श्रृंगार, उत्सव, विवाह)।

**क्या मनुष्य भी देवों के साथ विवाह कर सकते हैं?**

हमारे देश में कुछ भी हो सकता है। लेकिन अगर आप पौराणिक कथाएँ देखें तो ऐसे लोग हैं जिन्होंने देवताओं के साथ विवाह किया है। पुराने ज़माने में गणिकाएँ होती थीं, जिन्हें तवायफ़ कहते हैं। वो स्वतंत्र थीं, वे देवताओं से विवाह करती थीं और देवदासी कहलाती थीं। वे स्वतंत्र थीं देवदासी सदा सुहागन होती थीं। उनके पति, भगवान हमेशा ज़िन्दा रहते थे – और वे अपना प्रेमी चुन सकती थीं। धीरे-धीरे लोगों ने देवदासियों का शोषण किया और यह परम्परा बंद हो गई। भक्त भी कभी-कभी देवताओं के साथ शादी करते हैं। कहते हैं कि हम भगवान को अपना पति मानते हैं। जैसे मीराबाई कहती थीं कि मेरा एक पति है जो कृष्ण है। पुरुष भक्त भी कह सकते हैं कि हम भगवान की दासी हैं, पत्नी हैं।



## विभिन्न रूप

पौराणिक कथाओं में भगवान और देवता अपने रूप बदलते रहते हैं। इस सिद्धांत को थोड़ा समझाएँ।

भगवान का रूप क्या होना चाहिए? अगर हम इस प्रश्न के ऊपर विचार करें तो भगवान तो अनंत हैं, अखंडित हैं। और सब रूप उनमें सम्मिलित हैं – जैसे विश्व-रूप होता है – तो क्या रूप होना चाहिए उनका? क्या वे स्त्री हैं या पुरुष? जवान या बूढ़े? कुछ कहते हैं कि वे सगुण हैं। कई लोग कहते हैं कि वो निर्गुण हैं। पौराणिक कथाओं में इस पर बहुत विचार हुआ है और इसलिए भगवान को अलग-अलग रूप दिये गये हैं। कभी वो ब्रह्मचारी हैं, कभी पुरुष, कभी स्त्री, कभी देवी है, कभी देव है, कभी पेड़ होते हैं, कभी पशु होते हैं, इत्यादि।

हजारों साल पहले प्राचीन हिन्दु धर्म में, लोक धर्म में, लोग पत्थरों की पूजा करते थे, पेड़ों की पूजा करते थे। उनका विश्वास था कि इनके अंदर कोई देवी-देवता हैं। वे मानते थे कि पत्थरों में यक्ष बैठे हुए हैं, पानी में अप्सराएं हैं, पेड़ों में गंधर्व हैं। भागवत पुराण में कहते हैं कृष्ण एक दिन जब गोकुल में थे तब उन्होंने एक पेड़ को उखाड़ा था, उसमें से दो गंधर्व निकले। तो ऐसे अलग-अलग रूप के देवी देवता होते हैं पौराणिक कथाओं में। पशुओं में जैसे गाय गोमाता हैं। गाय की पूजा की जाती है, पर बहुत लोग उसे लिटरली ले लेते हैं, लेकिन उसे रूपक के तरह देखना जरूरी है। प्रकृति को गाय माना जाता है क्योंकि उनसे दूध-स्वरूप जीवन मिलता है।

**दो प्राणी जुड़के एक नया प्राणी क्यों बन जाते हैं?**

कल्पनाओं को जितना खींचा जा सकता है, खींचते हैं। गणेश हैं, हाथी का सर, पुरुष शरीर है उनके पास; हायग्रीव हैं, जो विष्णु का रूप है और घोड़े का सर है। नरसिंह, आधे पुरुष आधे शेर हैं, इत्यादि। यह जानी-मानी कहानी है। एक असुर की, हिरण्यकश्यपु, जिसे एक वरदान मिलता है कि उसे कोई नहीं मार सके और जो मार सके वो ऐसा होना चाहिए जो न ही पुरुष हो न पशु हो तो वह एक बंटवारा करता है। तो भगवान कहते हैं, 'मैं तो अखंडित हूँ, मेरा बंटवारा नहीं हो सकता तो मैं एक ऐसा रूप लूँगा जो पशु भी है और पुरुष भी है'। नरसिंह का अवतार इसलिए आता है।

यही बात कई और कहानियों में भी है। ओडिसा में सरला दास महाभारत होती है जहाँ पे नबागुंजर की कहानी है, जिसमें कृष्ण नौ जानवरों का रूप लेते हैं और अर्जुन के पास जाते हैं। अर्जुन उनको देखते हैं और डर जाते हैं। बहुत ही अजीब जानवर है, जो मुर्गा है, मोर है, बैल है, सिंह है, हाथी है, साँप है। यह कल्पना से परे चीज़ है, तो

भगवान ने ऐसा रूप लिया है। जिसे इंग्लिश में हम मॉनस्टर कहेंगे लेकिन पौराणिक कथाओं में वह भगवान का रूप हो जाता है। शैव परम्परा में शिव शरभ का रूप लेते हैं। शरभ एक शेर है जिसकी आठ टांगें होती हैं। अप्राकृतिक शब्द नकारात्मक माना जाता है पर यहाँ सकारात्मक है। इसलिए लक्ष्मी की चार बाहें होती हैं, विष्णु के दस सर होते हैं, पंचमुखी हनुमान या दशमुखी हनुमान जैसे कॉन्सेप्ट होते हैं। या जब भगवत गीता में कृष्ण विश्वरूप लेते हैं, तो उनके देव, गंधर्व असुर, पेड़-पौधे, सभी प्रकार के प्राणी के रूप दिखाई देते हैं।

**क्या कथाओं में स्त्री पुरुष का रूप ले सकती हैं? या फिर पुरुष स्त्री का रूप ले सकते हैं?**

हाँ, कथाओं में पुरुष-स्त्री अलग-अलग नहीं होते। जैसे, मोहिनी रूप विष्णु का जाना-माना रूप है। मोहिनी असुरों को भी मोह लेती है और शिव को भी। योग वशिष्ठ पढ़ें, तो उसमें एक राजा मानता है कि स्त्रियों को कुछ ज्ञान नहीं होता जबकि उसकी रानी बहुत बड़ी ज्ञानी होती है। अपने पति को यह सिखाने के लिए कि स्त्रिलिंग-पुल्लिंग से ज्ञान का कोई संबंध नहीं होता, कभी पुरुष का रूप लेके अपने पति के पास जाती है, कभी स्त्री का रूप लेके। हमें बाहरी रूप से अलग सोचने पर मजबूर कर देते हैं भगवान के रूप।

**क्या उसी को माया कहते हैं?**

वेदों में माया शब्द के कई मतलब होते हैं। कभी-कभी सिर्फ शक्ति होता है, जादुई शक्ति जैसे माया जाल। विष्णु को मायावी कहते हैं, लेकिन मायावी असुर भी होते हैं। मुझे लगता है यह इरादे पर निर्भर है। यदि आप में जादुई शक्ति आ जाती है, तो आप सिद्ध हैं, सिद्ध मतलब तप से आपको जो शक्ति मिलती है। इससे आप रूप बदल सकते हैं। भगवान तो सिद्ध हैं ही लेकिन मनुष्य भी सिद्ध प्राप्त कर सकते हैं। पर आप, रूप क्यों बदलेंगे यह सोचना जरूरी है। जब आप अपने स्वार्थ के लिए रूप बदलते हो तब वो जादू-टोना हो जाता है, और चालाकी है।

इंद्र की एक कहानी है, जिसमें वे गौतम ऋषि का रूप ले लेते हैं, ताकि वे गौतम ऋषि की पत्नी, अहल्या, के साथ शारीरिक संबंध जोड़ सकें। वे पत्नी धर्म को तोड़ देते हैं। गुस्से में गौतम उन्हें श्राप देते हैं और उनका शरीर फोड़े-फुन्सियों से भर जाता है। असुर भी रूप बदल सकते हैं, जैसे महिष-असुर – भैसे, हाथी, शेर और इन्सान का रूप भी ले सकते हैं। एक कहानी में एक असुर होता है जिसका नाम है आदि, वो शिव का रूप लेता है ताकि वो पार्वती को पा सके, लेकिन पार्वती उसे पहचान जाती हैं, कि ये तो शिव नहीं है क्योंकि उनके पास दिव्य दृष्टि है।

दूसरी कहानी है जहाँ विष्णु शंखचूड़ नामक एक असुर का रूप ले लेते हैं। कहते हैं कि वृंदा जब तक पतिव्रता रहेगी तब तक शंखचूड़ को कोई मार नहीं सकेगा। विष्णु शंखचूड़ का रूप लेके वृंदा के पास जाते हैं और वृंदा को लगता है कि ये तो मेरे पति हैं। एक पल के लिए वो पराए पुरुष के बारे में सोचती है तो पतिव्रता की जो शक्ति है, वो चली जाती है और युद्ध में शंखचूड़ मारा जाता है। जब शंखचूड़ वृंदा को कहता है कि तुमने मुझे धोखा दिया है तो वृंदा को पता चलता है कि ये छल-कपट विष्णु ने किया

है। इस सदमे से वृंदा एक तुलसी का पौधा बन जाती हैं। विष्णु को बहुत बुरा लगता है। वे कहते हैं कि जब तक तुलसी का पत्ता मुझे नहीं चढ़ाया जाएगा, मेरी पूजा सम्पूर्ण नहीं होगी। तो वो एक पतिव्रता स्त्री का मान रख रहे हैं। ये कहानी भारत में हर प्रांत में नहीं है। ये कहानी आती है पुराणों में।

ये रूप बदलने की कहानियाँ मुश्किल खड़ी कर देती हैं कि कब सही है कब ग़लत हैं। जैसे, जब पार्वती तप करती हैं, तब शिव उनकी परीक्षा लेने के लिए अलग-अलग रूप लेकर आते हैं – कभी सुंदर पुरुष के रूप में आकर कहते हैं कि शिव से क्यों शादी कर रही हो वो तो वैरागी हैं जिनके शरीर पर राख मली हुई है। फिर वो वृद्ध आदमी के रूप में आते हैं। कई लोक कथाएँ हैं रूप बदलने के बारे में। संतोषी माँ की व्रत कहानियाँ बहुत जानी-मानी हैं। इनमें वे एक बुढ़िया का रूप ले लेती हैं, जो रास्ते पर रहती है, भिखारन के रूप में, और परीक्षा लेती है भक्तों की, कि क्या वो उसके प्रति सहानुभूति दिखाते हैं या नहीं। वो उनका आदर कर रहे हैं या नहीं। तो भगवान कोई भी रूप लेके आ सकते हैं किसी भी समय।

एक मुखौटा होता है और एक चेहरा होता है, और राम का मुखौटा रावण पहनना चाहता है। लेकिन यह इतना आसान नहीं है क्योंकि जब आप भगवान का मुखौटा पहनते हैं तो उनके गुण भी आप में होने चाहिए। वह आपको अंदर से बदल देता है। इसलिए रावण में बदलाव आ जाता है, उसका अहंकार चला जाता है और वह अपने नौकर को मार नहीं पाता।

एक कथा है जिसमें एक आदमी मोर का मुकुट पहन कर कहता है कि मैं कृष्ण हूँ। तो कृष्ण कहते हैं, 'हाँ-हाँ, तुम कृष्ण हो। लो ये सुदर्शन चक्र'। जब वो चक्र पकड़ता है, तो वह उसके वज़न से दब जाता है।

**क्या ऐसी कोई कहानी है जहाँ शिव अपना रूप बदलते हैं?**

सभी देवता रूप बदलते हैं तो शिव के रूप बदलने की भी कई कहानियाँ हैं। एक कहानी साउथ इंडिया से आती है, जहाँ पे एक बूढ़ी औरत शिव भक्त है जो अपनी बेटी के घर जाना चाहती है क्योंकि वह माँ बनने वाली है। पर नदी में बाढ़ आ आती है तो वो शिव से प्रार्थना करती है – 'मैं क्या करूँ? शिव मेरी मदद कीजिए'। तो शिव दाई माँ बनकर जाते हैं और बच्चे के पैदा होने में मदद करते हैं। तो शिव ने रूप बदला वो भी स्त्री का और वृद्धा का।

एक कहानी है जो मथुरा की है। मथुरा में कहते हैं कि कृष्ण वृंदावन में रासलीला कर रहे थे। रास में मान्यता है कि केवल एक पुरुष होता है – जैसे कृष्ण पूर्ण पुरुष हैं और बाकी सब गोपिकाएँ होती हैं। सभी देवता रासलीला देखना चाहते हैं लेकिन वो नहीं जा सकते। तो वो यमुना के पास जाते हैं जो उनसे कहती हैं कि मैं आपको स्त्री रूप दे देती हूँ, आप मुझमें डुबकी लगाइये। तो नारद मुनि ने डुबकी लगाई और स्त्री का रूप लेकर रासलीला का अनुभव किया। अर्जुन ने भी इसी तरह रास किया। शिव ने भी यही किया। एक बार राधा रास के समय कृष्ण को मिलने आती हैं और देखती हैं कि कृष्ण किसी और के साथ नाच रहे हैं, तो उनको बहुत बुरा लगता है। तब कृष्ण उनके पास जाकर कहते हैं ये जो हैं, वो मेरे गुरु हैं, मैं नटवर हूँ और ये नटराज हैं। लेकिन

तुमने जो नियम बनाया है कि रासलीला में केवल स्त्री ही आ सकती हैं तो उन्होंने स्त्री रूप ले लिया है ताकि वो रास में भाग ले सकें। तो यह स्त्री-पुरुष का बदलाव आम बात है। हमें मर्म के ऊपर ध्यान देना चाहिए शरीर के ऊपर नहीं।



23

## विष्णु के अवतार

**अवतार का क्या मतलब है?**

अवतार शब्द अवतरण से आता है, अवतरण का मतलब है। ऊपर से नीचे आना। ऊपर क्या है? ऊपर वैकुण्ठ है, विष्णु जहाँ रहते हैं। और वहाँ पे मृत्यु नहीं होती। जब परमात्मा धरती पे अवतरित होते हैं, तब वे नाशवान हो जाते हैं। मतलब वो मृत्यु लोक में आते हैं – उनका जन्म योनि से होता है और वे मृत्यु का अनुभव करते हैं। अनगिनत से वो गिनित बन जाते हैं, अनश्वर से नश्वर। वे उद्धार के लिए अवतार लेते हैं, इन्सान को आगे बढ़ाने के लिए।

**भगवान विष्णु के कितने अवतार हैं?**

अगर आप जनरली, पब्लिक से बात करें, तो वो कहेंगे कि दस अवतार हैं, लेकिन ये दशावतार की बात 1000 साल के पहले, जयदेव की गीतगोविन्द से आई है। इसके पहले अगर आप पुराणों को देखें तो नंबर ऐसे फ़िक्सड नहीं है, कहीं पे दस है, कहीं बीस हैं, कहीं तीस से भी ज्यादा अवतार हैं। भागवत पुराण में कई अवतार हैं, उनमें मोहिनी अवतार भी है, मतलब स्त्री रूप है। राजहंस अवतार है, ऋषि (व्यास) का अवतार है। आप पुराणों को देखें जैसे भागवत पुराण है और विष्णु पुराण हैं तो इनमें अवतार बहुत अलग-अलग हैं। कोई पक्की सूची नहीं है। लेकिन आजकल हमारे मन में आता है कि दस अवतार हैं जो तय हो गया है।

**तो सबसे लोकप्रीय दस अवतार कौन से हैं?**

दस अवतार हैं – पहला है मत्स्य (मछली), दूसरा है कुरुमा (टर्टिल), तीसरा है वराह (जंगली सूअर), चौथा है नरसिंह (आधा मानव आधा शेर), पाँचवा है वामन अवतार (बौना), परशुराम, राम (रघुकुल के राम), कृष्ण, बुद्ध और दसवाँ है कल्कि का अवतार। लेकिन ये सूची भी पक्की नहीं है। जयदेव के गीत गोविन्द जहाँ से दशवतार का कॉन्सेप्ट आता है वहाँ कृष्ण को इस सूची में नहीं डाला गया है क्योंकि कृष्ण पूर्ण अवतार हैं। तो जो आठवें अवतार हैं वह हैं बलराम और गौतम बुद्ध नौवें हैं। पहली बार बुद्ध का वर्णन यहाँ पे आता है। और कुछ सूचियाँ हैं जहाँ पर आठवें अवतार कृष्ण हैं और नौवें अवतार बलराम। हालांकि विद्वान बहस करते हैं एक 'सही' सूची के ऊपर, कोई सही या ग़लत सूची नहीं है, सिर्फ लोकप्रिय सूची है।

**तो भगवान बुद्ध भी विष्णु के अवतार हैं?**

ये एक बहुत ही विवादास्पद सवाल है। अगर आप बौद्ध धर्म के लोगों को पूछोगे तो

वो कहेंगे बिल्कुल नहीं हैं और हिंदु धर्म के लोगों से पूछो तो वो कहेंगे हाँ हैं। एक समय था हमारे इतिहास में, जब बौद्ध धर्म और हिंदु धर्म में बहुत ही वाद-विवाद होता था कि कौन बेहतर है। तो सबने अपनी-अपनी बात की होगी। तो हिंदु धर्म के लोगों ने कहा कि बुद्ध तो विष्णु के अवतार ही हैं। तो अगर आप विष्णु की पूजा करो तो बुद्ध की भी पूजा कर रहे हो। ये बेशक बौद्ध धर्म के लोगों को पसंद नहीं था और आज भी वे यह नहीं मानते।

**कहते हैं कि बुद्ध ने बोधिसत्व का रूप लेकर धरती पर जन्म लिया मानव जाति के कल्याण के लिए, और भगवान विष्णु ने भी अवतार लिए थे धरती पर आने के लिए...**

बौद्ध धर्म की शुरुआत हुई थी, 2500 साल पहले, तब बुद्ध ने कहा था कि जहाँ इच्छा है, वहाँ दुख होगा और जहाँ दुःख होगा वहाँ पीड़ा है। अगर आपको सब दुखों से मुक्ति चाहिए तो आपको दुनिया को त्याग कर निर्वाण लेना होगा। धीरे-धीरे बुद्धिज्म में बदलाव आया। लोगों ने कहा कि ये बहुत ही कट्टर लग रहा है – दुनिया को त्यागना, दुनिया को रिजेक्ट करना है, यह दुनिया से विरक्ति, व्यावहारिक नहीं है; उन्हें मध्यम मार्ग चाहिए था। बौद्ध धर्म का रूप भी बहुत मदना लग रहा था – बुद्ध की मूर्ति होती थी केवल। वहाँ फीमेल एनर्जी, शक्ति नहीं होती थी। तो धीरे-धीरे बौद्ध धर्म में एक बदलाव आने लगा।

थेरवाद की पुरानी प्रथा एक नये बौद्ध धर्म में दो हजार पहले बदल गई जिसे महायाण बुद्धिज्म कहते हैं। ये बोधिसत्व का कॉन्सेप्ट है। यहाँ बुद्ध कहते हैं मुझे निर्वाण नहीं चाहिए, मैं निर्वाण नहीं लूँगा। मैं धरती पर रहूँगा, लोगों के कल्याण के लिए। और इसी समय जातक कथाएँ आईं जो कि बुद्ध के पिछले जन्मों के बारे में थीं, जब उन्होंने बहुत ही अच्छे काम किए थे बोधिसत्व के रूप में। उनके कर्म इतने अच्छे हो गए कि उन्होंने बुद्ध के रूप में जन्म लिया। तो यह कॉन्सेप्ट उस समय आता है, जब हिन्दु धर्म वैदिक परम्परा से बदल कर पौराणिक परम्परा में ढल रहा था। यज्ञ की परम्परा से बदल कर कथा परम्परा में बदल रहा था, जब कथाओं में विष्णु की, शिव की, देवी की कहानियाँ आ रही थीं। यहाँ अवतार का कॉन्सेप्ट जन्म लेने लगा – भगवान अनंत हैं, सब जगह हैं लेकिन वो धरती पर आते हैं लोगों को मदद करने के लिए। बोधिसत्व अभी भी प्रचलित हैं। चाईना, जापान, साउथ इस्ट एशिया में। यहाँ बोधिसत्व के कई हाथ होते हैं, कई सर होते हैं ताकि वो लोगों के दुख-दर्द सुन सकें, उनकी मदद कर सकें। विष्णु के भी कई हाथ हैं, चतुर्भुज और कई सर लेकिन जब वे मनुष्य अवतार लेते हैं तो उनके केवल दो हाथ होते हैं और एक सर।

**कहते हैं कलयुग के अंत में विष्णु अवतार कल्कि आएगा। क्या वे आ चुके हैं या आने वाले हैं? आपको क्या लगता है?**

पुराण में जब कल्कि की कहानी आती है, तो ये एक ऐसा दौर था इंडिया में जब हूण, गुजर, यवण – अलग-अलग प्रकार की जनजातियाँ, उत्तर-पश्चिम से आ रही थीं, जैसे अफगानिस्तान, उज़बेकिस्तान, सेंट्रल एशिया। वे हम पर बार-बार हमला कर रहे थे क्योंकि हमारे पास धन और संपत्ति बहुत थी तो शायद इस समय कल्कि की कहानी ने जन्म लिया। कि शायद ऐसा कोई रक्षक आएगा घोड़े पर सवार और आक्रमणकारियों से बचाएगा। वह दिखने में कुछ-कुछ आक्रमणकारियों जैसा ही

था। कहते हैं कि इस कहानी का जन्म इसलिए भी हुआ कि उस समय क्रिश्चैनिटी आ रही थी, यहूदियों से हम मिल रहे थे, उनके साथ बिजनस करते थे। उनके यहाँ मसीहा होता है जो पुरानी दुनिया का नाश करके नई दुनिया, नई व्यवस्था का निर्माण करता है। इसी से शायद कल्कि के कॉन्सेप्ट का निर्माण हुआ कि जब हर जगह भ्रष्टाचार फैला होगा, हर जगह अधर्म हो रहा होगा, विष्णु योद्धा का रूप लेंगे और सब कुछ तोड़कर एक नए विश्व का निर्माण करेंगे। यह कॉन्सेप्ट तो हर समाज हर संस्कृति में है। क्योंकि अब हमको हमेशा लगता है कि दुनिया इतनी बुरी है तो कोई आके हमें बचा ले।

**विष्णु के अवतारों से हमें कोई सीख मिलती है?**

हमारी प्राचीन कथाओं में हमेशा एक सवाल होता है, कि दुनिया में भाग लेना है या नहीं लेना है? जैसे शिव वैरागी हैं तो भाग नहीं लेना चाहते। तो उनके कोई अवतार नहीं है। विष्णु हैं, वो पालनहार हैं। वो अपने अवतारों द्वारा दिखाते हैं कि संसार में रह कर भी आप आध्यात्म कैसे पा सकते हैं। जैसे मत्स्य अवतार है। जब बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है, उसमें पाप नहीं है। उसे मत्स्य न्याय कहते हैं। एक बार, एक छोटी मछली –विष्णु अपने मत्स्य अवतार में – मनु से प्रार्थना करती है कि वे उन्हें बड़ी मछली से बचायें। जब मनु उन्हें बचाते हैं तो अलग नियमों पर निर्भर संस्कृति शुरू होती है। विष्णु का कुरमा अवतार संकलन के बारे में है। अमृत मन्थन में एक सहारा, एक धुरी चाहिए होती है जिस के ऊपर मंथन हो सके। यह सहारा देता है विष्णु का कुरमा अवतार। वैसे ही जीवन में आपको मानसिक स्थिरता चाहिए। वरह शक्ति का महत्व दिखाता है, नरसिंह बुद्धि और चतुराई का, इत्यादि। हर अवतार बुद्धिमानी का एक गुण देता है।

यह अवतार का कॉन्सेप्ट हमेशा धर्म स्थापना से जुड़ा होता है। भगवत गीता में एक फेमस श्लोक है जहाँ विष्णु कहते हैं कि जब भी अधर्म होता है, दुनिया में, तो 'मैं अवतरित होता हूँ, ताकि धर्म की स्थापना हो सके।' ये कॉन्सेप्ट केवल वैष्णव धर्म से जुड़ा है शैव या शक्ता से नहीं। लेकिन अगर आप लोकल टैक्स्ट देखेंगे तो लोग कहते हैं कि शिव के भी अवतार हैं। कहते हैं हनुमान शिव के अवतार या अंश हैं। शाक्त परम्परा में महाविद्या मातृका, योगिनी, सब देवी के अवतार हैं।

लेकिन वैष्णव मत में एक बहुत इंटरेस्टिंग कॉन्सेप्ट है कि विष्णु हमेशा धरती पर आते हैं जब देवी को तकलीफ़ होती है। जब रेणुका परेशान होती हैं, जब विष्णु परशुराम का रूप लेते हैं, तो रेणु माता हैं और परशुराम उनके पुत्र। जब देवी सीता का रूप लेती हैं तब विष्णु राम का रूप लेते हैं। एक और उदाहरण है। भगवद् पुराण में एक कहानी है जिसमें भू-देवी विष्णु के सामने एक गाय के रूप में आती हैं और मानव जाति में फैले भ्रष्टाचार और स्वार्थ के बारे में बताती हैं। वे रोते हुए कहती हैं कि उन्हें ऐसा लगता है कि उनका शोषण किया जा रहा है और उन्हें सही आदर नहीं मिल रहा। विष्णु उन्हें वचन देते हैं कि वे धरती पर ग्वाले (कृष्ण) का जन्म लेंगे उन्हें बचाने के लिए। एक और मान्यता है कि जब भी विष्णु अवतार लेते हैं, देवी भी जन्म लेती हैं। शैव और शाक्त परम्परा के बीच का रिश्ता हमेशा पति-पत्नी का होता है, पर शाक्त और वैष्णव रिश्ते बदलते रहते हैं। देवी माँ, पत्नी, दोस्त, बहन भी हो सकती है।

द्रौपदी को भी देवी का स्वरूप माना गया है, खासकर साऊथ में, और यह भी कहा जाता है कि योगमाया विष्णु की बहन हैं। तो विष्णु उस रूप में आते हैं जिस रूप में देवी को उनकी आवश्यकता होती है।

**विष्णु के दो अवतार हैं – राम और परशुराम – दोनों ही धरती पर एक साथ थे, ये कैसे संभव है?**

सबसे पहले, पौराणिक कथाओं में लौजिक, तर्क नहीं लगाना चाहिए, हम हमेशा तर्क लगाते हैं। वो भगवान हैं। भगवान कुछ भी कर सकते हैं। एक बार में दो अवतार भी हो सकते हैं।

दूसरा, जब पहले ये कहानी लिखी गई थी उस समय अवतार का कॉन्सेप्ट नहीं था। जब अवतार का कॉन्सेप्ट इन कहानियों के ऊपर लगाया गया तब कुछ लोगों ने कहा राम विष्णु के अवतार हैं, कुछ लोगों ने कहा, परशुराम विष्णु के अवतार हैं, कुछ लोगों ने कहा दोनों विष्णु के अवतार हैं। तो ऐसे ये कहानियाँ शुरू हुई। कुछ निर्धारित नहीं है। अलग-अलग ग्रंथों से, अलग-अलग समय और प्रदेशों से मिलकर कहानियाँ बनीं। तो राम और परशुराम दोनों ही विष्णु के अवतार हैं। परशुराम का जन्म हुआ किरतवीर्य – अर्जुन जो बहुत ही अधर्मी राजा था, उसका संहार करने के लिए। वे कई ऐसे राजाओं को बेदर्दी से मारते हैं। कहते हैं, उन्होंने एक भी क्षत्रिय जीवित नहीं छोड़ा था। फिर और भगवानों ने उनसे प्रार्थना की, कि दुनिया चलाने के लिए क्षत्रियों की भी आवश्यकता है। परशुराम ने कहा कि जब मुझे एक अच्छा क्षत्रिय मिलेगा तो मैं रुक जाऊँगा। जब राम का उनसे मिलन हुआ, उन्होंने राम से बातचीत की तो उन्हें लगा हाँ ये अच्छा क्षत्रिय है और वे रुक गये। तो ये है परशुराम की कहानी जहाँ परशुराम की भूमिका खत्म हुई और राम की शुरू हुई।

**क्या विष्णु के अवतारों और चार्ल्स डार्विन की थ्योरी ऑफ़ इवोल्यूशन में कोई संबंध है?**

चार्ल्स डार्विन की थ्योरी ऑफ़ इवोल्यूशन किरिश्चियन मत, जिसमें कहते हैं कि सात दिन में पूरी दुनिया बनी, उसको चैलेंज करती है। उनके हिसाब से देखा जाए तो पहले माइक्रो औरगेनिज्मज़, सूक्ष्म-जीव थे, जिसके बाद धीरे-धीरे पानी के जानवर, जैसे मछली आए, उसके बाद ज़मीन के ऊपर चौपाया जानवर और फिर मनुष्य आए। तो ये इवोल्यूशन (क्रमगत उन्नति) का कॉन्सेप्ट है। इंडिया में जब यह ज्ञान आया तो लोगों ने इसे विष्णु के दस अवतारों से जोड़ा। पहले मत्स्य अवतार, उसके बाद कुर्मा अवतार, उसके बाद वराह अवतार, उसके बाद नरसिंह अवतार आता है। उसके बाद वामन अवतार और फिर परशुराम। तो यहाँ पर इवोल्यूशन दिखाई दे रहा है। पर क्या यह डार्विन के सिद्धांत से जुड़ा है? यह विवादास्पद सवाल है।

लेकिन आगे अगर हम देखें तो पहले चार अवतार पशु होते हैं। मनुष्य जब आते हैं तो उसके बाद हम वर्ण-व्यवस्था देखने लगते हैं। क्योंकि वामन अवतार और परशुराम अवतार ब्राह्मण हैं, राम क्षत्रिय हैं, कृष्ण अवतार कोई कहता है क्षत्रिय है, कोई कहता है ग्वाले भी हैं – सारथी भी। बुद्ध वर्ण-व्यवस्था को नहीं मानते। उसके बाद कल्कि अवतार है, जो बाहर से आता है, घोड़े पे सवार योद्धा जिसका कोई वर्ण नहीं है,

लेकिन कुछ कहानी में कहते हैं कि वो ब्राह्मण है। तो अलग-अलग कहानियाँ हैं। जानवर से मनुष्य तक की और फिर वर्ण-व्यवस्था तक का सफ़र दिलचस्प है, हालांकि इसका सही मतलब क्या है, यह विद्वानों में विवाद का विषय है।



## ग्रह नक्षत्र

**हमारे वेदों में नक्षत्रों और ग्रहों को इतना महत्व क्यों दिया जाता है?**

वेदों में तीन मंडलों को बहुत महत्व दिया जाता है। मंडल का मतलब है सर्कल, गोलाकार-अंडे और मन को जब जोड़ेंगे तो मंडल बनेगा। भूमंडल जहाँ पे हम रहते हैं और उसके ऊपर प्रभामंडल है, जहाँ माना जाता है कि देवता रहते हैं और जो तीसरा मंडल है वो है पितृलोक, मृत पितृओं की धरती। आप प्रभामंडल को देखकर बता सकते हैं कि कब गर्मियाँ, सर्दियाँ या बरसातें आएँगी। यह सब एक तरीके से चल रहा है। जब ये ग्रह, चंद्रमा, तारे हिलते हैं तो आप बता सकते हैं कि क्या तापमान होगा, इत्यादि। एक सिस्टम है दुनिया में। तो लगता है कि शायद देवता वहाँ रहते हैं और वो मौसम को संभाल रहे हैं।

वेदों में देखें तो ज्यादातर जो वेद के अनुष्ठान हैं, वो हमेशा आकाश की तरफ होते हैं। अग्नि की पूजा होती है क्योंकि वो ऊपर की तरफ जाती है और ये मानना है कि हम धी डालेंगे तो वह भगवान के पास, इन्द्र देवता के पास पहुँचेगा। इसी तरह सूर्य की पूजा होती है, चंद्र की भी। पेड़ की पूजा होती है। उसको भी सोम कहा जाता है क्योंकि वो भी प्रभामंडल की तरफ जा रहे हैं। तो सारे वैदिक श्लोक जो हैं वो आकाश को समर्पित हैं। लेकिन पुराणों में धरती को भी महत्व दिया जाता है। जो ग्राम देवियाँ हैं, वो धरती पर हैं। तो आसमान को नर सिद्धांत माना गया है और धरती को मादा सिद्धांत माना गया है। नीचे शक्ति है और ऊपर शिव है।

**नक्षत्र क्या होते हैं? और क्या नक्षत्र और राशि एक नहीं हैं?**

प्रभामंडल जिसको कहते हैं यहाँ पे तारे होते हैं। लेकिन हर संस्कृति में, हर समुदाय के लोगों ने जैसे चाईना, इंडिया, बैबीलोन, ने तारों के झुंड को देखा। और उन्होंने उन्हें जोड़ करके कहा, ये एक कॉन्सटीलेशन, तारा मंडल है। और इसको उन्होंने अलग-अलग रूप दिए ताकि वो प्रभामंडल को बाँट सकें। ऐसे ही एक झुंड को जिसमें बारह हिस्से हैं, राशि कहते हैं जैसे मकर, मेष इत्यादि। भारत में इससे ज्यादा सताईस हिस्से हैं जिनको कहते हैं नक्षत्र जैसे रोहिणी, विशाखा, फाल्गुनी, इत्यादि। ये सही में छब्बीस हैं क्योंकि एक अभीजीत दिखाई नहीं देता। तो आकाश को बारह राशियों और सत्ताइस नक्षत्रों में बाँटा गया है।

**ये सब नक्षत्र मादा हैं?**

सभी नक्षत्रों को दक्ष प्रजापति की बेटियाँ माना गया है। दक्ष अपनी सत्ताइस बेटियों की शादी चंद्र से करवा देते हैं। किंतु चंद्र की सबसे फेवरिट थीं रोहिणी। एक बार

इसी बात को लेके दक्ष और चंद्र में विवाद होता है क्योंकि चंद्र अपनी बाकी पत्नियों की ओर ध्यान नहीं देते। फिर चंद्र गुस्से में कहते हैं कि वो रोहिणी के साथ वहाँ से चले जाएँगे। इस पर राजा दक्ष उन्हें श्राप देते हैं कि जैसे उन्होंने उनकी बेटियों को छोड़ा वैसे ही उनका शरीर भी धीरे-धीरे उन्हें छोड़ देगा और वो लुप्त हो जाएँगे। तब चंद्र शिव के पास मदद के लिए जाते हैं। उन्होंने अपना सबक सीख लिया होता है। शिव उन्हें बोलते हैं कि वे लुप्त होंगे पर फिर धीरे-धीरे वो अपने शरीर में आएँगे फिर लुप्त होने के लिए। तो कहते हैं कि चंद्र एक-एक नक्षत्र के पास जाते हैं हर रोज़ (अलग-अलग पत्नी के पास)। जब वो रोहिणी के पास जाते हैं, तो कहते हैं वो शुक्ल पक्ष में हैं – फुल मून और फिर वह धीरे-धीरे कम होने लगते हैं। जब अमावस की रात होती है तब वे अभीजीत के साथ होते हैं।

**ग्रह क्या होते हैं?**

ग्रह, आकाशीय पिण्ड हैं, सिर्फ़ ग्रह ही नहीं, सूर्य भी एक ग्रह है। और क्योंकि वे अपनी जगह से हिलते रहते हैं, वे नर हैं और क्योंकि तारे अपनी जगह पे स्थापित हैं, वे मादा हैं।

**इन पर कोई कहानियाँ हैं? सूर्य के बारे में बताएँ।**

सूर्य के साथ प्रेम जुड़ा है। कहते हैं जो रात की रानी का फूल है, वो सूर्य के प्यार में थी पर सूर्य को उसमें दिलचस्पी नहीं थी। रात की रानी को इतना दुख होता है वो कहती है कि मैं तभी खिलुगी जब सूर्य आकाश में नहीं होगा। सूरजमुखी, हालांकि सूर्य को ही देखती रहती है जबकि सूर्य उसकी ओर देखता भी नहीं।

**तो, सूर्यदेव और चंद्रदेव दिल तोड़ने वाले हैं। मंगल और बुध के बारे में बताइए।**

मंगल राशि लड़ाई, हिंसा और उग्रता से जुड़ी है और कार्तिकेय, लड़ाई के देव से जुड़ा है। कुछ कहानियों में वह गणेश के उग्र रूप से जुड़ा है। मंगल ग्रह शुभ और मंगल से भी जुड़ा है। इसका लाल रंग देवी से जुड़ा है जिनके पुत्र को भी मंगल कहते हैं।

बुध ग्रह संचार, बुद्धि, और साफ़ बोलने से जुड़ा है। यह दिलचस्प बात है कि मूर्तियों और कलाकृतियों में इसे कभी-कभी स्त्री की तरह भी दिखाया जाता है क्योंकि सारे ग्रह ज्यादातर नर होते हैं। यह इसलिए क्योंकि बुध द्विलिंगीय है, अपने पिता के श्राप के बाद।

बुध का साथी इला है। एक राजा होता है जिसका नाम इला था, वो चंद्रवंशी था। वो एक ऐसे वन में जाता है जहाँ शिव शक्ति संभोग कर रहे होते हैं। उस जंगल में एक जादू होता है, कि जो भी उसमें जाएगा वो स्त्री बन जायेगा। तो इला राजा स्त्री बन जाता है। दुखी होकर वह शिव के पास जाता है जो उसके श्राप को बदल देते हैं। तो शुक्ल पक्ष के समय में वह पुरुष होता है और जब भी कृष्ण पक्ष होता है तो वह स्त्री बन जाता है। तो वह भी आधा पुरुष आधा स्त्री है और बुद्ध भी आधा पुरुष आधा स्त्री है। इन दोनों के मिलने से चंद्रवंश की शुरुआत होती है। दिलचस्प मुझे यहाँ क्या लगता है कि हम आजकल गे और लेस्बियन, क्वीयर शब्दों का इस्तेमाल करते हैं जो शास्त्रों में भी हैं। लेकिन हमको लगता है शास्त्रों में ये सब नहीं है।

## गुरु पर कोई कहानी है?

हम गुरु बोलते हैं, इनका नाम बृहस्पति है। गुरु कहते हैं क्योंकि वो सारे देवताओं के गुरु हैं। गुरुवार उनके लिए है। शुक्रवार, शुक्र जो हैं वो भी गुरु हैं लेकिन वो असुरों के गुरु हैं। इन दोनों में हमेशा झगड़ा होता है। कहते हैं, शुक्राचार्य जो हैं जो उनकी एक ही आँख है, और वो रचनात्मक हैं। और बृहस्पति की दो आँखें हैं, वो रैशनल हैं, समझकर ध्यान से काम करने वाले। तो आप देखोगे कि कोई भी बिजनस आप करोगे जो एक जना टीम में ऐसा होगा जो पैसों के हिसाब-किताब में सबसे आगे होगा और उसका बहुत गणितीय दिमाग होगा। उसी तरह एक और सदस्य होगा जो कोई नियम नहीं मानता होगा, और दिन की जगह रात में काम करता होगा, पर बहुत रचनात्मक होगा। आपको दोनों देवों और असुरों की खुबियों की आवश्यकता होगी। तभी समुद्र मंथन हो पायेगा और क्षीर सागर से मक्खन निकल पायेगा।

## शनि के बारे में कथा?

शनिवार के जो देवता हैं वो शनिदेव हैं। वो सूर्य के पुत्र हैं, सूर्य के कई पुत्र हैं। वे हमेशा दुखी रहते हैं, धीरे चलते हैं और ठीक से चल भी नहीं पाते, तो वो हर चीज़ को धीरे कर देते हैं। अगर वो आपकी जिंदगी में आ गए हैं तो आपको मिलेगा, लेकिन धीरे-धीरे, बहुत दिनों के बाद मिलेगा। जो जब हम सुनते हैं साढ़े साती है तो इसका मतलब है, हर चीज़ देर से मिलेगी। ये देव आपको सबर सिखाने के लिए हैं।

## आपने कहा नक्षत्र सब मादा हैं, तो क्या सब तारे मादा होते हैं?

नॉट रियली। जैसे ध्रुव तारा नर है। सप्तऋषि मंडल आपने सुना होगा, वह भी नर है। उनकी एक मजेदार कहानी है। जो सप्तऋषि थे उनकी दक्ष प्रजापति की सात बेटियों के साथ शादी हुई। तो सात ऋषि यज्ञ के लिए अपनी पत्नियों के संग अग्निकुंड के पास गए। अग्निदेव उनकी पत्नियों के सौंदर्य को देख के मोहित हो गए, और अनजाने में उन्होंने सबको छू लिया। केवल, एक रह गई अरुन्धती, जो वशिष्ठ ऋषि की पत्नी थी, वो कुछ दूर खड़ी थीं। उनको अग्नि ने नहीं छुआ। जब ये पत्नियाँ अपने पतियों के पास जाती हैं तो वे कहते हैं 'पराए पुरुष ने तुमको छुआ है, हम तुमको यज्ञशाला में आने नहीं देंगे।' तो स्त्रियाँ कहती हैं हमने कुछ नहीं किया पर इस इल्जाम से आपको गुस्सा आता है, और वे घर छोड़ के चली जाती हैं। ये जो छः तारे हैं इनको कृतिका कहते हैं, और ये अपना एक नक्षत्र बनाती हैं। सातवीं अरुन्धती हैं जो सप्तऋषि मंडल के बगल में ही खड़ी होती हैं। तो शादी के समय जब नई दुल्हन को पूछा जाये कि तुम कैसी पत्नी बनोगी, तो जवाब होना चाहिए, 'अरुन्धती जैसी'। फिर उसे तारे की तरफ इशारा करना चाहिए। अगर उसे नहीं मालूम वो कहाँ है तो पति को उसका हाथ पकड़कर तारे की तरफ इशारा करना होता है। यह रिवाज़ बहुत रोमानी होता है क्योंकि पहली बार पति-पत्नी एक दूसरे को छूते हैं।

## राशि पर कोई कहानियाँ बताइए।

राशियों में सबसे महत्वपूर्ण हैं, मकर और कर्क। मकर संक्रांति के दिन सूर्य मकर के घर में प्रवेश करता है और उत्तरायण की शुरुआत होती है। मतलब सूरज उत्तरी दिशा में जाने लगता है, गर्मी बढ़ने लगती है और उस दिन से बसंत शुरू हो जाती है। लेकिन

जब वो कर्क के पास जाता है, तो दक्षिणायन शुरू होता है। कर्क आपको पकड़ के रखता है तो दिन छोटे हो जाते हैं और रातें लम्बी। ठंड पड़ने लगती है और बारिश आती है। कहते हैं इस समय में असुर बहुत शक्तिशाली हो जाते हैं। इसलिए दशहरा, दिवाली, जैसे त्यौहार होते हैं इस समय। क्योंकि आप भगवान को जागृत करना चाहते हो ताकि वे असुरों की मारें। ये दो दिशाओं में चलना मंथन जैसा है। जब देवता खेंचते हैं तो दिन लम्बे हो जाते हैं और जब असुर खेंचते हैं तो छोटे। हमारे प्रभामंडल में अमृतमंथन पूरे साल चलता रहता है। आधा साल देवता शक्तिशाली होते हैं, आधा साल असुर। इसलिए हम सुर, असुर दोनों की पूजा करते हैं।

**विष्णु मकर के कुण्डल पहनते हैं, तो क्या उनका मकर राशि के साथ कुछ संबंध है?**

विष्णु को मकरकुण्डल कहते हैं। जिनके कुण्डल मकर के जैसे हैं। मकर संक्रांति के बाद बसंत की शुरुआत होती है मतलब जीवन फलने-फूलने लगता है। विष्णु हमेशा प्रकृति की सकारात्मक ओर से जुड़े हैं, शुक्ल पक्ष के साथ, उत्तरायण के साथ, इत्यादि। उनका सूर्य के साथ भी संबंध है, इसलिए उनको आदित्य भी कहा गया है।

मकर संक्रांति में सूर्य की पूजा होती है। जो शिव हैं वो चन्द्रमा के साथ जुड़े हैं। इसलिए उनके सर के ऊपर अर्ध-चंद्रमा होता है, और उन्हें सोमशेखर कहा जाता है। वो दक्षिणायन के साथ जुड़े हैं, कृष्ण पक्ष के साथ, इत्यादि। तो शिव और विष्णु दोनों जैसे मैंने कहा, प्रभामंडल के दो भाग हैं और मौसम का चक्र उन दोनों में बँटा हुआ है।



25

## वनस्पति और भगवान

**क्या हम वनस्पति को भगवान की तरह इसलिए पूजते हैं क्योंकि हमें उनसे अन्न और औषधि मिलती है?**

हाँ, हम मानते हैं। वैदिक काल में हमने ये देखा कि हर पेड़, हर पौधे में कुछ ना कुछ विशेषता होती है। वे हमें अन्न, औषधि, लकड़ी, वो सब चीजें देते हैं जो जीवन को चलाने के लिए हैं। हमारे पूर्वजों को लगा की पेड़ों में भगवान बसते हैं। वेदों में एक देवी हैं जिनका नाम है अरण्यानी, जो जंगल की देवी हैं। धीरे-धीरे पुराणों में एक और देवी मिलती हैं शाकम्बरी, शाखों की देवी है, मतलब वनस्पति की देवी।

जंगल में ही हमें हमारी संस्कृति मिली। यहीं से ही हमारी सभ्यता की शुरुआत हुई है। पेड़ों-पौधों से, तो इसलिए हम इनको बहुत महत्व देते हैं। यह माना जाता था कि अगर सब पेड़ों को जोड़ दें तो उनमें से अमृत निकलेगा। तो पुराणों में अमृतमंथन की कहानी में जब क्षीरसागर का मंथन हो रहा था तब जो पहाड़ इस्तेमाल हुआ था, उसके ऊपर बहुत से पेड़ थे। बार-बार आपस में रगड़ खाने के बाद उन्होंने आग पकड़ ली और पेड़ों का रस निकल कर क्षीर सागर के साथ मिल गया। मंथन से पारिजात पेड़ भी निकलता है। कई कथाओं में कहते हैं यह कल्पवृक्ष था जिसे इंद्र स्वर्ग ले गए।

एक बार स्वर्ग में नरकासुर नाम का एक राक्षस होता है जो स्वर्ग पर हमला करता है। उस युद्ध में कृष्ण इंद्र की मदद करते हैं और असुरों को हरा देते हैं। सत्यभामा, कृष्ण की पत्नी, जो उनके संग स्वर्ग गई होती हैं, वे कहती हैं कि आपने इतना काम किया है तो कुछ तो गिफ्ट लेना चाहिए। तो आप पारिजात माँगिए। इंद्र पारिजात देने को तैयार नहीं होते। और इसके ऊपर दोनों में युद्ध हो जाता है। जब पारिजात भूलोक आता है तो कृष्ण सत्यभामा से कहते हैं कि इसे बाकी रानियों को भी दिखा दो। सत्यभामा बहुत पोजैसिव हो जाती हैं, कहती हैं नहीं ये मेरा पेड़ है। उसके बाद वो जा के उसे रूक्मणी को देती हैं, ताकि वे उसे अपने बाग में लगा लें और उन्हें उसकी देखभाल न करनी पड़े। सत्यभामा पेड़ को ऐसे लगाती हैं, कि जब फूल आते हैं तो उनके बाग की तरफ आते हैं। जब कृष्ण को ये पता चलता है तो वो कहते हैं ये तो छल है। फिर वे कहते हैं कि जब-जब मैं रूक्मणी के संग होऊँगा तब-तब पारिजात खिलेगा। सत्यभामा के लिए यह उनकी खुशी में खट्स वाली बात हो जाती है। ये लोककथायें हैं कुछ हलके-फुलके क्षण भगवानों के जीवन में लाने के लिए। भगवान की कहानियों में, लीलाओं में, कुछ शैतानी लाने के लिए।

**हम कौन सा वनस्पति अलग-अलग देवी, देवताओं को चढ़ाते हैं?**

शिव के मंदिर में बेल का पत्ता और धतूरे का फूल चढ़ाते हैं। काशी विश्वनाथ मंदिर में भाँग चढ़ाते हैं। हनुमान को अर्क के फूल चढ़ाते हैं। इसे इंग्लिश में कैलोट्रोपिस इंडिका कहते हैं, वो एक ज़हरीला प्लांट होता है बैंगनी रंग का। हनुमान ब्रह्मचारी हैं, वैरागी हैं तो उनको ऐसे जंगली फूल दिए जाते हैं जो आसानी से मिल जायें। विष्णु के मंदिर में सुगंधित फूल और पत्तियाँ चढ़ाते हैं जैसे – तुलसी, चम्पा के फूल, कमल का फूल। कहते हैं कि कृष्ण वनमाली हैं जो वन के फूलों की माला पहनते हैं। गणेश को घास चढ़ाते हैं, पान-सुपारी चढ़ाते हैं, सुपारी के फूल और गेंदे के फूल चढ़ाते हैं। जो गेंदे का फूल होता है, उसकी हर पंखुड़ी के अंदर बीज होता है। वह वृद्धि का प्रतीक है। इसलिए जब भी घर में कोई पूजा होती है तो हम गेंदे के फूल के साथ आम के पत्तों की मालाएं लगाते हैं। आम चढ़ता है विष्णु को और गणेश को क्योंकि वे गृहस्थी के देवता हैं। शिव को कभी नहीं। देवीयों की पूजा में नीम का पत्ता, इमली के पत्ते, नींबू, मिर्च चढ़ाते हैं – सब तीखे स्वादवाली चीज़ें।

**गणेश को दुर्वा देते हैं, उसका क्या महत्व है?**

जब आप दुर्वा या घास को उखाड़ते हैं तो वो वापस उग जाती है; घास कभी भी पूरी तरह से समाप्त नहीं होती। कहीं ना कहीं उग ही आती है। ऋषि कहते हैं कि शायद इसके ऊपर अमृत का असर है। और पुराणों में अमृत कलश घास के ऊपर रखा गया था, इसलिए इसे शुभ मानते हैं। इसे स्थायित्व का प्रतीक मानते हैं, और हम चाहते हैं कि खुशहाली और सफलता हमेशा रहे, इसलिए घास को यज्ञों में और पूजा में बहुत महत्व देते हैं। आप देखेंगे जो ब्राह्मण पूजा करते हैं वो घास की अंगूठी पहनते हैं।

**वनस्पति को ब्राह्मण्ड में कैसे बनाया गया?**

इसकी कहानियाँ ज्यादा जानी-मानी नहीं हैं। लेकिन एक कहानी है – जिसमें ब्रह्मा के बालों से वनस्पति का जन्म हुआ। दूसरी एक स्टोरी है जब हिरण्यक्ष भूदेवी का अपहरण करके उन्हें समुद्र के नीचे ले जाता है तब वराहा रूप में विष्णु उन्हें वापस ऊपर लेके आते हैं। उस समय उनके जो दाँत थे वो ज़मीन के अंदर धंस जाते हैं और इस तरह वनस्पति का जन्म हुआ। मेरी एक फेवरिट स्टोरी है, जब रामायण में सीता ज़मीन के अंदर चली जाती है तो राम उनको पकड़ना चाहते हैं, पर उनके थोड़े से बाल ऊपर रह जाते हैं जिससे घास निकली है।

**हम पेड़-पौधों के रूपक से देवी-देवताओं के सौंदर्य का वर्णन करते हैं। उनके कोई उदाहरण बताइए?**

संस्कृत साहित्य में प्लांट्स और एनिमल्स, जो नैसर्गिक हैं, जो नैचुरल हैं उनसे सिमिलीज़, उपमाएं मुहावरे, अलंकार बनाते हैं। समझाने के लिए। जैसे विष्णु को कहा गया है कमलनयन, कमल के जैसे नयन हैं उनके। एक कहानी है बंगाल में, कृतिवास रामायण में। राम दुर्गा की पूजा कर रहे थे और उन्होंने कहा मैं एक सौ आठ कमल के फूल चढ़ाऊंगा। दुर्गा यह देखने के लिए कि वो सचमुच के भक्त हैं कि नहीं, एक कमल के फूल को चुरा लेती हैं। एक सौ सात फूल देखकर राम सोचते हैं कि अब मैं क्या करूँ? एक सौ आठ कहाँ से लाऊँ? तो उन्हें याद आता है कि उनकी माँ कहती थीं उनकी आँखें कमल की जैसे हैं। तो वे अपनी आँख निकाल के, देवी दुर्गा को अर्पित करते हैं।

ऐसी स्टोरी पुराणों में भी है। विष्णु ने किया था शिव के लिए और उससे उन्हें सुदर्शन चक्र की प्राप्ति हुई थी। तो आँखों को कमल के साथ जोड़ा गया है।

जो अप्सराएँ हैं, उनके हाथों को लताओं से जोड़ा गया है। लता की जो सुघड़ता होती है वो उनके हाथों में होती है। बुद्ध विहारों में भी आप जाएँ तो बहुत फेमस इमेज है लतानायिका की। एक बहुत सुंदर स्त्री जो गहनों से ढकी हैं, और एक पेड़ की शाखा को पकड़े हैं। जैसे बॉलीवुड की हीरोइनें होती हैं वैसे लटक रही हैं। ये तस्वीर बहुत ही शुभ मानी जाती है। किसी भी जंगल में सुंदर स्त्री बहुत ही खुश होके नाच-गा रही हो तो शुभ माना जाता है। आजकल हम स्त्रियों के बारे में वैसे नहीं सोचते – शायद हम पिछड़ गये हैं। लेकिन पहले गुप्त काल में वसंत ऋतु में कहते थे कि वसंत ऋतु तभी आएगी जब औरतें नाचेंगी, गाएँगी। पेड़ों से लिपटेंगी फिर ही पेड़ जैसे कदम के फूल, अशोक के फूल खिलेंगे। स्त्रियों का और पेड़-पौधों का एक क्लोज रिलेशनशिप है। अगर स्त्री दुखी रहेगी तो ज़मीन भी बंजर रहेगी, पेड़-पौधों पे फूल नहीं आएँगे। तो हँसती-खिलखिलाती औरतों को माना जाता था और स्त्री और प्रकृति के बीच के रिश्ते को सुंदरता से उभारा जाता था।

**औरतें बरगद के पेड़ पर धागा क्यों बाँधती हैं, और बदगद के पेड़ का क्या महत्व है?**

वटवृक्ष का भारत में बहुत महत्व है क्योंकि उसकी छाँव बहुत बड़ी है। बरगद, को शुभ और अशुभ भी माना जाता है। क्योंकि वटवृक्ष के नीचे कुछ उगता नहीं। लेकिन जैसे सन्यासी को आप रिस्पेक्ट करते हैं, लेकिन घर के बाहर रखते हैं। उन्हें अंदर नहीं आने देते। अंदर केवल गृहस्थ यजमान बैठता है, बाहर सन्यासी बैठता है। वैसे ही बरगद के पेड़ को दूर रखते हैं। उसको अगर घर के पास उगायेंगे तो, घर को तोड़ देगा।

गाँव में हमेशा श्मशान भूमि में बरगद उगाते हैं। कहते हैं, उस पर भूत, प्रेत रहते हैं। शिव को तो भूत पसंद हैं, वो उनके साथ रहते हैं। पर बरगद की पत्तियों को विष्णु और कृष्ण के साथ जोड़ा जाता है और कहते हैं जब प्रलय होगी तो उसमें समुद्र की जो लहरें होंगी उनके ऊपर वट वृक्ष का एक पत्ता तैर रहा होगा। पत्ते के ऊपर बच्चा होगा जो विष्णु का रूप होगा जिसे कहते हैं वत्पत्र साईं।

मारकण्डेय को प्रलय का दृश्य दिखाया जाता है, तो वो बहुत डर जाता है – चारों तरफ पानी है, पहाड़, गाँव, जंगल, सब बह जाते हैं। तब उसे वत्पत्र साईं दिखते हैं, एक बच्चा जोर से हँस रहा है। उसके हाथ में मक्खन लगा हुआ है बिना डर के बरगद के पत्ते पर तैर रहा है। तो वत्पत्र से कृष्ण भी जुड़े हुए हैं।

वनस्पति के माध्यम से हम भक्ति के बारे में भी बातें करते हैं। जैसे, तुलसी का पत्ता जो है वो एक देवी है, वृंदा देवी। घर-घर में हम तुलसी रखते हैं उसका रोज़ ध्यान रखना पड़ता है। उसे औरत माना जाता है। कोई कहता है वो राधा है और उसका पत्ता श्रीकृष्ण को चढ़ाते हैं।

एक बहुत ही मज़ेदार कहानी है तुलसी के बारे में। एक बार सत्यभामा नारद के साथ शर्त में कृष्ण को हार जाती हैं। जिसमें कृष्ण को नारद का सेवक बनना होता है। सत्यभामा इसका तोड़ बताती हैं कि वे नारद को कृष्ण से ज्यादा कुछ देंगी। तराजू की एक तरफ कृष्ण को बैठाती हैं और दूसरी तरफ़ अपने सभी गहने रख देती हैं, किंतु कृष्ण

का पलड़ा भारी रहता है। तभी रुक्मणी एक तुलसी का पत्ता सत्यभामा की तरफ रखती हैं, और वजन दूसरी तरफ हो जाता है। कृष्ण सत्यभामा को बताते हैं ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उस तुलसी के पत्ते में रुक्मणी की भक्ति है जबकि सत्यभामा के धन-जैवरों में केवल उनका अहं और अहंकार है।

तो हमने जैसे देखा की फूल, पत्ते, वन, वनस्पति, जो हैं वे भोजन हैं, औषधी भी हैं। लेकिन वो एक सिंबल भी हैं। प्रतीक हैं। यहाँ पे तुलसी भक्ति का सिंबल हैं। जैसे शिव के मंदिर में बेल का पत्ता भक्ति का प्रतीक है। यहाँ पे तुलसी का पत्ता रुक्मणी की भक्ति का प्रतीक है। कृष्ण से ज्यादा भारी है। तो इस कहानी से रुपक और प्रतीकों के महत्व को दिखाया गया है।

**हम लोग मंदिरों में नारियल क्यों फोड़ते हैं?**

नारियल फोड़ना और फोड़ने का एक तरीका होता है, एक ही बार में टूटना चाहिए। फोड़ने के पहले कई लोग उसके ऊपर सिंदूर चढ़ाते हैं, कई नहीं चढ़ाते हैं। अब ये थ्योरी है, कुछ लोगों को पसंद है, कुछ लोगों को नहीं पसंद। पहले जमाने में लोग बलि चढ़ाते थे – पशुओं की या नर बलि भी करते थे। आजकल वो प्रथा नहीं है। लोगों को पसंद नहीं। जानवरों के अधिकार की रक्षा की जाती है। और क्योंकि हम अहिंसा चाहते हैं तो नारियल फोड़ना बलि का सूचक है। कुछ लोग कहते हैं ये मुहावरा है या सिंबल है हमारे अहंकार को तोड़ने का। कोई कहता है जब नारियल फोड़ते हो तो अंदर से पानी निकलता है, नारियल के पानी को आत्मा से जोड़ते हैं। उसके ऊपर फोकस करनी चाहिए। मतलब शब्दार्थ को मत देखी भावार्थ को देखो।

साउथ इंडिया में केवल नारियल को ही नहीं फोड़ते, कद्दू को भी काटते हैं बलि के तौर पे। तंत्र पूजा में नारियल को ऊपर से तोड़कर उसके अंदर घी डालते हैं। उसको अग्नि में डाल के ब्राह्मण की बलि मानते हैं।



26

## पूजा

**क्या पूजा की क्रिया वैदिक काल से चली आ रही है?**

वेदों में जो 4000 साल पुराने हैं, यज्ञ के बारे में बात की जाती है पर पूजा के बारे में नहीं। पूजा शब्द 2500 साल पहले, गृह सूत्र में मिला जो विधियों के बारे में बताता है। यज्ञों में कोई मूर्ति नहीं होती थी। अग्नि के माध्यम से देवताओं का आह्वान करते थे। इसे निगम परम्परा कहते हैं, और पूजा की परम्परा को अगम परम्परा कहते हैं। गृह सूत्र में हमेशा पूजनीय शब्द आता है। पूजा शब्द शायद दक्षिण भारत से आया होगा क्योंकि तमिल भाषा में पूज्य और पूसाय का मतलब है फूल या फूल चढ़ाना जो वैदिक काल में नहीं होता था। धीरे-धीरे भारत में हम देखते हैं कि यज्ञ की परम्परा धीरे-धीरे बंद हो जाती है और पूजा की परम्परा बढ़ जाती है। अब तो हम यज्ञ करते भी नहीं, हम हवन करते हैं, जो यज्ञ का छोटा रूप है।

**तो यज्ञ और पूजा में बेसिक डिफरेंस, फ़र्क क्या है?**

यज्ञ में कोई मूर्ति नहीं होती और यह खुले में होता है, जबकि पूजा में मूर्ति होती है और मंदिर में होती है। यज्ञ मंदिर में नहीं होता, कहीं पे भी जाके आप सामग्री इकट्ठी कीजिए और उसका यज्ञ कर सकते हैं, पूजा हमेशा मंदिरों के साथ जुड़ी होती है। यज्ञ में अग्नि को बहुत महत्व दिया जाता है, और पूजा में पानी और फूलों को। पानी से मूर्तियों का अभिषेक होता है। लेकिन अगर देखें, जो तत्व है, पूजा का और यज्ञ का वह विल्कुल एक सा है।

**पूजा की प्रक्रिया क्या है?**

पूजा अलग-अलग प्रकार से होती हैं। सिंपल होती हैं, कौम्प्लीकेटिड होती है। पर वही व्यवहार होता है जैसे घर में कोई अतिथि आता है। यज्ञ में भी यही होता है, पहले आप देवता का आह्वान करते हैं और फिर उनको भोग चढ़ाते हैं – घी का – ताकि उनकी भूख शांत हो जाए। हम 'स्वाहा' बोलते हैं इस सब के संग। बाद में उनको कहते हैं कि आप जो चाहें उसका प्रसाद हमें दें। और फिर उनको विदाई देते हैं रीति के संग। यही पूजा में भी होता है। आह्वान के पहले आप नहाकर साफ़ कपड़े पहनकर देवता का स्थान बनाते हो। उसके बाद आप देवता का आह्वान करते हैं। जब देवता आते हैं तो उनको एक आसन दिया जाता है। आह्वान का मतलब होता है, प्राण प्रतिष्ठा करना। मतलब विधि के बाद उसको आप मूर्ति नहीं मानोगे। साक्षात् भगवान मानोगे। उन्हें आसन दिया जाता है जहाँ पे वो आराम से बैठ सकें। फिर पानी देते हैं। कभी-कभी अभिषेक भी करते हैं। फिर कपड़े देते हैं उनको; फ़रेश कपड़े, गहने डालते हैं, उनका श्रृंगार

करते हैं, चंदन लगाते हैं। खुशबू के लिए अगरबत्ती जलाते हैं। अगर देवी हैं तो उन्हें मंगलसूत्र दिया जाता है, देव होते हैं तो यज्ञपवित्र दिया जाता है। उसके बाद उनको भोग लगाया जाता है। फिर दिये के साथ आरती गायी जाती है और भजन गाये जाते हैं। फिर फलस्तुति करते हैं जिसमें मनोकामना करते हैं और भूल-चूक के लिए माफ़ी मांगते हैं। और जब सब हो जाता है तब हम उनकी विदाई करते हैं। विसर्जन करते हैं।

तो ये प्रक्रिया होती है पूजा की – जहाँ लेन-देन होता है। कभी-कभी हम इंगलिश में बोलते हैं पूजा इज प्रेयर। पूजा प्रार्थना नहीं है, पूजा लेन-देन होती है। यज्ञ काल में भी ऐसे ही होता था। जब लोग यज्ञ करते थे, तो एक बार जब यज्ञ समाप्त होता जाता था, देवता चले जाते थे, उसके बाद पूरे यज्ञ मंडल को जला देते थे। वैसे भी हम पूजा में देखेंगे जैसे गणेश की मूर्ति होती है, दुर्गा देवी की मूर्ति होती है, पानी में विसर्जन कर देते हैं। और जहाँ पे पूजा की होगी उस स्थल को पूरी तरह से साफ़ कर देते हैं। पर मंदिरों में, जहाँ देवता स्थापित होते हैं, और एक तरह से जागृत होते हैं, वहाँ पे पूजा बहुत अलग होती है। वहाँ प्राण प्रतिष्ठा करने की या आह्वान करने की आवश्यकता नहीं होती। सब कुछ अलग होता है।

**अगर हम कुछ ना माँगे भगवान से, तो क्या उसे पूजा नहीं कहेंगे?**

पूजा का काम ही माँगना है। मनुष्य सभ्यता इक्सचेंज, लेन-देन से शुरू हुई। देवताओं के साथ संबंध कैसे बनाओगे? संबंध तो तभी होता है जब आप कुछ देते हो और वो कुछ देते हैं। इसलिए हम बोलते हैं मैंने भगवान से मन्नत माँगी है। तो कुछ-न-कुछ इच्छाएं होती हैं। ऐसे कहना कि मेरे पास कुछ इच्छा ही नहीं है तो फिर आप तपस्वी बन गए, वैरागी बन गए, फिर देवताओं की ज़रूरत ही नहीं है। तो जो गृहस्थाश्रम में होता है उसमें इच्छाएं होती हैं और इच्छाओं को बुरा नहीं मानते। तो पूजा वो प्रक्रिया है जहाँ आप अपनी इच्छाओं को व्यक्त करते हैं। वो पूर्ण होंगी या नहीं इसकी गैरंटी तो नहीं है – वह आपके कर्मों के ऊपर भी डिपेंड करेगा-पर आप भगवान से हेल्प माँगते हैं—थोड़ा एडजस्ट करने के लिए।

**भोग चढ़ाने का मतलब क्या है?**

किसी भी जीवित प्राणी का मूलभूत लक्षण है कि उन्हें भूख लगती है। हमारे देश में कोई किसी के घर में आता है तो हम पहले पानी देते हैं, फिर खाना देते हैं। वैसे ही देवताओं को भी भूख लगती है। लेकिन भोग केवल खाने का नहीं होता। यह कई तरह का होता है—कपड़ों से लेकर अच्छी चीजों तक—खुशबू रौशनी, दीयों की, इत्यादि। नाथद्वारा राजस्थान में अष्टछाप कवि होते थे, जो भगवान की तारीफ़ में कविताएं लिखते थे। भगवान भी कविताएं और संगीत पसंद करते हैं जैसे हमें पसंद है। ध्यान भी भगवान को अर्पित करते हैं। वह भी भोग समझा जा सकता है।

**अच्छा आप कह रहे थे पूजा में संगीत भी भोग में देते हैं। तो पूजा के साथ संगीत कब जुड़ा?**

एक समय था मध्यकाल में जब सेंटरल एशिया, मध्य एशिया से आक्रमणकारी आ रहे थे जो बार-बार मंदिर तोड़ते थे। उस समय बहुत टेंशन थी, लोग परेशान हो जाते थे। तो ऋषियों ने कहा, मंदिर में देवताओं का होना आवश्यक नहीं। मन के अंदर भी

मंदिर हो सकता है। तो संगीत के माध्यम से उन्होंने मन के मंदिर बनाए। जैसे वल्लभाचार्य जी हैं जो नाथद्वारा के हैं, उन्होंने कहा कविताओं के द्वारा, संगीत के द्वारा, रागों के द्वारा, मैं मंदिरों का निर्माण करूँगा। तो हर प्रहर की पूजा होती है। आठ प्रहर हैं तो पूजा आठ बार होती है। तो वैसे ही हर प्रहर में एक पूजा होगी। सोते समय, जागते समय, खाते समय, शाम के समय, गर्मियों में, सर्दियों में। यह प्रक्रिया चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी में शुरू हुई।

**तो संगीत से भजन और आरती निकले हुए हैं?**

संगीत और भजन में थोड़ा फ़र्क है। संगीत आम हो सकता है लेकिन जब भजन या आरती होती है, तब उसकी एक वजह होती है। आरती दीये को भगवान की तरफ़ बढ़ाने की तरह है, ताकि आप भगवान को ठीक तरह से देखो उनके दर्शन करो। यह बहुत ज़रूरी बात है। जबकि यज्ञ की परम्परा में कुछ देखने लायक नहीं होता। उसमें ज़रूरी होती थी ऋति, मंत्र को सुनने की प्रक्रिया। तो आप मंत्र को सुनते थे तो कहते थे ऋति करो, मंत्र को सुनो। लेकिन जब मंदिर बनने लगे, पूजा-पाठ शुरू हुई तो भगवान को देखना ज़रूरी हो गया। आप दक्षिण भारत के मंदिरों में जाएँ, तो काले पत्थर की मूर्तियाँ होती हैं, भगवान ठीक से दिखाई नहीं देते। तो जो पुजारी होता है वो दिये को मूर्ति के आगे थोड़ा खिसकाते हैं ताकि आप दर्शन कर सकें। नाथद्वारा मंदिर में एक पर्दा होता है, जिसे थोड़ी-सी देर के लिए खोलते हैं ताकि आप भगवान को देख सकें। इसे झाँकी कहते हैं। ये माना जाता है, कि अगर आप बहुत ध्यान से देखेंगे, तो आप मंदिर से निकलोगे ही नहीं क्योंकि आप मंत्र-मुग्ध हो जाओगे।

भजन भगवान की तारीफ़ में गाये जाते हैं। वे उनकी छवि और सुंदरता के बारे में होते हैं और इस बारे में कि भक्त ने उन्हें कितना ठीक से देखा है। वे उनकी महानता के बारे में बताते हैं और असुरों पर उनकी विजय के बारे में कहानियाँ होती हैं, कैसे उन्होंने अपने भक्तों को बचाया, आदि। कभी-कभी मुझे लगता है कि ये हमें दूसरों से कैसे बात करनी चाहिए, यह सिखाने के लिए होता है। अगर आप किसी के घर जाएँ और कोई आपके बारे में ना पूछे या आपकी तारीफ़ ना करे, आपको लगेगा कि आप पर कोई ध्यान नहीं दे रहा। एक कहानी है रामायण में जहाँ जम्बूवन, भालुओं का राजा हनुमान की कोटि-कोटि तारीफ़ कर रहा है ताकि वे लंका जाकर सीता को बचाएं। आरती और भजन कुछ-कुछ वैसे ही होते हैं, जैसे नई कम्पनी में काम शुरू करने से पहले वे आपकी हौसलाअफ़जाई करते हैं।

**भगवान की पूजा घर में करने में और मंदिर में जाकर करने में क्या फ़र्क है ?**

घरों में पूजा-घर में पूजा होती है। एक कमरे या आले में भगवान की मूर्ति रखते हैं। तो कभी-कभी उस समय के लिए एक पूजा घर बनाया जाता है जैसे सत्यनारायण की पूजा या गणपति पूजा के समय। जो परमानैन्ट शाईन होती है जैसे मंदिर वहाँ रोज़ विधि होती है। सुबह-शाम पूरी पूजा होती है। अलग-अलग प्रक्रियाएँ होती रहती हैं। घर में जब पूजा घर होता है, तो वहाँ ब्राह्मण नहीं होते क्योंकि घर में पूजारी की आवश्यकता नहीं है। घर के लोग ही पूजा करते हैं

कुछ लोगों का मानना है कि भगवान घर के मालिक होते हैं और उस में रहने वाले

किरायेदार। और जब देवताओं को बुलाया जाता है वो मेहमान की तरह हैं। ये रिलेशनशिप की बात है। आप कैसे भी मानना चाहते हो भगवान को, मान सकते हो।

**व्रत और पूजा में क्या फ़र्क है?**

यज्ञ आदमियों द्वारा किया जाता है। अलग-अलग प्रकार के पुजारी होते हैं – ऋतविक, उद्गात्र, इत्यादि सब पुरुष हैं। व्रत की बात करते हैं तो वह रीति औरतों की है। व्रत में मूर्तियों या मंदिरों की आवश्यकता नहीं है। आप मन में देवताओं को पूज सकते हैं। जब आप व्रत रखते हो तो आप पानी के बिना रख सकते हो, खाने में क्या खाना है यह तय कर सकते हो—जैसे संतोषी माँ के लिए सिर्फ चना और गुड़, जागरण कर सकते हो, आदि। यह सब आपके शरीर के जारिये से है, जहाँ आपका शरीर प्रभू तक पहुँचने का तरीका है। व्रत बिना ताम-झाम की पूजा है। यह तंत्र है जहाँ तन का मतलब शरीर है; मंत्र वह जहाँ ध्यान होता है, जो मन से होता है, और यज्ञ जहाँ यंत्र का इस्तेमाल होता है।



## THE BEGINNING

Let the conversation begin...

Follow the Penguin [Twitter.com/@penguinIndia](https://twitter.com/penguinIndia)

Keep up-to-date with all our stories [YouTube.com/penguinindia](https://www.youtube.com/penguinindia)

Pin 'Penguin Books' to your [Pinterest](#)

Like 'Penguin Books' on [Facebook.com/PenguinIndia](https://www.facebook.com/PenguinIndia)

Find out more about the author and  
discover more stories like this at [Penguin.co.in](https://www.penguin.co.in)

## पेंगुइन बुक्स

UK | Canada | Ireland | Australia  
New Zealand | India | South Africa

Penguin Books is part of the Penguin Random House group of companies whose addresses can be found at [global.penguinrandomhouse.com](http://global.penguinrandomhouse.com).



पेंग्विन  
रैंडम हाउस  
इंडिया

Published in Penguin Books by Penguin Random House India 2018

This collection published 2018

यह हिन्दी संस्करण पहली बार 2016 में प्रकाशित |

दूसरा हिन्दी संस्करण, 2017 में प्रकाशित

कॉपीराइट © देवदत्त पटनायक 2016

The moral right of the author has been asserted

Cover Designer: **EPIC** चैनल के लिए इरशाद अंसारी, और नीरज नाथ

ISBN: 978-0-143-42798-8

e-ISBN: 978-9-387-62510-5

This digital edition published in 2018.

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसका व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इन्हें पुनः प्रकाशित कर विक्रय या किराए पर नहीं दिया जा सकता है तथा जिल्दबंद अथवा किसी भी अन्य रूप में पाठकों के माध्यम इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के खरीदार पर भी लागू होंगी। इस संदर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं।